S.S. JAIN SUBODH MAHILA SHIKSHAK PRASHIKSHAN MAHAVIDYALAYA

E-MAGAZINE
2024-25

Subodhika

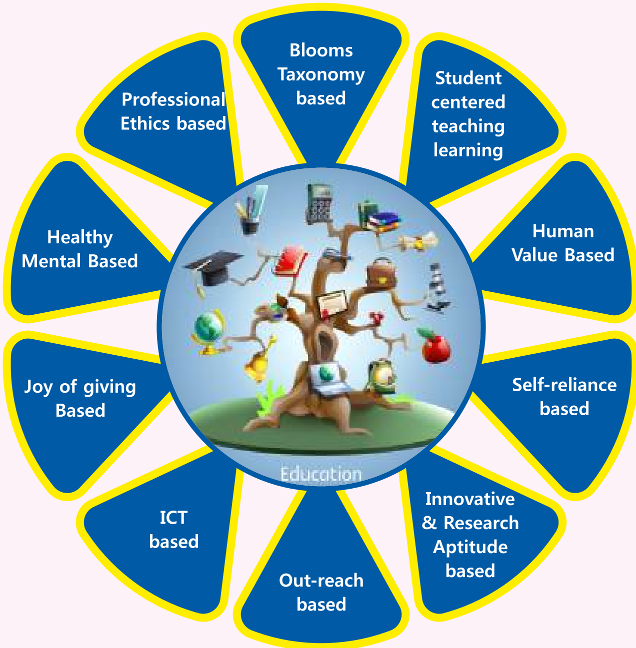

AIRPORT ROAD, SANGANER, JAIPUR-302011, PHONE: 0141-2794216, 2791864

सुनहरे पल

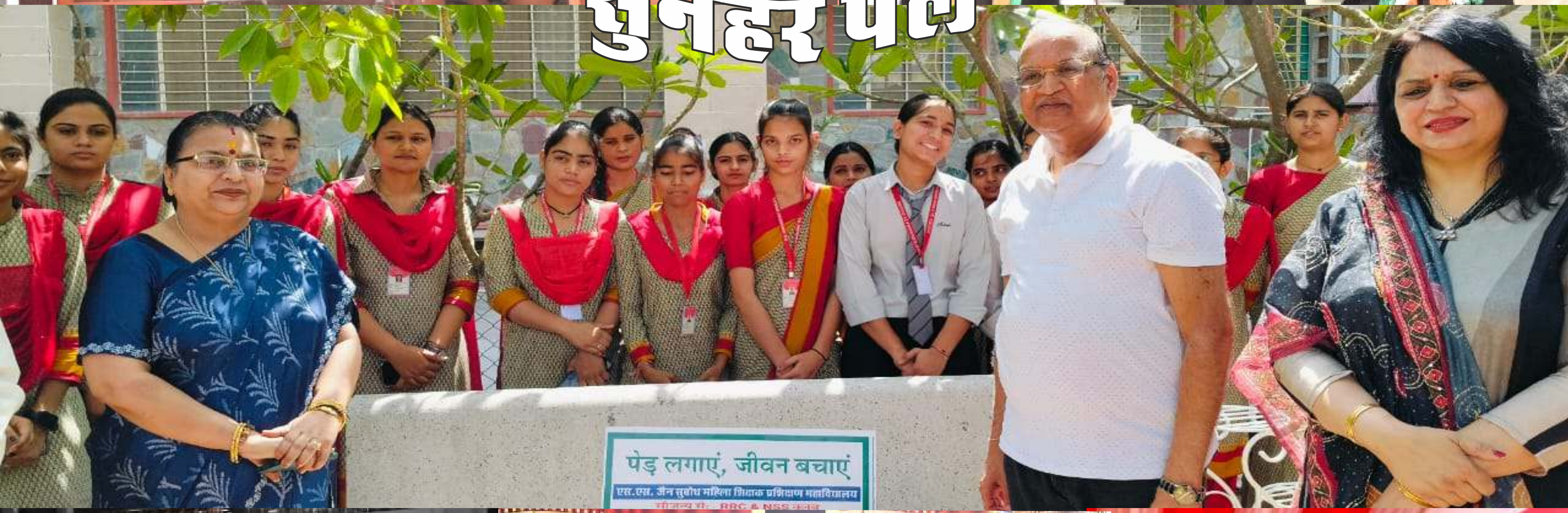

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवई मंगलं

संयोजक
अनिल कुमार गोखरू

प्राचार्या
प्रो. यदु शर्मा

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक
प्रो. यदु शर्मा

संपादिका
डॉ. रेणु अरोड़ा

सह-संपादिका

डॉ. रागिनी सक्सेना
डॉ. ज्योत्सना गौड

डॉ. नीलम यादव
डॉ. अंजना शर्मा
डॉ. मधु श्रीमाल

श्रीमती शालिनी चावला
डॉ. रितु गुप्ता

प्रबंध संपादक

श्री ईश्वर प्रसाद जैन

श्री मथुरेश चंद तिवारी
श्रीमती नीलम जैन

श्रीमती नीलम पारीक

साज-सज्जा

डॉ. ज्योति गौतम

डॉ. नीरू कल्ला

डॉ. संगीता सिंह

छात्राध्यापिका

चेल्सी रूहेल

प्रीति झा

किरण चौधरी

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर द्वारा ई-पत्रिका "सुबोधिका" का प्रकाशन किया जा रहा है।

आज के डिजिटल युग में, ई-पत्रिकाएं ज्ञान और विचारों के प्रसार का एक सशक्त माध्यम हैं। शिक्षण संस्था की पत्रिकाएं विद्यार्थियों को अपने विचार और प्रतिभा को प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करती हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं, लेख एवं आलेख उनकी रचनात्मकता को नये आयाम देते हैं।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका छात्राओं के लिए प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होगी। इससे सूचना प्रौद्योगिकी के युग में छात्राओं में सृजनात्मक, रचनात्मक एवं मौलिक चिंतन का विकास करने में सहायता मिलेगी।

मैं ई-पत्रिका "सुबोधिका" के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

डॉ. प्रेमचन्द बैरवा
उप मुख्यमंत्री
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

तकनीकी शिक्षा, उच्च शिक्षा, आयुर्वेद,
योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी,
सिद्धा एवं हौम्योपैथी (आयुष),
परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग

क्रमांक : उ.मु.मं./2025/ 4700
दिनांक : 21 मई, 2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महविद्यालय, सांगानेर, जयपुर अपनी ई–पत्रिका "सुबोधिका–2025" का प्रकाशन करने जा रहा है। महाविद्यालय पर भविष्य के शिक्षकों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण का एक गुरूत्तम दायित्व है। शिक्षा ही समाज के गुणात्मक विकास की नींव है। सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

मुझे विश्वास है कि "सुबोधिका–2025" छात्राओं को ज्ञानार्जन की अभिव्यक्ति एवं रचनात्मक प्रतिभा के प्रस्फुटन का अवसर प्रदान करेगी। आपके संस्थान से प्रशिक्षित शिक्षिकाऐं समाज को सही दिशा देने में अग्रणी रहे तथा महिला जगत की आदर्श बने, यही शुभकामना है।

(डॉ. प्रेमचन्द बैरवा)

वासुदेव देवनानी

अध्यक्ष

राजस्थान विधान सभा

क्रमांक R-627 दिनांक 20.5.25

शुभकामना संदेश

बहुत हर्ष का विषय है कि एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर द्वारा महाविद्यालयी ई–पत्रिका "सुबोधिका" का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्र–पत्रिकाऐं ज्ञान के प्रवाह का बहुत बड़ा माध्यम है। वर्तमान विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी के युग में अध्यापन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही भावी शिक्षिकाओं में सृजनात्मक, रचनात्मक एवं सकारात्मक मौलिक चिंतन के विकास में ई–पत्रिका "सुबोधिका" बहुत महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार को मेरी ओर से शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(वासुदेव देवनानी)

मदन दिलावर
मंत्री
शिक्षा (विद्यालयी/संस्कृत),
एवं पंचायती राज विभाग,
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

कार्यालय : 6119, मंत्रालय भवन,
शासन सचिवालय, जयपुर (राज.)
दूरभाष : 0141-2227781 (का.)
0141-2221466 (नि.)
E-mail : minedupr@gmail.com

क्रमांक :- वि.स./मंत्री/शिक्षा/पंरा/2025/SPL-3

जयपुर, दिनांक 21.05.2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रशन्नता हुई है कि एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सांगानेर जयपुर के द्वारा ई प्रत्रिका "सुबोधिका–2025" का प्रकाशन किया जा रहा है यह एक सराहनीय प्रयास है। जिसके माध्यम से छात्राओं एवं अध्यापकों को अपने विचारो एवं रचनाओं को प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। आशा है कि पत्रिका महाविद्यालय की समस्त शैक्षिक, रचनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों के प्रतिबिम्ब रूप मे परिलक्षित होगी। मैं इसके सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामानाएं प्रेषित करता हूं।

(मदन दिलावर)
मंत्री

Prof- Alpana Kateja
Vice-Chancellor
University of Rajasthan, Jaipur

सन्देश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर द्वारा महाविद्यालयी ई–पत्रिका 'सुबोधिका' का प्रकाशन किया जा रहा है। वर्तमान परिदृश्य में छात्राओं को अपने विचारों एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करने की दृष्टि से यह एक सराहनीय प्रयास है। शैक्षणिक संस्थाओं की विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं चारित्रिक उत्थान में महती भूमिका है। इस दिशा में आपका यह प्रयास सार्थक है।

इसके सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

(प्रो. अल्पना कटेजा)

हार्दिक शुभकामनाएँ

यह अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का विषय है कि एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, एयरपोर्ट रोड़, सांगानेर, जयपुर, ई–पत्रिका ''सुबोधिका'' 2024–25 का प्रकाशन करने जा रहा है।

पत्रिका शिक्षण संस्थान की शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का अनुपम स्त्रोत है। महाविद्यालय द्वारा छात्राओं को NEP-2020 के अनुसार इस प्रकार का मंच व वातावरण उपलब्ध कराया जाता है, जिससे वे अपनी सृजनात्मक व रचनात्मक प्रतिभाओं से अपने ज्ञान एवं कौशल को उजागर करने का सुअवसर प्राप्त करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ई–पत्रिका सुबोध शिक्षा समिति की गौरवशाली परम्पराओं के संवर्द्धन में मील का पत्थर सिद्ध होगी। मैं प्रयत्नशील प्राचार्या, शिक्षाकर्मियों एवं छात्राओं के प्रयासों की सराहना करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी मंगल कामना सम्प्रेषित करता हूँ।

नवरत्न कोठारी
अध्यक्ष
श्री एस. एस. जैन
सुबोध शिक्षा समिति, जयपुर

हार्दिक शुभकामनाएँ

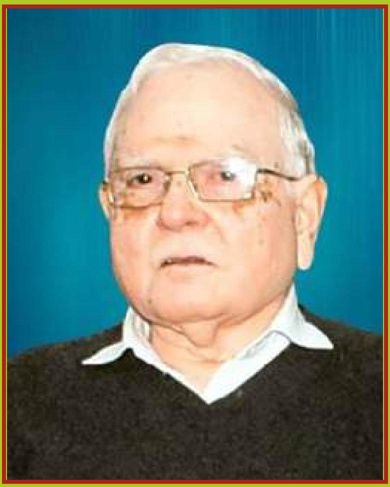

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, एयरपोर्ट रोड़, सांगानेर, जयपुर, ई–पत्रिका ''सुबोधिका'' 2024–25 का प्रकाशन करने जा रहा है।

छात्राओं के सर्वांगीण एवं सतत् विकास में शिक्षक की प्रत्यक्ष एवं प्रभावी भूमिका होती है। हमारे शिक्षक नई पीढी को शिक्षा प्रदान कर उनके भविष्य को संवारने का कार्य करते है। प्रकाशन में अध्यापकों एवं छात्राओं की सामयिक, शिक्षाप्रद एवं ज्ञानोपयोगी सूचनाओं का समावेश किया जाएगा। जिससे यह पत्रिका उनकी सृजनात्मक एवं रचनात्मक प्रवृतियों का दर्पण बन सकेगी।

मैं महाविद्यालय की उत्तरोत्तर उन्नति तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

रमेश चन्द जैन
उपाध्यक्ष
श्री एस.एस.जैन
सुबोध शिक्षा समिति, जयपुर

सन्देश

मुझे यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, एयरपोर्ट रोड़, सांगानेर, जयपुर ई–पत्रिका ''सुबोधिका'' 2024–25 का प्रकाशन करने जा रहा है।

सुबोध शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय अध्ययन–अध्यापन का एक उत्कृष्ट केन्द्र है। यह महाविद्यालय सामयिक, शिक्षाप्रद, एवं ज्ञानोपयोगी विधियों द्वारा शिक्षा के सर्वोतम मानदण्ड स्थापित कर रहा है जो छात्राओं में नैतिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक मूल्यों के साथ–साथ जीवन कौशल का भी संचार करता है। ये सभी मूल्य छात्राओं को भावी जीवन हेतु तैयार करते है एवं प्रत्येक परिस्थिति में सम्भाव रूप से स्वयं को स्थापित करने हेतु प्रेरित करते हैं। मुझे जानकर हर्ष है कि सुबोध शिक्षा समिति के उद्देशों को परिलक्षित करने में यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। स्वस्थ एवं सभ्य समाज की संकल्पना को चरितार्थ करते हुए छात्राएं समाज की एक उत्पादक इकाई के रूप में कार्य कर सुबोध की सुरभि को चहुँ और फैलाएंगी।

मैं सुबोध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय को प्रकाशन हेतु शुभ–कामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

सुमेर सिंह बोथरा
मानद् मंत्री
श्री एस.एस.जैन सुबोध शिक्षा समिति, जयपुर

सन्देश

मुझे ये जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एयरपोर्ट रोड़, सांगानेर, जयपुर द्वारा ई–पत्रिका ''सुबोधिका'' 2024–25 का प्रकाशन किया जा रहा है।

मेरा मानना है कि महाविद्यालय पत्रिका जो कि शिक्षको / छात्राओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। जो उनकी सृजनात्मक शैक्षणिक /सहशैक्षणिक प्रतिभाओं को संवारने एवं विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। महाविद्यालय ''विकसित भारत– 2047'' के आधार पर ''सशक्त भारत–समर्थ भारत'' की संकल्पना को आधार बनाकर नई शिक्षा नीति– 2020 का अनुसरण कर पाठ्यक्रम को विभिन्न शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से श्रेष्ठ व नवाचाराधारित कार्यक्रमों के आधार पर पूर्ण करने हेतु प्रतिबद्ध है। इससे छात्राओं का मानसिक एवं बौद्धिक विकास होगा तथा अपनी ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक क्षमता के आधार पर सुन्दर समाज का निर्माण करने में महत्ती भूमिका निभाएंगी।

''सुबोधिका'' अपने संकल्प एवं उदेश्य में सफल हो, ऐसी मेंरी शुभकामनाएं है। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

विनोद कुमार लोढ़ा
सहमंत्री / कोषाध्यक्ष
श्री एस.एस.जैन सुबोध शिक्षा समिति, जयपुर

हार्दिक शुभकामनाएँ

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एयरपोर्ट रोड़, सांगानेर, जयपुर, ई–पत्रिका ''सुबोधिका'' 2024–25 का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालय पत्रिका जहाँ एक ओर दर्पण की भाँति महाविद्यालय की छवि को प्रस्तुत करती है वहीं दूसरी ओर महाविद्यालय छात्राओं को भारतीय ज्ञान परम्परा व व्यवसायिक मूल्यों पर आधारित उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराकर शिक्षा की व्यवस्था भी करता है। ज्ञान आधारित शिक्षा छात्राओं को भावी जीवन के लिए तैयार कर स्व रोजगार व उद्यमिता हेतु प्रेरित करती है एवं ''कुशल भारत–समर्थ भारत'' की संकल्पना को साकार करने में सहयोग करती है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए महाविद्यालय का इनक्यूबेशन सेंटर सतत् रूप से कार्यरत है।

मुझे आशा है कि पत्रिका में महाविद्यालय के सभी शिक्षक वर्ग एवं छात्राएं अपनी प्रतिभा व कौशल की सुन्दर भावाभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत कर श्रेष्ठ स्तर का परिचय देंगी ताकि यह पत्रिका स्तरीय एवं अनुकरणीय बन सके। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्या, प्रकाशन समिति एवं छात्राओं को अपनी अग्रिम शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

अनिल कुमार गोखरू
संयोजक
एस. एस. जैन सुबोध
महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर

हार्दिक शुभकामनाएँ

एस.एस. जैन सुबोध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा ई–पत्रिका सुबोधिका का प्रकाशन सुधि पाठकों को प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। आधुनिकता एवं नवाचार के इस युग में सुबोधिका का प्रकाशन ई–पत्रिका के रूप में किया जा रहा है। यह पत्रिका समाज, अभिभावकों व छात्राओं को महाविद्यालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों से अवगत कराने का सशक्त माध्यम है।

महाविद्यालय छात्राओं के सृजनात्मक, रचनात्मक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, व्यावसायिक मूल्यों व कौशलों को विकसित करने हेतु सदैव संकल्पबद्ध है। इसी संकल्प की पूर्ति के लिए महाविद्यालय में ज्ञानाधारित, कौशलाधारित, मूल्याधारित शिक्षा के साथ–साथ नवाचाराधारित शिक्षा की व्यवस्था व वातावरण उपलब्ध कराया जाता है। महाविद्यालय एक प्रयोगशाला के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में नित नूतन प्रयोग कर छात्राओं के सर्वांगीण विकास में सहयोग प्रदान कर रहा है। इसी श्रृंखला में महाविद्यालय में अमृतानंदम् क्लब के तहत् ज्ञानानंदम्, नवान्वेषणानंदम्, वर्णिकानंदम्, शौंयानंदम् व परहितार्थानंदम् क्लब का संचालन भी सफलतापूर्वक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि सुबोधिका छात्राओं को ज्ञानार्जन की अभिव्यक्ति एवं रचनात्मक प्रतिभाओं के प्रस्फुटन का सुअवसर प्रदान करेगी व महाविद्यालय का यह सृजनात्मक व रचनात्मक प्रयास सफलता के सोपानों की ओर अग्रसर होगा। यह ई–पत्रिका सुबोधिका महाविद्यालय का गौरव बढ़ाने के साथ–साथ छात्राओं की सकारात्मक, विचारात्मक, विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक सोच विकसित कर उनके ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक पक्ष तथा चिन्तन स्तर को विकसित करने में सहायक होगी।

इसी शुभेच्छा के साथ...

प्रो. यदु शर्मा, प्राचार्या
डीन, शिक्षा संकाय राज. विश्वविद्यालय

सुबोधिका - 2025

अनुक्रमणिका

विवरण	पेज
सम्पादकीय	1
महाविद्यालय विकास यात्रा	2
सुबोध रत्न	3
मंथन	4
भारतीय ज्ञान परम्परा: शिक्षा के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन का एक कारगर उपाय - प्रो. यदु शर्मा, प्राचार्या	5-6
नई शिक्षा नीति 2020: शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को प्रभावी बनाने हेतु कारगर कदम - डॉ. रेणु अरोड़ा	7-8
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: एक वरदान - प्रतिक्षा चौधरी	9
The Threads That Time Can't Break -Kiran Choudhary	9
Regional Languages: A School Dilemma - Chelsey Ruhial	9
अंतर्मन की यात्रा - प्रियांशी जांगिड़	10
Ethics And Accountability In Education - Dr. Reetu Gupta	11
बालक व परामर्श - डॉ. गायत्री चौधरी	12
उच्च शिक्षा में सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन - डॉ. चिन्मय जैन	13
प्रभावी एवम् कुशल शिक्षण निर्माण में ललित कलाओं की भूमिका - डॉ. ज्योति गौतम	14
देश की सबसे बड़ी पक्षी त्रासदी राजस्थान - डॉ. ज्योत्सना गौड़	15-17
शिक्षा, खेल और पाठ्येतर गतिविधियों में सामंजस्य - डॉ. लीना शर्मा	18-19
The Role of Drama & Art in the light of NEP 2020 - Dr. Neeru Kalla	20
The Power of Positive thinking - Dr. Prabha Singh	21
राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं विज्ञान शिक्षा - डॉ. रागिनी सक्सेना	22
शिक्षण अधिगम का आधार स्तम्भ: अवधान - डॉ. उषा शर्मा	23-24
The Impact of AI on Language Learning and Communication - Dr. Neha Singh	25
शिक्षा का नव युग - रुचिका जैन	26
ए-ख्वाब - हेमलता मीणा	27
सफर में धूप तो होगी ही - नेहा सोकल	27
कश्मीर को गाने निकली हूँ - रेणु शर्मा	27
देश की हालत - - तृप्ति जैन	28
The Rise of Artificial Intelligence Shaping The Future - Ekta Sharma	29

विवरण	पेज
My Father - Deepanjli Bhardwaj	29
Whispers of the Classroom - Garima Soni	30
The Threads That Time Can't Break - Kiran Choudhary	30
Challenges Faced By The Girl Child In Accessing Education - Harshita Sohaniya	31
Stages of Human Life - Preeti Jha	32
कलम और कैदी - मोलिना मीणा	33
अपने पहले वर्ष के मुझे एक पत्र - चेष्टा वर्मा	33
महिला सशक्तिकरण - रीना चौधरी	34
ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य लाभ और महत्व - अंशिमा सैन	35
पहलगाम में आंतकी हमला: राष्ट्रीय सुरक्षा पर एक गंभीर चुनौती - अंजू चौधरी	36-37
बेरोजगारी: एक विकराल समस्या - प्रिंसी कुमावत	37
The Transformative Role of Career Counselors Navigating Paths To Success - Dr. Neelam Yadav	38-40
शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कैरियर संबंधी सूचनाऐं - शालिनी चावला	41-43
राष्ट्र के विकास में राजनीति के माध्यम से विद्यार्थियों का योगदान - डॉ. सोनू गौड	44-46
कविता - टीशा टाक	46
आस्था से विश्वास की ओर - डॉ. संगीता सिंह	47-48
सुविचार - रजनी शर्मा	48
कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव रोजगार का भविष्य - रजत कमल	49
नई शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव - सुनीता बैरवा	50
आज के शिक्षा प्रणाली की चुनौतियां - स्वाति यादव, काजल मीणा	51
गेम थ्योरी और निर्णय प्रक्रिया - लक्ष्मी वर्मा	52
सृजन	53-54
अभिव्यक्ति	55
आरोहण	56-57
मीडिया कवरेज	58

Designed by: Ram Print Hub, Jaipur

संपादकीय ...

प्रिय पाठकों

ई - पत्रिका "सुबोधिका - 2025" आपको सादर समर्पित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा हैं। शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य है बालक की अंतर्निहित क्षमताओं एवं प्रतिभाओं को समुचित अवसर एवं दिशा प्रदान कर उसे पल्लवित कर उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर उसे एक सुसंस्कृत एवं सभ्य नागरिक बनाना। ऐसे में पत्रिका एक ऐसा ही प्रयत्न है, जिसके द्वारा हम छात्राओं की अंतर्निहित शक्तियों को विकसित करने का सुअवसर प्रदान करते हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की छात्राध्यापिकाएं बौद्धिक सम्पन्न इकाई होती हैं। उनकी व्यक्तिगत क्षमता का संवर्द्धन और सुनियोजन यदि किया जाये तो सामूहिक प्रगति के नए स्त्रोत खुल सकते हैं। प्रस्तुत अंक में छात्राध्यापिकाओं के सृजनात्मक, मौलिक एवं बौद्धिक गुणों का विकास कर सकें इसी प्रयोजनार्थ उनकी रचनाओं की प्रचुरता एवं प्रमुखता हमारा प्रयास रहा है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. यदु शर्मा का सहयोग व मार्गदर्शन "सुबोधिका" को मूर्तरूप प्रदान करने में महत्ती भूमिका निभा रहा है। इसके लिए हम हृदय से उन्हें आभार प्रेषित करते हैं।

अंक प्रकाशन के प्रेरणा स्त्रोत, महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के समस्त संरक्षक सदस्यों के प्रति हम अपना आभार प्रकट करते है जिनके स्नेहिल संरक्षण व कुशल नेतृत्व से यह पुनीत कार्य सम्पादित हो सका। सम्पादन कार्य में संलग्न सभी स्टाफ सदस्यों एवं छात्राध्यापिकाओं का भी हम विशेष आभार व्यक्त करते हैं कि उनके सहयोग के बिना यह कार्य कर पाना असंभव था। अंक की श्रेष्ठता, उपयोगिता व सार्थकता के निर्णायक तो वस्तुतः आप सभी पाठकगण है।

आपके सारगर्भित सुझाव हमें इसी तरह अभिनव सृजन हेतु समय-समय पर प्रेरित करते रहेंगे। इसी भावना के साथ..........

संपादक मंडल

महाविद्यालय विकास यात्रा

एस. एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना सुबोध शिक्षा समिति द्वारा 2005 में सांगानेर परिसर में (50832 वर्ग मी. के क्षेत्र में) प्राकृतिक नैसर्गिक वातावरण में बी.एड. पाठ्यक्रम (100 सीट) के रूप में की गई। सुबोध शिक्षा समिति के लक्ष्यों के अनुरूप शैक्षिक व व्यावसायिक उत्कृष्टता व गुणवत्ता के आधार पर महाविद्यालय शिक्षा के उन्नयन एवं विकास हेतु दृढ संकल्पित संस्था वर्तमान में गुलाबी नगरी की सर्वश्रेष्ठ संस्था के रूप में अपनी सेवाऐं प्रदान कर रही है। हमारे लिए यह गौरव व हर्ष का विषय है कि वर्तमान में राजस्थान सरकार व राजस्थान विश्वविद्यालय नियमानुसार महाविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की श्रृंखला में एम.एड. व बी.एड. पाठ्यक्रमों को स्थाई मान्यता, 2-F, NAAC, एवं रिसर्च सेन्टर के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान कायम किये हुए हैं।

वर्तमान में महाविद्यालय में पीएच.डी. पाठ्यक्रम (50 विद्यार्थी), एम.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम (50 विद्यार्थी), बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम (200 विद्यार्थी), डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम (50 विद्यार्थी), एकीकृत चारवर्षीय बी.एससी. बी.एड. (50 विद्यार्थी), बी.ए. बी.एड. (50विद्यार्थी) पाठ्यक्रम संचालित है। जिसके आधार पर महाविद्यालय परिसर में 1050 शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे हैं। साथ ही महाविद्यालय में वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा द्वारा सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु स्थाई अध्ययन केन्द्र संचालित किया जा रहा है जिसमें प्राचार्या मुख्य समन्वयक के रूप में कार्य कर रही है। संस्था के द्वारा शैक्षिक मानदण्डों के अनुरूप गुणवत्ता आधारित कार्य किए जाने का परिणाम है कि राज्य सरकार द्वारा एन.आई.ओ.एस., डी.एल.एड. कोर्स हेतु महाविद्यालय का चयन किया गया है जिसमें 200 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

महाविद्यालय में वर्तमान में NCTE राजस्थान विश्वविद्यालय के नियमानुसार एम.एड. एवं बी.एड., बी. एससी.बी.एड, बी.ए. बी.एड., पाठ्यक्रम हेतु कुल स्टाफ सदस्यों (36) सदस्यों में से 32 अनुमोदित है जिनमें में से 31 पी.एच.डी. व 18 नेट योग्यताधारी के अतिरिक्त 4 व्याख्यातागण पी.एचडी. शोधकार्य हेतु विभिन्न विश्वविद्यालयों में पंजीकृत हो चुके है। संस्था के लिए यह गौरव का विषय है कि महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. यदु शर्मा वर्तमान डीन (शिक्षा संकाय) राजस्थान विश्वविद्यालय, के रूप में 24 जनवरी 2017 से 2020 तक रही है एवं अत्यंत हर्ष व गौरव का विषय है कि वर्तमान में पुनः प्रो. यदु शर्मा का डीन (शिक्षा सकांय) पद पर चयन किया गया। इसके अतिरिक्त 2015-2018 तक बी.ओ.एस. संयोजिका (शिक्षा संकाय) के रूप में बी.ए.बी.एड., बी.एससी. बी.एड., बी.एड., एम.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम निर्माण व सम्पूर्ण परीक्षा का कार्य कुशलता पूर्वक सम्पादित कर चुकी है व राजस्थान विश्वविद्यालय में रिसर्च गाइड भी है तथा इनके सानिध्य में नौ शोधार्थियों को पीएच.डी. अवार्ड हो चुकी है। गत 29 वर्षों से स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षण व अनुसंधान का कार्य कर रही है।

महाविद्यालय में पूर्णतः कम्प्यूटराईज्ड डेलनेट सुविधायुक्त पुस्तकालय की व्यवस्था है, महाविद्यालय में कला, विज्ञान, गणित, वाणिज्य के विद्यार्थियों हेतु विषय आधारित प्रयोगशालाएं जैसे सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला, भाषा प्रयोगशाला, विज्ञान प्रयोगशाला, गणित एवं भौतिक प्रयोगशाला, गृह-विज्ञान प्रयोगशाला के साथ-साथ मनोविज्ञान प्रयोगशाला, कम्प्यूटर लैब वाई-फाई कनेक्शन युक्त, शैक्षिक तकनीकी प्रयोगशाला एवं स्मार्ट क्लास रूम एवं सेमिनार हॉल की व्यवस्था है।

प्रतिस्पर्धा के इस युग में छात्राओं को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के तहत सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार ही वस्तुनिष्ठ आधार पर भी तैयार करवायें जाने का प्रयास निरन्तर किया जा रहा है, उसका परिणाम है कि महाविद्यालय से प्रशिक्षित छात्राऐं राजस्थान विश्वविद्यालय परीक्षा में गत तीन वर्षो से लगातार M.Ed में स्वर्ण पदक एवं सत्र- 2022-23 बी. एड. में स्वर्ण पदक RAS, रीट, नेट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी शिक्षक आदि प्रतियोगी परिक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही है। इसके अतिरिक्त बी.एड. इन्टर्नशिप (शिक्षण अभ्यास) करने वाली छात्राध्यापिकाओं को सरकारी विद्यालयों में नवाचार आधारित शिक्षण करने एवं नवीन विधियाँ प्रयुक्त करते हुए प्रभावी अध्यापन कार्य करवाने हेतु 26 जनवरी, 15 अगस्त को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया है जिससे सुबोध की सुरभि सम्पूर्ण समाज में प्रवाहित हो रही है।

●●●

सुबोध रत्न

Poonam
M.Ed. 2018-20
83.3

Ayushi Sharma
M.Ed. 2020-22
82.6

Neetu Jain
M.Ed. 2021-23
84.15

Ayusha Jain
B.Ed. 2020-22
88.11

Chanda Kumawat
M.Ed. I 2023-24
77.7

Gayatri Sharma
B.Ed. I 2023-24
87.79

Abhinati Singhal
B.Ed. II 2023-24
87.75

Gati Kumawat
B.A.-B.Ed. I 2023-24
78.66

Harshita Bairwa
B.A.-B.Ed. II 2023-24
75.9

Ekta Choudhary
B.A.-B.Ed. III 2023-24
80.54

Arti Choudhary
B.A.-B.Ed. IV 2023-24
78.45

Shweta Meena
B.Sc.-B.Ed. I 2023-24
79.73

Khushi Sharma
B.Sc.-B.Ed. II 2023-24
84.58

Deeksha Tiwari
B.Sc.-B.Ed. III 2023-24
84.1

Tanisha Jain
B.Sc.-B.Ed. IV 2023-24
82.83

मंथन

Prof Roop Singh Bareth
Former VC University
Ajmer

Prof. Beena Agarwal
Rt. Prof & Head
Sanskrit

Prof. Joya Chakraborty
Rt. Prof. & Head
Deptt. of English

Prof. Anurag Sharma
Director, R.A. Podar Institute of Management
Dean, University of Rajasthan, Jaipur

Prof. Rita Arora
Director JNU, Jaipur
Dean(UOR)

Rt. Prof.
Deepak Bhatnagar
(Physics)

Prof. Rameshwer Jat
(Economics)

Prof. Vandana Goswami
Banasthali Vidyapeeth

Prof. N.K. Pandey
HOD (Dept. of Hindi)

Netu Kulshreshth

Mamta Vijay
Brand Ambassador (Saksham Society)

Prof. Rajesh Sharma
Dept. of Sanskrit
(Dean Faculty of Arts)

भारतीय ज्ञान परम्परा: शिक्षा के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन का एक कारगर उपाय

प्रो. यदु शर्मा, प्राचार्या
डीन, शिक्षा संकाय,
राजस्थान विश्वविद्यालय

विकसित भारत–2047 की संकल्पना को साकार करने के लिए NEP-2020 के अनुरूप समाज को शिक्षित किया जाना अनिवार्य है इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा एक समृद्ध और विविध धरोहर है जो हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं में मार्गदर्शन प्रदान करती है। यह परम्परा न केवल हमारे शैक्षिक और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करती है, बल्कि हमें एक समग्र और संतुलित जीवन जीने के लिए भी प्रेरित करती है। शिक्षा के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा को प्रसारित करना और इसके महत्व को समझना हमारे संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए एक कारगर उपाय सिद्ध हो सकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा और शिक्षा

भारतीय ज्ञान परम्परा और शिक्षा का गहरा संबंध है। हमारी शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया जा सकता है जैसे कि वेद, उपनिषद्, पुराण और दर्शन। इससे छात्रों को न केवल शैक्षिक ज्ञान प्राप्त होगा, बल्कि वे हमारी संस्कृति और परम्परा से जुड़े वैज्ञानिक आधारों को समझने व उसके अनुरूप सकारात्मक, रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम हो सकेंगे।

शिक्षा के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए कदम–

* वर्तमान समय में शिक्षा के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा का अनुकरण करते हुए संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के कई कारगर कदम उठाये जा सकते है।

* सर्वप्रथम भारतीय ज्ञान परम्परा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए व विद्यार्थियों को इसके सैद्धान्तिक, व्यावहारिक व क्रियात्मक महत्व के बारे में बताया जाना चाहिए।

* सांस्कृतिक कार्यक्रम– विद्यालयों व महाविद्यालयों में महापुरूषों की जयंती, पर्व व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना जिससे विद्यार्थियों को हमारी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित होने का अवसर प्राप्त हो सके व इन महापुरूषों द्वारा देशप्रेम व देशभक्ति के लिए किये गये संघर्ष, त्याग व समर्पण की भावना से ओत–प्रोत होकर स्वयं भी अपने जीवन एवं आचरण को देश के प्रति समर्पित करने का भाव विकसित कर सके।

* शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार प्रशिक्षित करना। शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व के बारे में बताना और उन्हें प्रसार में शामिल करना। भारतीय ज्ञान परम्परा के संवाहक के रूप में शिक्षकों की भूमिका का निर्धारण करना। शिक्षकों द्वारा रोल मॉडल के रूप में शिक्षार्थी के समक्ष व्यवहार किया जाना अपेक्षित एवं अनिवार्य होना चाहिए।

* अभ्यास और गतिविधियाँ– विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में अध्ययन एवं क्रिया आधारित गतिविधियों को समाहित किया जाये ताकि भारतीय परम्परा के विभिन्न पहलुओं के बारे में अभ्यास और गतिविधियों के

माध्यम से विद्यार्थी ज्ञानार्जन कर सके। विद्यार्थी प्राप्त ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में उपयोग कर सद्नागरिक के रूप में विकसित राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके।

शिक्षा के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन का महत्वः

- ज्ञानाधारित शिक्षा का महत्व— सूचनात्मक शिक्षा व डिग्रीधारी शिक्षा के स्थान पर ज्ञानाधारित शिक्षा का महत्व विद्यार्थियों में बढ़ेगा और छात्रों को हमारी संस्कृति और परम्परा के बारे में जानने का अवसर मिलेगा साथ ही भारतीय संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन होगा और आने वाली पीढ़ियों को शिक्षा के माध्यम से इसकी सही जानकारी मिलेगी।
- समग्र विकास में सहायक— ज्ञानाधारित शिक्षा बालकों को समग्र रूप से व्यक्तित्व निर्माण की दिशा की ओर उन्मुख कर पाने में सफल होगी। विद्यार्थियों का समग्र विकास होगा और वे एक समग्र और संतुलित जीवन जीने के लिए प्रेरित होगे। शारीरिक, मानसिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक आदि सभी पक्षों के आधार पर अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर पाने में समर्थ हो सकेंगे। अनावश्यक दबाव, तनाव व संघर्ष की स्थिति का डटकर मुकाबला कर सकेंगे।
- आधुनिकता की अंधी दौड भी एक बड़ी चुनौति हो सकती है जिससे हमारी संस्कृति और परम्परा को खतरा हो सकता है। शिक्षा के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलेगा।
- वर्तमान में भारतीय ज्ञान परम्परा के माध्यम से पाश्चात्य संस्कृति के दूष्प्रभाव को कम किया जा सकता है एवं इसी शिक्षा के माध्यम से सभी नागरिकों को जागरूक करना ही हमारा मूल लक्ष्य होना चाहिए।

निष्कर्ष

शिक्षा के माध्यम से ही संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन एक कारगर उपाय हो सकता है। हमें शिक्षा के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिए काम करना चाहिए और इसके महत्व को समझना चाहिए।

- शिक्षा नीति में बदलावः शिक्षा नीति में बदलाव करके भारतीय ज्ञान परम्परा को पाठ्यक्रम में शामिल करना।
- शिक्षकों को प्रशिक्षणः शिक्षकों को भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व के बारे में प्रशिक्षण देना।
- संसाधनों का विकासः संसाधनो का विकास करके शिक्षा के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन में मदद करना।
- सही निर्णय हेतु जागरूकता फैलानाः जागरूकता फैलाकर लोगों को भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व के बारे में बताना एवं जीवन जीने के कौशल का विकास करना। समुचित एवं सही निर्णय लेने के लिए प्रेरित करना।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि शिक्षा के माध्यम से हमारी संस्कृति का संरक्षण व सवंर्धन होगा और आने वाली पीढ़ियों को इसकी जानकारी मिल सकेगी एवं विकसित भारत—2024 में पुनः विश्व गुरू के रूप में प्रतिस्थापित हो पाने में सक्षम है।

●●●

नई शिक्षा नीति 2020: शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को प्रभावी बनाने हेतु कारगर कदम

डॉ. रेणु अरोड़ा
एसोसिएट प्रोफेसर
IQAC समन्वयक

नई शिक्षा नीति –2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव की शुरूआत है। इस नीति का उद्देश्य शिक्षा को अधिक सुलभ, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण बनाना है। शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम इस नीति का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसका उद्देश्य भावी शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों और तकनीकों से अवगत कराना है।

शिक्षण प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार

शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए नियमित मूल्यांकन और सुधार किया जाना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाये जा सकते हैः–

- प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकनः प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित मूल्यांकन किया जाना चाहिए, जिससे उनकी प्रभावशीलता का पता लगाया जा सके।
- प्रशिक्षकों की क्षमता में सुधार– प्रशिक्षकों की क्षमता में सुधार करने के लिए उन्हें नियमित प्रशिक्षण और अद्यतन प्रदान किया जाना चाहिए।
- प्रशिक्षण सामग्री का अद्यतन– प्रशिक्षण सामग्री को नियमित रूप से अद्यतन किया जाना चाहिए, जिससे वे नवीनतम शिक्षण विधियों और तकनीकों को प्रतिबिंबित कर सके शिक्षक प्रशिक्षण में व्यावहारिक अनुभव को शामिल करना चाहिए, जिससे भावी शिक्षकों को वास्तविक कक्षा में अनुभव प्राप्त हो सके।
- कक्षा में अनुभव– भावी शिक्षकों को वास्तविक कक्षा में अनुभव प्राप्त करने के लिए समुचित अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। शिक्षकों को प्रशिक्षण के दौरान सैद्धान्तिक, व्यावहारिक एवं क्रियात्मक तीनों पक्षों पर बल देना चाहिए।
- प्रशिक्षण के दौरान अभ्यास– प्रशिक्षण के दौरान अभ्यास को शामिल करना चाहिए, जिससे भावी शिक्षकों को अपने शिक्षण कौशल में सुधार करने का अवसर मिल सके।
- मार्गदर्शन और समर्थन– शिक्षकों के द्वारा भावी शिक्षकों को मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे अपने शिक्षण कौशल में सुधार कर सके व व्यावसायिक दक्षता एवं कौशल अर्जित कर सके।

नियमित प्रशिक्षण और अद्यतन–

भावी शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण और अद्यतन प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे नवीनतम शिक्षण विधियों और तकनीकों से अवगत रह सके। इसके लिए प्रशिक्षणालयों में अधिगम आधारित वातावरण

प्रदान करने हेतु प्रयास किये जाने चाहिए।

- नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम– नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों और तकनीकों से अवगत कराया जा सके।
- ऑनलाइन संसाधनो का उपयोग– ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करके शिक्षकों को अद्यतन जानकारी प्रदान की जा सकती है।
- शिक्षकों का समर्थन– शिक्षकों को समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे अपने शिक्षण कौशल में सुधार कर सके व प्रजातान्त्रिक वातावरण एवं व्यवहार भी प्रशिक्षणालयों में अनिवार्य ही नहीं वरन् अपेक्षित है। अतः शिक्षकों को सकारात्मक, रचनात्मक, सृजनात्मक सहयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- मार्गदर्शन कार्यक्रम– शिक्षकों द्वारा भावी शिक्षकों को मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे भावी शिक्षकों को अपने शिक्षण कौशल में सुधार करने में मदद मिल सके।
- समर्थन प्रणाली– समर्थन प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए, जिससे भावी शिक्षकों को आवश्यकता पड़ने पर पर्याप्त एवं सही समर्थन प्रदान किया जा सके।
- प्रतिक्रिया और मूल्यांकन–शिक्षकों को प्रतिक्रिया और मूल्यांकन प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे अपने शिक्षण कौशल में सुधार कर सके। भावी शिक्षकों में शिक्षण कौशल एवं दक्षता विकसित करने के लिए उन्हें तुरंत प्रतिपुष्टि प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे अपनी स्वशक्ति व स्वगति से स्वमूल्यांकन करते हुए अधिगम की प्रतिपुष्टि के साथ आगे बढ़ने हेतु प्रेरित हो सके।
- ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम–शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में समुचित प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहिए, जिससे भावी शिक्षकों को ऑलाइन संसाधनों और उपकरणों का उपयोग करने में मदद मिल सके। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे भावी शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों और तकनीकों से अवगत कराया जा सके। शिक्षण साफ्टवेयर का उपयोग करके भावी शिक्षकों को अपने शिक्षण कौशल में सुधार करने में मदद मिल सकेंगी। ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करके शिक्षकों को अद्यतन जानकारी प्रदान की जा सकती है।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति–2020 के तहत शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को प्रभावी बनाने व भावी शिक्षकों को व्यवसाय अनुरूप व्यावसायिक क्षमता एवं दक्षता विकसित करने के लिए कई प्रभावी कदम उठाए जा सकते है। इनमें प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार, व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना, नियमित प्रशिक्षण और अद्यतन प्रदान करना, भावी शिक्षकों का समर्थन और मार्गदर्शन करना और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना जैसे महत्वपूर्ण कदम सम्माहित किये जा सकते है।। इन कारगर कदमों को उठाकर, शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावी, रूचिपूर्ण, तार्किक एवं आनन्दायी बनाने में मदद मिलेगी।

●●●

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: एक वरदान

– प्रतिक्षा चौधरी
बी.ए.-बी.एड. द्वितीय वर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को आम तौर पर कार्यों को सुविधाजनक बनाने, निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाने और विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देने की क्षमता के कारण एक वरदान माना जाता है। यह दक्षता में सुधार कर सकता है, अनुभव को निजीकृत कर सकता है और जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों के समाधान में भी योगदान दे सकता है।

एआई के लाभ

1. *दक्षता और उत्पादकता*: एआई उद्योगों को सक्षम बनाता है, जिससे मैनुअल प्रयास कम होते हैं और दक्षता बढ़ती है। निर्माण से लेकर ग्राहक सेवा तक, एआई संचालित प्रणालियाँ दोहराए जाने वाले कार्य करती हैं, जिससे रचनात्मक और रणनीतिक भूमिकाओं के लिए मानव संसाधन मुक्त होते हैं।

2. *बेहतर स्वास्थ्य सेवा*: स्वास्थ्य सेवा में एआई की भूमिका परिवर्तनकारी है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम बीमारियों की भविष्यवाणी करने, उपचार की सलाह देने और सर्जरी में सहायता करने के लिए चिकित्सा डेटा का विश्लेषण करते हैं।

3. *बेहतर निर्णय निर्माण*: एआई संचालित विश्लेषण ऐसी दृष्टि प्रदान करते हैं जो व्यवसाय और सरकार को डेटा संचालित निर्णय लेने में मदद करते हैं।

4. *रोजमर्रा की सुविधा*: एआई हमारे दैनिक जीवन में समाहित हो गया है, जिससे कार्य अधिक सुविधाजनक और आनंददायक हो गए हैं।

एआई की परिवर्तनकारी शक्ति

एआई में एक परिवर्तनकारी शक्ति बनने की क्षमता है जो विभिन्न क्षेत्रों में समाज को महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है। संभावित चुनौतियों का समाधान करते हुए इसकी क्षमताओं को अपनाकर, हम एक अधिक कुशल, अभिनव और न्यायसंगत भविष्य बनाने के लिए एआई की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं।

THE THREADS THAT TIME CAN'T BREAK

- Kiran Choudhary
B.Ed. I Year

In silence, they can hear your pain,
Through storms, they stand like steady rain.
No blood, yet closer than your kin,
True friends see all that lies within.

They know your laugh, your hidden tears,
They walk beside through all the years.
When dreams collapse and skies turn gray,
They hold your hand, they choose to stay.

A single glance, a word unspoken,
Can heal a heart that's bruised and broken.
They lift you up when you feel small,
Believe in you when doubts grow tall.

Not bound by time, nor place, nor fate,
Real friends don't leave, they simply wait.
Through distance, silence, joy, and strife,
They are the colors in your life.

And when the world feels cold and wide,
You'll find them always by your side.
A treasure deep, no gold could lend—
A soul's true mirror: that's a friend.

Regional Languages: A School Dilemma

Chelsey Ruhial, B.Ed 1st year

At first glance, promoting regional languages might seem like a noble idea after all they represent culture, tradition and identity. But in practice, this approach brings more challenges than benefits, especially in the context of education. Firstly, In today's globalized world, English and other international languages are essential. They are key to higher education, global job market and international Collaborations. If we focus to regional languages our Student's potential to compete at the global stage can be risked. Secondly, we must consider the importance of national unity .

Third, migration and urbanization have made classrooms more diverse. A regional language in one state might be alien to students from another. For example, a child from Tamil Nadu moving to Maharashtra might struggle if forced to study Marathi. This can hinder inclusivity and national unity. Also, let us not forget the financial burden on the education system. Training teachers, printing books, and creating learning material in multiple regional languages is costly and inefficient. Promoting regional languages can be done through extracurricular activities, community programs, or optional language classes but not at the cost of a child's future. In conclusion, while regional languages must be preserved, school is a place to prepare students for the real world and the real world speaks English.

अंतर्मन की यात्रा

प्रियांशी जांगिड़
बी.एस.सी.–बी.एड. द्वितीय वर्ष

खो गया था जो अस्तित्व मेरा, क्या तुमने कभी खुदको यूँ खोया है?
जब अपनी ही परछाई अजनबी लगे, क्या तब भी तुमने खुदको संजोया है?
बन गई थी किसी के लिए बोझ, क्या तुमने भी ऐसा बोझ उठाया है?
जब अपने ही सपनों को मारकर, दूसरों की उम्मीदों को निभाया है?
जिन्होनें कहा था नाजुक सी कली, क्या उन्हें वृक्ष बन दिखाया है?
जब तुम्हारी मजबूती को कमजोरी समझा, क्या तब भी तुमने खुदको नहीं गवाया है?
जिन्होनें माँगी सीता सी अग्नि परीक्षा, क्या तुमने भी ऐसी परीक्षा दी है?
जब तुम्हारी निष्ठा पर सवाल उठे, क्या तब भी तुमने खुदको सच्चा पाया है?
द्रोपदी बन प्रतीक्षा ना करकें, क्या तुमने भी अपनी लड़ाई खुद लड़ी है?
जब सहायता की आस छोड़कर, अपनी शक्ति से राह गढ़ी है?
पद्मा सा जौहर ना करके, क्या तुमने भी आत्मबल से जीवन जिया है?
जब हार मानने का आया समय, क्या तब भी तुमने साहस से काम लिया है?
बहुत दे दिया त्याग, क्या अब तुमने खुद को अपनाया है?
जब सबने तुम्हें नजरअंदाज किया, क्या तब भी तुमने खुद को समझाया है?
पराये घर की हूँ मैं, पराये घर से हूँ मैं, क्या तुमने भी अपनी पहचान बनाई है,
जब अपनी जगह कहीं नहीं मिली, क्या तब भी तुमने खुद की राह बनाई है?
जमीं को छोड़ आसमा अपनाना है क्या तुमने भी ऊँचाइयों को छूने का सपना देखा है?
जब सबने तुम्हें नीचे गिराने की कोशिश की, क्या तब भी तुमने ऊपर उठने का हौसला रखा है?
मुझे अपना अस्तित्व फिर पाना है, क्या तुमने भी खुद को फिर से पाया है?
जब सब कुछ खो गया था, क्या तब भी तुमने खुद को नया बनाया है?

ETHICS AND ACCOUNTABILITY IN EDUCATION

Dr. Reetu Gupta
Assistant Professor

According to **Dr Radhakrishnan – "The teacher's place in the society is very important. He is the centre of imparting intellectual traditions and technical skills from one generation to another and helps to keep the light of civilization burning."**

The real function of education is to bring about a release of energy in the pursuit of goodness, truth and honesty, which in turn makes the individual a good human being and a right kind of citizen. Ethics is the foundation of our human relationship to ourselves and the world around us. Education enables us to make ethical choice about the direction and the detours we take in life. It shapes the character and the willingness to accept responsibility, it adds values and gives direction to our life, and education should be in a position to develop integrity, honesty, courage, fairness and generosity. It is an essential requisite for true success but such things can happen when a teacher is in a position to develop the following ethical qualities: Commitment, Monumental patience, Concern and Kindness, Noble in thought and deed, Leadership qualities, Be able to improve others.

According to **H.G.Wells – "Teacher is the creator of history. The history of the nation is written in schools and schools cannot differ much from the quality of their teachers."**

It is essential that a teacher must be accountable towards his students, society, profession, teaching – learning process, knowledge and values. Hence, quality education is possible when a teacher has the ethics and accountability towards his profession. Teacher should be accountable for outcomes and for the process leading to those outcomes.

Some professional ethics for teachers are loyalty towards duty, punctuality, dutifulness, respect for the profession, respect for the institution, respect and admiration for co-staff, strictness and straight forwardness, truthfulness, honesty, have patience, good behaviour towards students, use of rights, motivational attitude, studious/ good learner, dressing sense, positive attitude, innovative, proper use of authority.

Accountability is a concept of ethics and synonymously with concepts such as responsibility, answerability, liability etc. Every teacher needs to be accountable towards his job. A teacher facilitates students to acquire knowledge, form desirable attitudes and develop required skills. A teacher helps in refining, reshaping, remodelling and developing the cognitive, affective and psychomotor behaviour of students.

Teacher and students are the two main pillars of the teaching learning process. The progress and development of the learners can be possible only when the teacher is sincere, hardworking, and sympathetic. For achieving optimal learning of students, the teacher should be accountable and should take care of the students' progress according to their abilities. An effective teacher approaches the age and class of the students, their abilities, motivation, previous knowledge, available resources, use of teaching aids and modern technology, the psychology of the heterogeneous grouping of the students, the evaluating aspects and assignments etc. to the students.

Fresh students Effective teachers in school Passing out students with attributes: Knowledge, Skills, Values, Quality The most important role of teacher is to bring the students into educational fold, coordinate various activities of the society and motivate all the students to learn. Teachers are the torch bearer of the society who accept ethics and accountability to their students and maintain their record of humble services to the mankind. A teacher should think various ways and means to help the students to acquire the knowledge, to develop academic potential and to sharp their future through the process of teaching-learning. Professionally accountable teachers adopt various methods and techniques of teaching follow the code of conduct, set the examples for others, apply new ideas in classroom situations. Thus a teacher can achieve professional enrichment and excellence which is beneficial for national development. A teacher should devote his whole life to teaching as well as learning for the future of humanity as his role is multidimensional and multifarious. For this Dr. A.P.J. Abdul Kalam has quoted that **A teacher constantly endeavours to fill his mind with great thoughts and spread the nobility in thinking and actions of his students.**

A professionally accountable teacher must be excellent not only in the subject to be taught, but also understand the learning requirements of the students. He should be caring, affectionate and sympathetic towards them for their harmonious development and prosperity of nation. Hence it is essential that a teacher must be accountable towards himself, his students, society, profession, teaching-learning process, knowledge and values. Hence, quality education is possible only when a teacher has the ethics and accountability towards his profession.

बालक व परामर्श

डॉ. गायत्री चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर

आजकल युवा पीढ़ी में गुस्सा, चिडचिड़ापन, मानसिक, कुण्ठा, अवसाद एवं अशोभनीय व्यवहार बढ़ता जा रहा हैं। इसके पीछे मूल कारण नकारात्मक घरेलू व सामाजिक वातावरण, बुरे दोस्तो की संगत, कही ना कही अभिभावकों का अपनी जिम्मेदारी से पीछे हटना भी एक कारण हैं। किसी भी मुद्दे पर बालको को संदेवनशील तरीके से जागरूक करना आवश्यक हैं।

जैसा कि हम सभी को ज्ञात है कि विद्यार्थी अपने वयस्क होने की उम्र का आधा समय विद्यालय व महाविद्यालय में गुजारते हैं। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को आधार देने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। विद्यालय के परामर्शदाता अनेक समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रशिक्षित होते हैं जैसे–तनाव, आत्म सम्मान, देह छवि सम्बन्धी समस्याएं, व्यसन और आत्महत्या के विचार या सम्भावित पेशा मार्ग। एक शिक्षक लगातार अपने विद्यार्थियों के सम्पर्क में रहता हैं, उन्हें समस्याओं को परामर्शदाता को बताने के लिए एवं परामर्श के लिए प्रोत्साहित करता हैं। विद्यार्थियों के लिए परिसर में सहायता पहुंचाने के लिए शिक्षक एक प्राथमिक स्त्रोत बन सकता हैं।

किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत समस्याओं एवं कठिनाईयों को दूर करने के लिए दी जाने वाली सहायता, सलाह और मार्गदर्शन परामर्श कहलाता हैं। परामर्श देने वाले व्यक्ति को परामर्शदाता कहते हैं। निर्देशन के अन्तर्गत परामर्श एक आयोजित विशिष्ठ सेवा है। व्यक्ति अपनी निजी समस्याओं के समाधान के लिए परामर्श चाहता हैं। व्यक्तिगत समस्या शारीरिक, मानसिक, व्यवसाय संबंधी तथा समाज संबंधी हो सकती हैं जिसके लिए उसे परामर्शक की आवश्यकता होती हैं। रोजर्स – ''परामर्श किसी व्यक्ति के साथ लगातार प्रत्यक्ष सम्पर्क की वह कड़ी हैं जिसका उद्धेश्य व्यक्ति को उसकी अभिव्यक्ति तथा व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायता प्रदान करता हैं।''

परामर्श के प्रकार

आपातकालीन परामर्श	निवारक परामर्श	विकासात्मक परामर्श	समस्या समाधानात्मक परामर्श

परामर्श देने या लेने के अपने तरीके होते है इस प्रक्रिया में परामर्शदाता तथा परामर्श लेने वाले की अलग अलग स्थितियां तथा भूमिकांए होती हैं तथा अपना योगदान रहता हैं। इन्हीं को परामर्श उपागम बोला जाता हैं। मुख्य रूप से ऐसे उपागमों में तीन उपागमों का विशेष रूप से उल्लेख होता हैं जो निम्न प्रकार हैं:–

मुख्य उपागम	निर्देशात्मक परामर्श	अनिदेशात्मक उपागम	समन्वित परामर्श

बालक के मन मस्तिष्क में बाल्यावस्था में जो प्रभाव पड़ गया वही आजीवन उस पर रहता हैं, इसलिए आवश्यक है कि शैक्षणिक संस्थान बालक के घरेलू वातावरण को ध्यान में रखते हुए मूलभूत आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें सुरक्षा, स्नेह व प्यार भरा वातावरण, भावात्वमक लगाव, शिक्षा व उत्साह भरा वातारवण दें।

आधुनिकता के युग में शिक्षा के माध्यम को ज्ञान की ओर बढने की आवश्यकता है। परामर्श के माध्यम से बालकों को शारीरिक व भावात्वमक स्तर पर मजबूत बनाने हेतु उन्हें बेहतर शिक्षा, सुरक्षा व संरक्षण के दृष्टिकोण से अपने जीवन अनुभव, कहानियों, उदाहरणों के माध्यम से उन्हें बताने होंगे, उन्हें जागरूक करना होगा, साथ में नैतिक मूल्यों की नींव डालनी होगी। बालकों में सच का बीज डालना होगा।

आज की परिस्थितियों को देखते हुए विद्यालय में एक पूर्णकालिक परामर्शदाता को नियुक्त किया जाए। विद्यार्थियों को परेशानी में परामर्शदाता की ओर से परामर्श लेने के लिए प्रेरित किया जाये। एक शिक्षक जिस पर विश्वास किया जा सकें और जो सहानुभूति रखता हो, विद्यार्थियों को परामर्श के माध्यम से सहायता व मार्गदर्शन दे।

जब एक विद्यार्थी परामर्शदाता के पास आये तो उसे निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. विद्यार्थियों के साथ आन्तरिक संबंध बनाना 2. निष्पक्ष रहें। 3. संवेगात्मक रूप से स्थिर रहें। 4. विद्यार्थियों के प्रति गोपनीय रहें। 5. प्रशिक्षित हो। 6. विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखकर परामर्श दे।

बढ़ती आधुनिकता की दौड़ में विद्यार्थियों की बढ़ती महत्वकांक्षाओं के मार्गदर्शन के लिए केन्द्र सरकार प्रयास कर रही हैं। जिसके अन्तर्गत समस्त विद्यालयों में एक प्रशिक्षित परामर्शदाता का अनिवार्य रूप से होना तय किया हैं, जो हमारे बालकों को मानसिक रूप से स्वस्थ एवं सम्पन्न नागरिक बना सकता हैं।

उच्च शिक्षा में सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन

– डॉ. चिन्मय जैन
असिस्टेंट प्रोफेसर

भूमिका– वर्तमान युग में उच्च शिक्षा अपना अपरिमित विस्तार कर रही है। उच्च शिक्षा संस्थान बड़ी संख्या में खोले जा रहे हैं तथा अधिकाधिक लोग उच्च शिक्षा को प्राप्त करना चाह रहे हैं, परन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या हम उच्च शिक्षा संस्थाओं में संख्यात्मक विकास के साथ–साथ उनके गुणात्मक उन्नयन के बारे में भी सोच रहे हैं? शायद हमें इस प्रश्न का उत्तर अत्यन्त गहराई से ढूंढना होगा, हमने इस (संख्यात्मक वृद्धि) अन्धानुकरण में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को कहीं बहुत पीछे छोड़ दिया है। आज हम सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन (ज्फड) की चर्चा कर रहे हैं। हम विभिन्न स्तरों पर और विभिन्न सम्बन्धित पक्षों को अत्यन्त बारीकी से देखते हुए गुणवत्ता प्रबन्धन को सुनिश्चित करते हैं, परन्तु यह सर्वविदित है कि हम विविध सम्बन्धित महत्वपूर्ण पक्षों की गुणवत्ता का ध्यान नहीं रख रहे हैं। चाहे वह शिक्षण अधिगम व्यवस्था हो या मूलभूत संरचना हो, हम केवल संख्यात्मक विकास पर बल दे रहे हैं।

गुणवत्ता का अर्थ– यदि हम गुणवत्तायुक्त शिक्षा को परिभाषित करना चाहते हैं तो हम यह कह सकते हैं कि न्यूनतम एवं सहज प्रयासों में इष्टतम एवं सफलतापूर्वक अभीष्ट शिक्षण–उद्देश्यों को प्राप्त कर लेने की क्षमतायुक्त शिक्षापद्धति गुणवत्तायुक्त शिक्षापद्धति कही जा सकती है।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की वर्तमान स्थिति– आज का युवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर बौद्धिक और तार्किक योग्यता तो प्राप्त कर लेता है, किन्तु जीवन में सांवेगिक सन्तुलन एवं भावनात्मक विकास नहीं कर पाता है, जिसकी वजह से वह अपनी तार्किक योग्यता द्वारा कुतर्क का प्रयोग करता है और भावनात्मक विकास नहीं होने से जीवन में छोटी–छोटी समस्याओं से घबरा जाता है और पलायन का मार्ग अपना लेता है, अन्यथा आत्महत्या जैसे जघन्य कृत्य को अपना लेता है। यदि आत्महत्या से बचाने का कार्य शिक्षा ने नहीं किया तो फिर वह वह उच्च शिक्षा कैसे कही जा सकती है? अतः आज हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो पूर्णतः सन्तुलित हो अर्थात् जिसमें नैतिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक, यौगिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि सभी प्रकार के पहलुओं का समग्र विकास होता हो। तभी उच्च शिक्षा में गुणवत्ता लाई जा सकती है।

गुणवत्तायुक्त शिक्षा की आवश्यकता– प्राचीन भारतीय विद्वान मानते थे कि समुचित नैतिक भावना और चरित्र के अभाव में मात्र बौद्धिक उपलब्धियों का कोई महत्व नहीं है। उनकी दृष्टि में सबसे अधिक महत्वपूर्ण चीज है– सदाचार, अर्थात् आचार ही उनके लिए परमधर्म था–

गुणवत्ता उन्नयन के उपाय– आज शिक्षा का प्रभाव नहीं हो रहा है, क्योंकि उसकी प्रक्रिया पूरी नहीं हो रही है। शिक्षा की पूरी प्रक्रिया है– ग्रहण करो फिर उसका आसेवन करो, जीवन में उतारो। जानो और प्रयोग करो। आज यह आसेवन की बात छूट सी गई। अतः शिक्षा में उन्नयन को हम भूल गये। एतदर्थ आज पुनः चित्तनिरोध की आवश्यकता हो गई है। इसके दो उपाय हैं– अभ्यास और वैराग्य।

उपर्युक्त चिन्तन द्वारा एक तथ्य निश्चित रूप से उभर कर सामने आता है कि प्रत्येक विद्यार्थी युवक अपनी विश्वविद्यालयी शिक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात् पीएच. डी. आदि के उपक्रम कर लेने के पश्चात् एक वर्ष का पूरा समय अपने जीवन को समझने के लिए लगाए, अपने आत्मानुशासन के विकास के लिए लगाए। यदि प्रत्येक विद्यार्थी में यह भावना बलवती हो जाए तो यह निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि सरकार शिक्षा की जिस जटिल पहेली का समाधान नहीं कर सकती, उसको समाज अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ से सुलझा देगा, अनुशासन की प्रतिष्ठा करेगा और यह धार्मिक जगत् का बहुत बड़ा अवदान होगा।

शिक्षा चिन्तन, मूल्य अभिप्रेत जीवन, चुनौतियों से जूझना एवं नवीन सृजन की दिशा दे सके इसी में पाठ्यक्रम की सार्थकता है, न कि परीक्षा पास करने और प्रमाणपत्र प्राप्त करने मात्र में। शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए इंसानियत। इसे सभी व्यक्तियों को अपने राष्ट्रीय एवं विश्व के सर्वनिष्ठ हितों की ओर तत्पर करना है। इसे उनके मस्तिष्क को पूर्वाग्रहों से मुक्त करना है, व्यावहारिक बुद्धि की नींव रखनी है और विचार एवं क्रिया के तार्किक मानकों के विकास का समावेश करना है। यही तो है समग्र शिक्षा के व्यापक एवं निर्देशक लक्ष्य और इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने वाली शिक्षा ही गुणवत्ता का स्तर कायम रख सकती है।

प्रभावी एवम् कुशल शिक्षण निर्माण में – ललित कलाओं की भूमिका

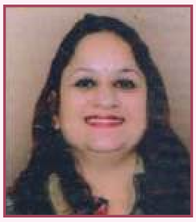

डॉ. ज्योति गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्।।

अर्थात् विद्या से विनय (विनम्रता) आती है, विनय से पात्रता (योग्यता) आती है, योग्यता (पात्रता) से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

शिक्षा हम सभी के उज्जवल भविष्य के लिए बहुत ही आवश्यक साधन है। मानव की प्रगति एवम् विकास में शिक्षा का विशेष महत्व है। आधुनिक युग शिक्षा का महत्व पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ गया है। युवाओं को अपना जीवन यापन करने हेतु, अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने हेतु शिक्षा की आवश्यकता है। आज की शिक्षा प्रणाली में मात्र ज्ञान प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है, ज्ञान के प्रयोग पर भी अधिक बल दिया जाता है। इसके लिए कौशल विकास अत्यन्त आवश्यक है। इसका उपयुक्त माध्यम 'कला' है, क्योंकि यह एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशल का प्रयोग होता है। 'कला' समाज का दर्पण है। मनुष्य के जीवन में कलाओं का भी विशेष महत्व है कला मनुष्य के जीवन में आनन्द का भाव प्रदान करती है। कला के बिना एक सभ्य समाज की कल्पना करना भी कठिन है इसलिए विदित है–

''साहित्य संगीत कल विहीन'।
साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीनः।।''
अर्थात् बिना साहित्य कला, संगीत कला के मनुष्य बिना पूँछ के पशु की भाँति है।

शिक्षा के साथ जब हम विभिन्न कलाओं को जोड़ते है तो विद्यार्थी की उत्सुकता, सृजनता कल्पना खोजने की प्रवृत्ति एवम् सौन्दर्यानुभूति का विकास होता है। जहाँ भावाभिव्यक्ति हेतु विभिन्न माध्यमों से जिनका विविध ज्ञानेन्द्रियों से सम्बन्ध है वे ललित कलाएँ कहलाती है जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्यकला, संगीतकला व नाट्यकला। ये ललित कलाएँ विद्यार्थियों को यह अवसर प्रदान करती है जिसके द्वारा वे अपने भावों को प्रकट कर सकते है।

ललित कलाओं की शिक्षा विद्यार्थियों मे सौन्द्रर्य–बोध का विकास करती है और चरित्र का निर्माण करती है। विभिन्न स्वनात्मक गतिविधियों के रोचक बनाकर सीखने – सीखाने की प्रक्रिया में विद्यार्थी और शिक्षक दोनों का तनाव कम होता है और सृजनात्मकता भी विकसित होती है। इसलिए उपयुक्त माध्यम के रूप में ललित कला पाठयक्रम का एक अभिन्न हिस्सा है।

पाठ्यकम मे कला शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में तो विद्यार्थी कलाओ या सैद्धान्तिक ज्ञान तो प्राप्त करते ही है साथ ही महाविद्यालय में आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों के अन्तर्गत जो ललित–कलाओं पर आधारित होती है उनसे वे अपने कौशल का विकास प्रायोगिक रूप से भी करते हैं। जैसे चित्रकला से कैसे रंगीन व सुन्दर संयोजन करके सुन्दर चित्रांकन, परिदृश्य, स्थिर चित्रण वस्तुओं का अंकन किया जाता है सीखते हैं , अनुपयोगी वस्तुओ से उपयोगी और सुन्दर वस्तुओं का निर्माण करना, चीनी मिट्टी और प्लास्टर ऑफ पैरिस से पॉट बानाना, साथ ही लोक कलाओं में मेहंदी, माण्डना, रंगोली, चल रंगोली बनाना प्रमुख है। संगीतकला मे गायन–वादन करना, विभिन्न वाद्ययंत्रो को बजाना और प्रार्थना सभा में भाग लेकर गायन, के साथ वाद्यों को बजाना, नृत्य प्रतियोगिताओं में भाग लेना, नृत्य नाटिका–नाटक करना, नाट्यकला के अन्तर्गत प्ले, नुक्कड़ नाटक करना, रंगमंच के प्रयोग हेतु सामाग्री बनाना, सामाजिक ज्वलंत वर्तमान विषयो' पर पोस्टर बनाना, सामाजिक चेतना हेतु रैलियां निकालना आदि समस्त गतिविधियों मे सक्रिय होकर विधार्थी अपने व्यक्तिव को निखारते (Polish) हैं। विशेष रूप से छात्रा महिला–इस मंच के द्वारा सक्षम हो जाती है, क्योंकि विभिन्न प्रकार की ललित कलाएँ क्षेत्र प्रदान करती है, जिसमें वे अपनी रूचि अनुसार रचनात्मक कार्य भी कर सकती है और उच्च पद भी प्राप्त कर सकती है। साथ ही घर बैठकर महिलाएं अपना (Online) ऑनलाइन व्यवसाय कर सकती है, ऐसे कार्य बहुत सराहय जाते है, ऐसी शिक्षा ग्रहण कर के छात्र–छात्राएं आत्म निर्भर होकर सम्मानपूर्वक अपनी पहचान बना सकते हैं। जब प्रभावी एवम् कुशल शिक्षा ग्रहण करके बालिकाएँ/महिलाएँ पूर्णरूपेण शिक्षित होकर आत्मविश्वास के साथ अपना कर्तव्य कार्यस्थल पर सुचारू रूप से निभाएँगी तो आने वाली पीढ़ी स्वतः ही विकसित होगी।

निष्कर्षतः प्रत्येक विद्यार्थी विशेष रूप से बालिकाएँ/महिलाएँ, ऐसी शिक्षा प्राप्त करके स्वतंत्र रूप से आत्म विश्वास के साथ समाज में अपनी पहचान बनाए और उच्च पद प्राप्त करें।

देश की सबसे बड़ी पक्षी त्रासदी : राजस्थान

डॉ. ज्योत्सना गौड़
अशिस्टेंट प्रोफेसर

प्रस्तावना :– राजस्थान राज्य क्षेत्रफल के आधार पर भारत का सबसे बडा राज्य है। यह अपने सभ्य स्वभाव और शालीन मेहमाननवाजी के लिए जाना जाता है। राजस्थान की संस्कृति प्राचीन है तथा भौगोलिक विविधता और प्राकृतिक वैभव ने इसे और भी आकर्षक बनाया है। सांस्कृतिक परम्पराएँ, विरासत से जुड़े स्थल, महान इतिहास, प्रकृति और वन्य जीवों की विविधता आदि पर्यटकों को सहज ही आकर्षित करती है। राजस्थान में सर्वाधिक पर्यटक जयपुर शहर में आते हैं। जयपुर शहर के समीप ही स्थित है देश की सबसे बड़ी खारे पानी की झील –''सांभर झील''। सांभर झील समुद्रतल से लगभग 1200 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम में लगभग 32 किमी. तथा उत्तर से दक्षिण में फैलाव लगभग 3.55 किमी. से 11.25 किमी. तक है। सांभर झील देश मे नमक उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है, परन्तु विगत वर्ष के नवम्बर माह में यहाँ घटित पक्षी त्रासदी के कारण यह विश्व पटल पर भी चर्चित रही।

सांभर झील की महत्ता :– सांभर झील नमक का सबसे बड़ा स्त्रोत होने के साथ ही पर्यटन की दृष्टि से भी अत्यन्त आकर्षक स्थल है। झील का समतल व विशाल क्षेत्र, देशी–विदेशी पक्षियों का प्रवास इसकी सुंदरता को और भी बढ़ा देता है। झील के किनारे पहाड़ी पर स्थित शाकम्भरी माता का मन्दिर इसे पौराणिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाता है। इन्ही कारणों से यह पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। सांभर राज्य का सबसे बडा उत्पादन केन्द्र है। सांभर झील से 25–30 टन नमक का सालाना उत्पादन होता है। देश का 70 प्रतिशत नमक गुजरात से उत्पादित होता है, शेष 30 प्रतिशत में सांभर झील का एक बड़ा हिस्सा शमिल है। इस प्रकार सांभर झील का पर्यटन व नमक उद्योग के रूप में राजस्थान की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में हजारों पक्षी विभिन्न देशों से स्थानान्तरण अर्थात माइग्रेशन करके सांभर झील के तट पर आते हैं। इन पक्षियो के स्थानान्तरण के मूल कारण हैं– तापमान, खाद्य पदार्थ और प्रजनन। सांभर झील का वातावरण प्रवासी पक्षियों की इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्विक पारिस्थितिकी के संतुलन को बनाये रखने में भी सांभर झील का अहम भूमिका है।

देश की सबसे बड़ी पक्षी त्रासदी :– दुनिया मे लगभग 13000 पक्षियों की प्रजातियाँ हैं। इनमे से लगभग 50 प्रतिशत पक्षी सामान्यतया अक्टूबर माह से अपना स्थानान्तरण आरम्भ कर देते हैं। स्थानान्तरण की यह प्रक्रिया हजारों लाखों वर्षों से चली आ रही है। हर साल रूस, चीन, फीनलैण्ड, स्वीडन, साइबेरिया आदि स्थानों से पक्षी स्थानान्तरण करके भारत आते हैं, और यही पक्षी प्रवासी पक्षी कहलाते हैं। सर्दियों की समाप्ति के पश्चात ये पुनः लौट जाते हैं। हमारा देश प्रति वर्ष ''अतिथि देवो भवः'' की भावना से ओत प्रोत होकर इन प्रवासी पक्षियों का स्वागत करता है।

Rajasthan's Sambhar Lake Welcomes Flamingo
(www.hindustantimes.com)

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अक्टूबर माह में उँचे पहाड़ों को लांघ कर बर्फीले तूफानों से लड़ते हुए दुर्लभ प्रजातियों के पक्षी जैसे–नॉर्दन शावलर, कॉमन टील, नॉर्दन पिंटेल, मलार्ड, रफ, कॉमन रैड स्नेक, मार्स सैंड पाइपर, वुड सैंउ पाइपर, ग्रे फ्लूवर, नोबिल डक, रैड बेटेल्ड, लेपविंग आदि अपने शीत प्रवास हेतु सांभर झील के तट पर आये। पर इस बार झील का नक्शा ही बदल गया। झील के तटों पर झुंडो में

Sambhar Lake Avian Botulism (zeenews.india.com)

चहचहाते, रोमांचित करते प्रवासी पक्षी नहीं अपितु उनकी कब्रें पसरी हुई हैं।

सांभर झील के तट पर इस वर्ष पहली बार 10 नवम्बर को मृत पक्षी मिले थे, तथा हालात तेजी से खराब होने लगे। मौत के कारणों की जाँच रिपोर्ट एक से दूसरी फिर तीसरी लैब में भेजी गईं। राजस्थान में तो संबंधित लैब ही नही है और ना ही विशेषज्ञ। सैंपल कभी भोपाल में तो कभी देहरादून और कभी बरेली भेजे गए। पक्षियों कि मौत का कारण 12वें दिन अर्थात् 12 नवम्बर को पता चला तब तक हजारो पक्षी मर चुके थे और इस बार उनका यह प्रवास मौत का कब्रिस्तान बन गया। 22 नवम्बर को आई.वी.आर.आई. (भारतीय पशु – चिकित्सा अनुसंधान संस्थान) बरेली से आई जाँच रिपोर्ट मे इनकी मौत एवियन बोटूलिज्म नामक बीमारी से होना सामने आया। बरेली की रिपोर्ट में यह कहा गया कि यह बीमारी क्लस्ट्रिडियम बॉटूलिनम नामक बैक्टीरिया से पक्षियों में फैली है।

इस साल ज्यादा बारिश से 20 साल बाद झील लबालब हुई। 8 जुलाई तक नये तट बन गए। जब धीरे–धीरे पानी का स्तर घटा तो तटों पर खारापन बढ़ गया। छिछले पानी में सूक्ष्तम जीव क्रस्टेशियन, इनवर्टिब्रेट, प्लेंक्टोंस विषैले होकर मरने लगे। इनको खाने से एवियन बोटूलिज्म के कारण पक्षियों की मृत्यु होने लगी। ये पक्षी मरकर पानी में डूब गए और पानी कम हुआ तो ऊपर आने लगे। दूसरे आने वाले पक्षियों ने जब इन मृत पक्षियों मे पडे, मैंगट्स को खाया तो वो भी मरने लगे और इस प्रकार मृत्यु का यह चक्र चलता रहा।

जमें हुए पानी में विशेषकर जहाँ नमक या किसी और चीज की मोटी परत पानी पर चढ़ जाती है, वहाँ पानी मे ऑक्सीजन की कमी आ जाती है। क्लॉस्ट्रिडियम बॉटूलिनम, जो कि इस पक्षी त्रासदी का कारण है, ऐसा बैक्टीरिया है, जो ऑक्सीजन की कमी वाले वातावरण में सक्रिय हो टॉक्सिन छोड़ने लगता है। भोजन या पानी के साथ मिले इन टॉक्सिन के प्रभाव से पक्षी लकवाग्रस्त होकर मर जाते हैं। ऐसा ही सांभर झील मे हुआ। यदि समय रहते सिस्टम मौतों का पता लगाकर रेस्क्यू ऑपरेशन में जुट जाता तो पक्षियों की मौतों का यह भयावह आँकडा काफी कम हो सकता था।

पक्षी त्रासदी के प्रभाव :– सांभर झील मे घटित पक्षी त्रासदी ने झील से जुड़े पर्यटन व नमक उद्योग से साथ–साथ झील के पारिस्थितिकी तंत्र को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। इस पक्षी त्रासदी के कारण नमक उत्पादन करने वाली 1000 से ज्यादा यूनिट्स को सर्कुलर भेजा गया की उनके यहाँ उत्पादित नमक को बाहर नहीं भेजा जायेगा, क्योंकि नमक मे किसी हानिकारक तत्व की उपस्थिति हो सकती है। इस प्रकार सांभर झील के 1500 करोड़ के नमक के कारोबार को बहुत बड़ी हानि का सामना करना पडा। सांभर झील के तट पर चहचहाते पक्षियों की क्रीड़ाओं का आनंद उठाने के लिए आने वाले पर्यटकों ने भी झील का भयावह मंजर देखकर इससे मुँह फेर लिया। जिससे पर्यटन उद्योग को भी भारी नुकसान उठाना पड़ा।

सांभर झील और पक्षियों के संरक्षण हेतु आवश्यक प्रयास :– वर्ष 2016 मे एन.जी.टी. (नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल) ने नमक उद्योग का सांभर झील के पारिस्थितिकी तंत्र पर होने वाले प्रभावों के बारे में चेताया था कि झील का वातावरण पक्षियों के अनुकूल नही रह गया है। इसके बाद झील के संरक्षण पर नीरी ;छंजपवदंस म्दअपतवदउमदज म्दहपदममतपदह त्मेमंतबी पदेजपजनजमद्ध से रिपोर्ट तैयार कराई गई थी। राज्य सरकार ने इस पर 50 लाख से ज्यादा खर्च किये। रिपोर्ट का 2–3 बार प्रजेंटेशन भी हुआ, पर इसे अंतिम

रूप प्रदान नही कर पाये। ऐसे में झील के पारिस्थितिकी तंत्र के हित मे जो जरूरी चीजे लागू करनी थी, वो नही हो पाईं। झील के स्वास्थ्य का विषय केवल पक्षियों की मौंत से ही नहीं जुड़ा है बल्कि यह हमारे पर्यावरण व खाद्य श्रृंखला से भी जुड़ा है। जैसे उड़ीसा की चिल्का व चंडीगढ की सुखना झीलों के संरक्षण हेतु बेहतर प्रबन्धन किये गये हैं। उसी प्रकार सांभर झील के संरक्षण हेतु भी उच्च स्तर के प्रयास करने होंगे जैसे–

- झील के चारों ओर दो किमी. का क्षेत्र पर्यावरण के प्रति संवेदनशील है। इसे बफर जोन घोषित किया जाना चाहिए।
- झील में अवैध अतिक्रमण को हटाया जाये। झील में खुदे अवैध बोरवेलो को नष्ट किया जाये। झील मे मीलो फैली भूमिगत बिजली केबलों को हटाया जाये।
- वेटलैंण्ड कंजर्वेशन रूल्स, 2017 के नियमों का पालन किया जाना चाहिए ताकि क्षेत्र मे चल रही गैर कानूनी गतिविधियो को रोका जा सके।
- सांभर झील न तो वन विभाग के पास है और ना ही पशुपालन विभाग के पास। जिस कारण दोनों विभाग एक दूसरे पर अपने दायित्व को स्थानांतरित कर रहे थे और उनके बीच समन्वय का अभाव रहा, इसलिए रेस्क्यू ऑपरेशन में देरी हुई। अतः आवश्यकता है कि सांभर झील के पूरे क्षेत्र को वन भूमि घोषित किया जाये या वन्य जीव संस्थान को सौंपा जाये।

निष्कर्ष :– निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पक्षियों की सुरक्षा हेतु उपरोक्त कदम समय रहते उठा लिये जाते तो यह पक्षी त्रासदी इतना विकराल रूप धारण नहीं करती। जिन नियमों व प्राधिकरणों को इसकी सुरक्षा हेतु बनाया गया है उनको जमीन पर उतारने का वक्त आ गया है। क्योंकि इन्ही प्रयासों से सांभर झील को सहेजकर उसके प्राकृतिक सौन्दर्य व महत्ता को बनाये रखा जा सकता है। यदि हमने अब भी देर की तो जैसे कई पशुओं की प्रजातियाँ इस पृथ्वी से विलोपित हो गई हैं, वैसे ही इन पक्षियों की प्रजातियाँ भी विलोपित हो जायेगीं। पृथ्वी पर पारिस्थितिकी संतुलन बनाये रखने के लिए हमें इन पशु–पक्षियों को बचाना होगा, अन्यथा हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा।

वो निशब्द अतिथि है हमारा।
उसकी रक्षा करना धर्म है हमारा।।

संदर्भः–

1. अस्तिवः प्रवासी पक्षियो की रोचक दुनिया (01) लोकसभा टेलीविजन एन इंडियन पब्लिक ब्रोडकास्ट, यू–ट्यूब चैनल, 16 दिसम्बर 2017
2. दैनिक भास्कर, राजस्थान,17,19, 20,22, 24, 25, 27 नवम्बर, 5 दिसम्बर 2019
3. **www.audubon.org**
4. **www.greentribunal.gov.in**
5. **www.iosparliament.com**
6. **www.neeri.res.in**
7. **www.thingscouldbeworse.org**
8. **www.walkthroughindia.com**

शिक्षा, खेल और पाठ्येतर गतिविधियों में सामंजस्य

डॉ. लीना शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षा मनुष्य की अंतरनिहित क्षमताओं को बाहर लाकर व्यक्ति के व्यक्तित्व को परिष्कृत व परिमार्जित करती है शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक माध्यम से प्राप्त की जाती है औपचारिक शिक्षा का प्रमुख केंद्र विद्यालय है। वर्तमान विद्यालय में शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से बालकों का सर्वांगीण विकास करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में सीखने के लिए एक सर्वांगीण दृष्टिकोण के महत्व की मान्यता बढ़ रही है। शैक्षिक ढांचे में खेल और पाठ्येतर गतिविधियों का एकीकरण छात्रों के बीच समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक माना जा रहा है। शिक्षा, खेल और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देकर, विद्यालय ऐसे बालको को तैयार कर सकते हैं जो न केवल अकादमिक रूप से कुशल हैं बल्कि शारीरिक रूप से भी फिट, सामाजिक रूप से कुशल और रचनात्मक रूप से सक्रिय हैं।

निम्नलिखित बिंदुओं से शिक्षा, खेल और पाठ्यतर गतिविधियों में सामंजस्य स्पष्ट होता है

1. शारीरिक गतिविधि से शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि:- इस धारणा के विपरीत कि शैक्षणिक उत्कृष्टता और खेल परस्पर अनन्य हैं, शोध से पता चलता है कि शारीरिक गतिविधि वास्तव में संज्ञानात्मक कार्य और शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ा सकती है। खेल और शारीरिक व्यायाम में संलग्न होने से बेहतर एकाग्रता, स्मृति प्रतिधारण और समस्या समाधान कौशल को बढ़ावा मिलता है। खेलों को पाठ्यक्रम में शामिल करके, स्कूल सीखने के लिए एक अनुकूल माहौल बना सकते हैं जिससे दिमाग और शरीर दोनों को फायदा होता है।

2. चरित्र निर्माण और नेतृत्व विकास:- खेल और पाठ्येतर गतिविधियाँ चरित्र निर्माण और नेतृत्व विकास के लिए मूल्यवान अवसर प्रदान करती हैं। समूह खेलों में भागीदारी टीम वर्क, संचार, लचीलापन और समय प्रबंधन जैसे आवश्यक जीवन कौशल सिखाती है। छात्र लक्ष्य निर्धारित करना, चुनौतियों पर काबू पाना और एक सामान्य उद्देश्य की दिशा में सहयोगात्मक रूप से काम करना सीखते हैं। ये अनुभव न केवल व्यक्तिगत विकास में योगदान करते हैं बल्कि छात्रों को कक्षा से परे जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता के लिए भी तैयार करते हैं।

3. सामाजिक एकता और सामुदायिक जुड़ाव:- पाठ्येतर गतिविधियाँ विविध पृष्ठभूमि और रुचियों वाले छात्रों को एक साथ लाकर सामाजिक एकीकरण और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देती हैं। खेल टीमों, क्लबों या स्वयंसेवी परियोजनाओं के माध्यम से, छात्रों को साथियों के साथ बातचीत करने, दोस्त बनाने और दूसरों के लिए सहानुभूति और समझ विकसित करने का अवसर मिलता है। ये अनुभव विद्यालय समुदाय के प्रति अपनेपन और जुड़ाव की भावना को बढ़ावा देते है

4. रचनात्मक अभिव्यक्ति और नवीनता:- शिक्षाविद ज्ञान और कौशल की नींव प्रदान करते हैं, पाठ्येतर गतिविधियाँ रचनात्मक अभिव्यक्ति और नवाचार के लिए अवसर प्रदान करती हैं। संगीत, कला, नाटक, या रचनात्मक गतिविधियों के अन्य रूपों के माध्यम से, छात्र अपनी अभिरुचि का पता लगा सकते हैं, अपनी रचनात्मकता को उजागर कर सकते हैं और अपनी अद्वितीय प्रतिभा विकसित कर सकते हैं। ये अनुभव कल्पनाशीलता. आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान क्षमताओं का पोषण करते हैं. जो इस जटिल और गतिशील दुनिया में सफलता के लिए आवश्यक गुण हैं।

5. संतुलन और समग्र कल्याण:- शैक्षणिक, खेल और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच संतुलन हासिल करना समग्र कल्याण को बढ़ावा देने और छात्रों के बीच तनाव को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है। हालाँकि शैक्षणिक उपलब्धि महत्वपूर्ण है, लेकिन यह शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य या व्यक्तिगत हितों की कीमत पर नहीं आनी चाहिए। छात्रों को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने से उन्हें एक सर्वांगीण कौशल समूह विकसित करने, तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और एक स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखने की अनुमति मिलती है।

6. हस्तांतरणीय कौशल और भविष्य की सफलता:- खेल और पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी के माध्यम से प्राप्त कौशल और अनुभव अत्यधिक हस्तांतरणीय हैं और जीवन के विभिन्न पहलुओं और भविष्य के आजीविका पथों पर लागू होते हैं। नियोक्ता ऐसे उम्मीदवारों को अधिक महत्व देते हैं जिनके पास न केवल शैक्षणिक योग्यताएं हैं बल्कि नेतृत्व, टीम वर्क, संचार और अनुकूलन क्षमता सहित विविध प्रकार के कौशल भी हैं। इन कौशलों को शुरू से ही विकसित करके, विद्यालय छात्रों को कॉलेज, कैरियर और उससे आगे की सफलता के लिए तैयार करते हैं।

7. सहायक विद्यालय संस्कृति और बुनियादी ढाँचा:- शिक्षा, खेल और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए एक सहायक स्कूल संस्कृति और बुनियादी ढांचे का निर्माण आवश्यक है। स्कूल छात्रों को उनकी रुचियों का पता लगाने और उनके जुनून को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त संसाधन, सुविधाएं और अवसर प्रदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षक, प्रशिक्षक और सलाहकार छात्रों को उनकी शैक्षणिक और पाठ्येतर गतिविधियों में मार्गदर्शन और समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे उन्हें उनकी पूरी क्षमता को उजागर करने में मदद मिलती है।

निष्कर्षतः छात्रों के बीच समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, खेल और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देना आवश्यक है। खेल और पाठ्येतर गतिविधियों को शैक्षिक ढांचे में एकीकृत करके, स्कूल सीखने, चरित्र निर्माण, सामाजिक एकीकरण, रचनात्मक अभिव्यक्ति और समग्र कल्याण के लिए अनुकूल वातावरण बनाते हैं। साथ में, ये तत्व विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण में योगदान करते हैं जो इस आधुनिक व गतिशील समाज में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और अनुभवों से युक्त हैं।

The Role of Drama and Art in the light of NEP 2020

Dr. Neeru Kalla

Assistant Professor

The National Education Policy (NEP) 2020 represents a revolutionary turn toward comprehensive development in the rapidly changing field of education. This policy's emphasis on incorporating art and drama into schooling is one of its most intriguing features. The NEP seeks to transform education into a more comprehensive, inclusive, and engaging system by acknowledging the importance of creativity and self-expression. Drama and art are essential to the implementation of this new educational paradigm in the following ways:

1. Development of Holistic: The idea of holistic development—a well-rounded strategy that supports the mind, body, and spirit—lays the foundation of NEP 2020. Art and drama play a major role in this worldview. Students gain empathy, communication skills, emotional intelligence, and the ability to confidently express themselves via artistic pursuits. These qualities are crucial for developing oneself as well as for creating a generation that is emotionally knowledgeable and socially conscious.

2. Integrated Education: The integration of subjects is one of the main tactics used by the NEP. The approach promotes cross-disciplinary learning instead of viewing education through compartmentalized disciplines, which makes learning more interesting and relatable. For example, drama may make historical stories come to life, giving pupils a richer understanding of the past. Conversely, by transforming difficult scientific ideas into concrete experiences, the visual arts can make them easier to understand. NEP promotes an interdisciplinary approach that makes learning more vibrant and comprehensive by integrating the arts into every topic.

3. Creativity and Critical Thinking: By its very nature, art fosters imagination and creativity, two qualities that are highly valued in today's society. The NEP emphasizes the need of critical thinking, and the best way to develop this ability is through artistic expression. Students are inspired to think critically, pose insightful queries, and examine difficult concepts from several angles through theater. All forms of art encourage creativity and invention, which are qualities needed to meet the challenges of the twenty-first century.

4. Knowledge of Culture: The conservation and promotion of India's cultural treasures are given top priority in NEP 2020. Students who receive an arts education develop a strong feeling of cultural pride and identity when they are exposed to the diverse range of Indian folk traditions, classical art forms, and regional customs. In addition to improving awareness of their ancestry, this exposure fosters tolerance and respect for other cultures in India and around the world.

5. Equity and Inclusivity: The inclusiveness of art education is among its most potent features. Art has a special power to break down barriers, whether they are socioeconomic, linguistic, or physical. It offers a platform for all students to engage, express themselves, and feel appreciated while accommodating a range of learning demands. In line with NEP's objective of making education more inclusive, arts education cultivates an atmosphere of equality and social consciousness by encouraging empathy and understanding.

6. Employment Possibilities: Students are encouraged to consider jobs in the performing arts, design, media, education, and even art therapy as part of NEP 2020's vocational education focus. Beyond the typical options, these areas provide a variety of exciting and rewarding career opportunities. NEP guarantees that students are not only creatively enhanced but also ready for the constantly growing prospects in the global labor market by providing a strong foundation in artistic fields.

7. Training of Teachers: The readiness of educators is critical to the success of incorporating art and drama into the classroom. In order to increase teachers' ability to successfully integrate art into their lessons, NEP 2020 acknowledges this and advocates for specific teacher training programs. Developing a pedagogy that encourages students' creativity and cultivates a dynamic learning environment requires this professional development.

In conclusion: Drama and art are essential to NEP 2020's revolutionary vision and are not just means of artistic expression. They assist student' in connecting with their feelings, their culture, and their surroundings by promoting pleasant, captivating, and hands-on learning. Arts education will be essential in preparing children for a vibrant, creative, and culturally diverse future as we look to the future. Accordingly, incorporating theater and art into the classroom is not merely a fad; rather, it is a necessary step toward a genuinely life-changing educational experience.

The Power of Positive thinking

Dr. Prabha Singh
Assistant Professor

Positive thinking is a mental and emotional attitude that focuses on the bright side of life and expects positive result. A positive person anticipates happiness, health, success and believe he/she can overcome any obstacle and difficult.

Positive thinking is not accepted by everyone. Some consider, it as nonsense and scott at people who follow it. But there is a growing number of people who accept positive thinking as fact and believe in its effectiveness. It seems that this subject is gaining popularity as evidenced by the many books, lectures and courses about it. To use it in your life you need more than just to be aware of its existence. You need to adopt the attitude of positive thinking in with a positive attitude we experience pleasant and happy feelings. This brings brightness to the eyes, more energy and happiness. Our whole being broadcast, happiness and success. Even our health is affected in a beneficial way. Positive and Negative thinking are contagious. We affect and are affected by the people we meet in one way or other. This happens instinctively and on a subconscious level through words, thought and feeling and through body language. Positive thinking helps with stress management and can even improve your health

Researchers continue to explore the effects of positive thinking and optimism on health. Health benefits that positive thinking may provide include:

- Increased life span
- Lower rates of depression
- Lower levels of distress
- Greater resistance to the common cold
- Better psychological and physical well-being
- Better cardiovascular health and reduced risk of death from cardiovascular disease
- Better coping skills during hardships and times of stress

"Stay positive."
"Don't give in to negativity."
"Think happy thoughts."

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं विज्ञान शिक्षा

डॉ. रागिनी सक्सेना
एसोसिएट प्रोफेसर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विज्ञान शिक्षा को बहु -विषयक, एकीकृत, एवं व्यावहारिक बनाने पर ज़ोर दिया गया है। इसमें तकनीकी एवं नवाचार का एकीकरण, अनुसंधान को प्रोत्साहन एवं बेहतर शिक्षक शिक्षा सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देकर, तकनीकी को एकीकृत कर के और STEM (Science, Technology, Engineering, and Mathematics) विषयों पर ज़ोर देकर, विज्ञान शिक्षा सहित भारतीय शिक्षा को बदलना है। यह एक समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है, जो 21वीं सदी की मांगो के साथ रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल को बढ़ावा देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विज्ञान शिक्षा के महत्वपूर्ण पक्ष -

1. अनुभवात्मक शिक्षा की ओर बदलाव: एनईपी 2020 स्कूली शिक्षा में अनुभवात्मक शिक्षा के महत्व पर जोर देती है, जो रटने की आदत से हटकर अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहा है। यह प्रोजेक्ट, प्रयोगों और वैज्ञानिक अवधारणाओं को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है।

2. प्रौद्योगिकी का एकीकरण: यह नीति सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन संसाधनों सहित शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर ज़ोर देती है। इसमें डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना और छात्रों को 21वीं सदी की तकनीकी प्रगति के लिए तैयार करना शामिल है।

3. STEM शिक्षा को मजबूत करना: NEP 2020 का उद्देश्य प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी स्तरों पर STEM शिक्षा को मजबूत करना है, ताकि नवाचार और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया जा सके। इसमें छात्रों को STEM क्षेत्रों का पता लगाने, शोध परियोजनाओं में शामिल होने और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान करना शामिल है।

4. 21वीं सदी के कौशल पर ध्यान: नीति छात्रों के लिए 21वीं सदी के कौशल विकसित करने की आवश्यकता को पहचानती है, जिसमें आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग और संप्रेषण शामिल हैं। यह कौशल छात्रों के लिए आधुनिक दुनिया की जटिलताओं को समझने और अपने व्यवसाय में सफल होने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

5. शिक्षक प्रशिक्षण और विकास: एनईपी 2020, विज्ञान शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास पर ज़ोर देती है, जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम, नवीनतम शोध और शिक्षण विधियों से जुड़ने के अवसर शामिल हैं। इसका उद्देश्य शिक्षकों को उन कौशल एवं ज्ञान से अवगत करना है जिससे वह नीति की सिफारिशों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित कर सकें और अपने छात्रों के लिए अधिगम अनुभवों की रचना कर सकें।

6. अनुसंधान और वैज्ञानिक प्रवत्ति: यह नीति छात्रों में वैज्ञानिक स्वभाव और आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान शिक्षा में अनुसंधान को प्रोत्साहित करती है। इसमें प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम को बढ़ावा देना, छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना, और वैज्ञानिक अन्वेषण में संलग्न होना शामिल है।

संक्षेप में, एनईपी 2020 का उद्देश्य पारंपरिक, व्याख्यान-आधारित उपागम से हटकर अधिक समग्र, अनुभवात्मक और तकनीकी-संचालित उपागम अपनाकर विज्ञान शिक्षा को बदलना है जो छात्रों को 21वीं सदी की चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार कर सके।

शिक्षण अधिगम का आधार स्तम्भ : अवधान

डॉ. उषा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मुख्य आधार व्यक्ति का चेतनमन है। क्योंकि चेतन मन में किसी विषय वस्तु को आत्मसात् करने की प्रक्रिया ही ज्ञान है इस ज्ञान को प्राप्त करने हेतु किसी वस्तु पर चेतना को केन्द्रित करना होता है इस प्रक्रिया को ही अवधान या ध्यान कहते हैं। इस प्रकार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का आधार स्तम्भ अवधान है।

कभी–कभी अध्यापक यह अनुभव करते हैं कि शिक्षण के दौरान विद्यार्थी अपनी विषय–वस्तु के प्रति एकाग्र नहीं रहते हैं जिसके कारण कक्षा–कक्ष में अव्यवस्था व अनुशानहीनता का वातावरण उत्पन्न होता है जिससे अध्यापक व विद्यार्थियों को ध्यान केन्द्रण में समस्या का अनुभव होने लगता है। इस प्रकार ध्यान विचलन के कारण अध्यापक को अपना शिक्षण कार्य निरर्थक लगने लगता है एवं अन्य विद्यार्थी भी विषय–वस्तु का भली–भांति अधिगम नहीं कर पाते हैं।

अवधान एक ऐच्छिक व स्वतंत्र क्रिया है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति अपनी इच्छा तथा आवश्यकता के अनुसार कुछ खास उद्दीपकों को चुन लेता है और उनके प्रति अनुक्रिया करता है। मान लीजिए किसी दिन रात्रि में बिजली बंद हो जाए और हमें कोई आवश्यक लेख लिखना है जिसके लिए हमें कागज व पेन की आवश्यकता है तो इस स्थिति में हम टार्च की रोशनी की सहायता से अपनी इच्छित वस्तु को खोजने का प्रयास करते हैं यद्यपि कमरे में बहुत सी वस्तुएँ हैं किन्तु उस समय हमारा ध्यान मात्र कागज व पेन को ढूँढने के लिए केन्द्रित हो जाता है और यह प्रयास हम तब तक अनवरत जारी रखते हैं जब तक हम अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त नहीं कर लेते हैं। मनोविज्ञान में इस प्रकार की चयनात्मक प्रक्रिया को अवधान की संज्ञा दी जाती है।

वर्तमान युग की इन भ्रमित परिस्थितियों में व्यक्ति को अवधान केन्द्र में समस्या की अनुभूति हो रही है। जिनका निवारण अपेक्षित व अनिवार्य है। सर्वप्रथम विचारणीय तथ्य यह है कि किन–किन परिस्थितियों हेतु अवधान केन्द्रण की आवश्यक है। मानव मन स्वभाव से ही चंचल व अस्थिर होता है जिसके कारण ध्यान विचलन की समस्या उत्पन्न होती है इस विचलनशीलता को दूर करने तथा एकाग्रता व सक्रियता को बढ़ाने के लिए अवधान की आवश्यकता होती है। इस हेतु विभिन्न पाठ्य सामग्रियों में विद्यार्थियों को अन्तर खोजिए, बेमेल छांटिए व वर्ग पहेली जैसे अभ्यास कार्य दिये जाते हैं। उदाहरणार्थ– व्यक्ति के सक्रिय न रहने पर उसे सत्संग में भी निद्रा आने लगती है इसी लिए सत्संग कराने वाला व्यक्ति विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप जैसे– भजन, रामधुनी, हास्य प्रसंग व ताली बजाना आदि का प्रयोग बीच–बीच में करते रहते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति में आदत निर्माण व अन्वेषण प्रवृति को विकसित करने के लिए भी अवधान की आवश्यकता होती है। जैसे– किसी बच्चे को विद्यालय से घर आते ही खाना खाने की आदत है और किसी दिन उसे घर पर खाना परोसने के लिए कोई नहीं मिलता इस स्थिति में वह बच्चा अपने अवधान को केन्द्रित कर भोज्य वस्तु ढूँढने का प्रयास करता है। व्यक्ति में तत्परता व रूचि उत्पन्न करने हेतु भी अवधान की आवश्यकता होती है। एक महिला जिसे दूरदर्शन पर रात्रि आठ बजे 'शक्ति' धारावाहिक देखने में रूचि है तो वह अपना ध्यान केन्द्रित कर समय प्रबन्धन इस प्रकार करने हेतु तत्पर हो जाती है कि वह आठ बजे पूर्व ही अपने समस्त कार्यों से निवृत हो जाए। अवधान केन्द्रण में एक विशिष्ट तथ्य यह भी है कि व्यक्ति का ध्यान उसी वस्तु पर अधिक केन्द्रित होता है जिसकाउसे प्रशिक्षण प्राप्त है जैसे– पहाड़ी स्थानों के भ्रमण के समय चित्रकार का ध्यान सुन्दर स्थानों की ओर तथा पर्वतारोही का ध्यान पर्वत की ऊँचाई की ओर होता है।

जब हम अवधान केन्द्रण की बात करते हैं तो कुछ ऐसी बाधाएँ भी होती है जो हमारे ध्यान केन्द्रण में व्यवधान उत्पन्न करती है। शोर की तीव्रता, भौतिक संसाधनों का अभाव व शारीरिक मानसिक अस्वस्थ्ता ध्यान केन्द्रण में बाधा उत्पन्न करते हैं। शिक्षक का विषय–वस्तु का अधूरा ज्ञान, अनुपयुक्त विधियों का चयन तथा यथासमय उपयुक्त पुनर्बलन का प्रयोग ना करना भी अवधान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं। बालक के प्रति कठोर व्यवहार व बाल मनोविज्ञान का ज्ञान ना होना भी ध्यान केन्द्रण में बाधा उत्पन्न करते हैं। उद्दीपकों में नवीनता, विषमता, तीव्रता, पुनरावृत्ति व रहस्यात्मक प्रकृति का ना होना भी अवधान केन्द्रण में बाधक तत्व है।

अवधान केन्द्रित करने के लिए इन सभी बाधाओं का निवारण अत्यावश्यक है क्योंकि जब तक व्यक्ति ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाता है तब तक वह किसी भी ज्ञान को आत्मसात करने में अक्षम होता है जिस कार्य के लक्ष्य को प्राप्त करने की उसके मन में जिज्ञासा हो। यदि हम कक्षा कक्ष में अवधान केन्द्रण की बात करें तो शिक्षक का विषय ज्ञान, पाठ की पूर्ण तैयारी, उपयुक्त सहायक सामग्री चयन, यथोचित पुनर्बलन प्रयोग एवं उपयुक्त विधियाँ ध्यान केन्द्रण हेतु उपयोगी हैं। इसी प्रकार बालकों के प्रति प्रेम, शिष्टता, सहयोग व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार भी ध्यान केन्द्रण को आकर्षित करता है। कल्पना कीजिए कि आपके कक्षा कक्ष में एक ही शिक्षक एक ही विधि को प्रयुक्त कर एक ही विषय लगातार 3–4 घण्टे पढ़ाता है तो यह स्थिति सोचने में ही बड़ी भयावह, अरूचिकर व अप्रिय लगती है। यह परिस्थिति नीरसता के साथ ही ध्यान भी विचलित करती है। अतः समय सारणी में भी अवधान केन्द्रण हेतु विषयों की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है कि बालक का ध्यान आकर्षित हो सके। जैसे– प्रातःकालीन समय में गणित, विज्ञान व अंग्रेजी जैसे कठिन विषय, मध्यकालीन कालांशों में भाषा सम्बन्धित विषय व सामाजिक अध्ययन और अन्त के कालांशों में रचनात्मक कार्यों से सम्बन्धित विषयों का समावेश किया जाता है। मनोविज्ञान के अनुसार विषयों की रूचि, योग्यता, क्षमता, अभिवृत्ति व स्तरानुसार शिक्षण विधियों का चयन करना चाहिए, जिससे ध्यान केन्द्रित हो सके। यदि व्यक्ति को किसी कार्य को करने का पूर्व अनुभव होता है तो उसका ध्यान सरलता से केन्द्रित हो जाता है। जिस बालक को पूर्व में साइकिल चलाने का अनुभव है वह मोटर साइकिल चलाना शीघ्र ही सीख जाता है।

अवधान केन्द्रित करने व दीर्घ काल तक बनाए रखने हेतु कुछ ऐसे प्रयास किए जा सकते हैं जिससे कार्य के प्रति ध्यान केन्द्रित हो सके। इसके लिए उद्दीपक का स्वरूप रंगीन होना चाहिए। उद्दीपक का आकार बड़ा व परिवर्तित होना चाहिए। उद्दीपक की स्थिति भीड़ में नेता के समान होनी चाहिए। उद्दीपक अधिक तीव्र, गतिशील व नवीनता से युक्त होना चाहिए। उद्दीपक की पुनरावृत्ति अधिक व अवधि लम्बी होनी चाहिए। उद्दीपक दुर्लभ व विषम होना चाहिए।

उपरोक्त समस्त उपायों को यदि पूर्ण रूपेण क्रियान्वित किया जाए तो व्यक्ति के अवधान केन्द्रण के समयावधि तथा क्षमता दोनों में वृद्धि की जा सकती है और प्राप्त ज्ञान को स्थायित्व प्रदान किया जा सकता है।

महाभारत के द्रोणाचार्य आश्रम का वह प्रसंग हम सभी को स्मरण है जिसमें कौरवों व पाण्डवों को पक्षी की आँख पर लक्ष्य साध कर परीक्षा उत्तीर्ण करना निर्धारित किया गया था। सभी शिष्यों को पक्षी की आँख के अतिरिक्त प्रकृति की अन्य वस्तुएँ भी दिखाई दे रही थी। अतः वे अनुत्तीर्ण हुए मात्र अर्जुन ही पक्षी की आँख पर निशाना साधने में सफल हुए क्योंकि उनका ध्यान अपने लक्ष्य पर केन्द्रित था। इसी प्रकार यदि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को पूर्ण मनोयोग से प्राप्त करने हेतु दृढ़ संकल्प करे और वह अपना अवधान लक्ष्य पर केन्द्रित करे तो वह अर्जुन के समान अपना लक्ष्य भी सफलता पूर्वक साध सकता है और अपनी जीत सुनिश्चित कर सकता है।

The Impact of AI on Language Learning and Communication

Dr. Neha Singh
Assistant Professor

In the modern digital era, technology happens to be an integral element of our daily life, from smartphones to clever households, we are Surrounded by revolutionary methods that simplify and enhance our everyday Pursuit. Technology has also built substantial Strides in schooling. In school and other educational institutions, we can see the use of technology and AI in teaching and for other assignments. From interactive chatbots to personalized language learning apps, AI & reshaping how we learn, use and even think about language.

Those days are gone when language learners relied solely on textbooks and classroom lessons. With the development of technology and new AI-powered platforms like Duolingo, Babbel and Rosetta Stone, makes learning a new language more accessible, efficient and engaging. AI also enables real-time feedback on pronunciation, grammar and Vocabulary usage. For example, Speech recognition technology helps learners Improve their accent and fluency by comparing their speech to native speakers.

In Communication, AI enables real-time translation and transcription, breaking down language barriers in global Conversations. AI fosters more inclusive, efficient and effective Communication across Cultures and languages. Tools that convert speech to text help those with hearing Impairments, while text-to-Speed Technologies Support Visually Impaired individuals.

There are also some virtual assistance and customer services which provide 24/7 assistance. They help in providing answers of questions and other useful information.

Despite its benefits, the use of AI In language learning and Communication isn't without Challenges. It faces Challenges like limited human interaction, biased data, poor content understanding, over dependence on technology and limited personalization. These issues can affect the depth and quality of language acquisition.

Lastly, we can say that AI language learning will make language learning more personalized, Interactive and accessible. Future tools may offer real time feedback, adaptive learning paths and immersive experiences using AR/VR. AI will also improve Cultural understanding and Conversational skills, making language learning more natural and efficient.

शिक्षा का नव युग

रुचिका जैन
असिस्टेंट प्रोफेसर

नवचिंतन की एक किरण है,
राष्ट्रीय शिक्षा नीति का वरण है।

ज्ञान के संग कौशल भी आए,
अब हर छात्र जगमगाए।

न हो रटंत की मजबूरी,
न अंक ही बनें जरुरी।

सोच मिले अब आज़ादी,
हर रुचि को मिले तरजीह भारी।

मातृभाषा में हो आरंभ,
तो ज्ञान का हो सच्चा सम्बंध।

तकनीक, प्रयोग और संवाद,
बनें शिक्षा के मजबूत आधार।

इंटर्नशिप से हो पहचान,
बनें हम सब आत्मनिर्भर इंसान।

केवल नौकरी लक्ष्य न हो,
कुछ नया करने का दृढ़ प्रण हो।

बहुविषयक हो पाठ्यक्रम,
हर विषय में छिपे हैं धर्म।

कला, विज्ञान या वाणिज्य,
अब न कोई कम, न कोई श्रेष्ठ।

शिक्षक बनें मार्गदर्शक,
छात्र हों चिंतन के रचनाकार।

नीति कहे – मत बस पढ़ो,
समझो, सोचो, और बढ़ो।

चलो मिलकर दीप जलाएं,
नई नीति को सफल बनाएं।

भारत बने ज्ञान का देश,
शिक्षा से हो समृद्ध विशेष।

भूतपूर्व छात्राऐं

ए– ख्वाब

देखा एक सुन्दर सा ख्वाब
उसे पूरा करने के लिए
ख्वाब टूट रहे है तो
जोडना है उनको
अब मुश्किलों में भी
दोस्ती निभानी है हमको
सोच भी बदलेगें
ताकत भी बढाएंगे
लडना पडा अपने आप से तो लड़ जाएगे हम
जिस मंजिल के काबिल नहीं
उस मंजिल को ख्वाब बनाएगे हम
मन थका तो थकने नहीं देगें
ऐसे ख्वाब बुनकर
उन्हें पूरा कर जाएगें हम

– हेमलता मीणा

सफर में धूप तो होगी ही

सफर में धूप तो होगी ही जो चल सको तो चलो
सभी है भीड़ में, तुम भी निकल सको तो चलो
इधर–उधर कई मंजिलें हैं, चल सको तो चलो
बने बनाए है सांचे, जो ढाल सको तो चलो
सफर में धूप तो होगी ही जो चल सको तो चलो
किसी के वास्ते कहाँ रास्ते बदलते है
तुम अपने आपको खुद ही बदल सको तो चलो
यहाँ किसी को कोई रास्ता नहीं देता
मुझे गिरा के अगर तुम संभल सको तो चलो
सफर में धूप तो होगी ही जो चल सको तो चलो
यही है जिन्दगी कुछ ख्वाब चन्द उम्मीदें
इन्हीं खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो
कहीं नहीं कोई सूरज, धुआँ–धुआँ है फिज़ा
खुद अपने आप से बाहर निकल सको तो चलो
सफर में धूप तो होगी ही जो चल सको तो चलो

– नेहा सोकल

कश्मीर को गाने निकली हूँ

हिंद देश का प्यारा,
कश्मीर तो हमारा है।।
आज दुश्मन के सीने से लहू निकाल,
कश्मीर को लिखने निकली हूँ।।

घाटी–घाटी पर सैनिक टुकड़ी है,
दुश्मन का पहरा तगड़ा है।।
तोड़ शत्रु का अहम,
मातृभूमि को खुश करने निकली हूँ।।

कश्मीर को गाने निकली हूँ।।
कश्मीर की घाटी कहती है
दुश्मन पर भारी वार करो।।
छीन सीने से दिल

उनका तम संहार करो।।
पावन घाटी हिम की चोटी।।
शिव धरती महिमा गाती।
नदियों के पावन जल से।।

अंगारे बनाने निकली हूँ।
मैं कश्मीर को गाने निकली हूँ।।
मैं नौजवानों को गाने निकली हूँ।
आजादी बरसाने निकली हूँ।।

टूट रही उम्मीद को जोड़।
आजाद कश्मीर बनाने निकली हूँ।।

– रेणु शर्मा

भूतपूर्व छात्राऐं

देश की हालत

क्या लिखूं आज मेरे ही भारत देश के बारे में।
कैसे बताऊँ भारत माँ को उनकी बेटियों की हालत के बारे में।।
इतने संघर्षों के बाद वीरों ने जिस देश को आजाद कराया था ।
हाँ ये भारत देश मेरा तब सोने की चिड़ियाँ कहलाया था ।।
''वसुधैव कुटुम्बकम'' का नारा हम जोरो से लगाते थे।
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता
हम शान से गाते थे।।

वसुधा को अपना परिवार कहने वालो इस घर की चिड़िया को तो छोड़ दिया होता।
अगर उसे पंख नहीं दे सकते थे तो कम से कम जीने का हक तो दिया होता।।
क्या गुजरी होगी उस माँ पर जिसे अपना पेट काट कर उसे पाला होगा।
उसके पिता ने एक–एक रूपया उसके उज्ज्वल भविष्य के लिये संभाला होगा।
दम तोड़ दिया होगा ममता ने जब बेटी को उस हालत में पाया होगा।
कुछ दे तक तो पिता को होश भी ना आया होगा।।

लेकिन खुश होगी आज वो माँ जिसने गर्भ में ही अपनी बेटी का गला दबाया होगा।
कम से कम उन दरिन्दों के हाथों से तो अपनी बेटी को बचाया होगा।
अरे! दुनिया वालो अब तुम किस पर ऊँगली उठाओगे।
उस 6 साल की मासूम बच्ची को भी क्या तुम अब साड़ी पहनाओगे।।
बाहर न जाने देना लड़की को ये तो तुम शान से कहते हो।
लेकिन रेप करने वाले दरिंदों को तुम चुपचाप सहते हो।।
क्या मिला तुम्हे उसे इतनी बेदर्द मौत देकर।
अरे! तुम्हारे घर भी तो बेटी आयेगी, किसी दिन जन्म लेकर।।

मत तोड़ो इन फूलों को अब जिनसे तुम्हारा घर भी महकता है।
खेलने दो ना इन्हें अपने आंगन में इनसे तुम्हारा घर भी तो चहका है।।
नहीं तो, एक दिन तुम्हारा दिल भी रो–रोकर पछतायेगा।
जिस दिन तुम्हारी बहन या बेटी को सड़क पर जिंदा जलाया जाएगा।
सरकार से मेरी यही अर्जी है, देश की सभी बेटियों को न्याय दिलाया जाए।
इन दरिंदों की दरिंदगी पर अब उन्हें फांसी पर लटकाया जाए।।

– तृप्ति जैन

THE RISE OF ARTIFICIAL INTELLIGENCE SHAPING THE FUTURE

- Ekta Sharma
B. A. B.Ed First Year

Artificial Intelligence is transforming multiple sectors offering benefits like increased efficiency and personalisation, however it also present challenges such as job place and ethical concerns understanding and managing these impact is key to using AI.
Artificial intelligence is one of the most transformative technologies of the 21st century. It refers to the simulation of human intelligence in machine theater. Programmed to think, learn, and problem solve through virtual assistants to sell driving care and advanced data analytics. It is rapidly changing how we live, work, and interact with technology.

Application of AI

Healthcare AI assist in diagnosing diseases personalizing treatment plants and managing hospital operations **education** AI power to personalize learning offer virtual Tutorials and Outmate Administrative Tasks.

Business companies use AI for customer service data analysis and supply chain management **entertainment** platform and content based on user behaviour

Transportation self driving car used AI to navigate and make decision on road

Benefits of AI

*efficiency and automation
*accuracy
*decision making
*24 / 7 availability

Challenges

*Job displacement
*Bias and Ethics
*Privacy
*Security risk

Conclusion artificial intelligence is more than just a technological trend. It is a revolutionary force for students, professionals and societies. Understanding AI is essential to adapting and thriving in an increasingly digital world.

My Father

One who wanna see working up before sunrise,
One who wanna see me in small size,
So that he carry me on his shoulders & thighs,
One who sweeps every tear from my eyes,
One who drives the blues away whenever I cries,
One who is the person to give me best advice,
Every moment spend with him, I waana mesmerise,
Whose love is immortal, which means it never dies,
He is the one, my father, my god, my allah,
Or my jesus Christ..........

- Deepanjli Bhardwaj

WHISPERS OF THE CLASSROOM

- Garima Soni
B.Sc.-B.Ed. II Year

In halls once filled with laughter loud,
Where dreams took flight above the crowd,
Each desk, a world, each bell, a song,
Where friendships bloomed & hearts grew strong.

The chalk dust danced on morning air,
While sunlight kissed the teacher's chair.
We carved our names on wooden chairs,
Shared secrets, stories, silent prayers.

The playground echoed joyful cries,
Beneath the ever-changing skies.
From timid steps to bold goodbyes,
We learned to fall, we learned to rise.

Tears were shed in quiet grace,
In hidden corners, a safe space.
And every grade, each fleeting year,
Left marks of joy, of hope, of fear.

Now corridors lie still and wide,
But memories walk by our side.
In every laugh, in every tear,
Our school days linger, ever near.

A chapter closed, yet never gone
In every heart, school life lives on.

The Threads That Time Can't Break

Kiran Choudhary
B.Ed. I Year

In silence, they can hear your pain,
Through storms,
they stand like steady rain.
No blood, yet closer than your kin,
True friends see all that lies within.

They know your laugh,
your hidden tears,
They walk beside through all the years.
When dreams collapse
and skies turn gray,
They hold your hand,
they choose to stay.

A single glance, a word unspoken,
Can heal a heart that's
bruised and broken.
They lift you up when you feel small,
Believe in you when doubts grow tall.

Not bound by time, nor place, nor fate,
Real friends don't leave,
they simply wait.
Through distance, silence, joy, and strife,
They are the colors in your life.

And when the world feels
cold and wide,
You'll find them always by your side.
A treasure deep, no gold could lend
A soul's true mirror:
that's a friend.

CHALLENGES FACED BY THE GIRL CHILD IN ACCESSING EDUCATION

Harshita Sohaniya
B.Ed 1 year

Education is a fundamental right for every child regardless of gender. For girls, gaining access to education remains a significant challenge .While global awareness has increased over the years, systemic barriers continue to prevent many girls from achieving their academic dreams. Understanding these challenges is the first step toward creating a more equitable future.

In many community traditional belief and cultural norms still dictate that a girls peace is in the home rather than in the classroom these out it ideas often priority is domestic responsibilities over education with girls expected to help at homes.

Child marriage remains prevalent in many part of the world .Girls who are married off young are often forced to abandon their education to care for families. Poverty is a major barrier.

When resources are limited families may choose to invest in the education of the sons over daughters, viewing boys as future breadwinners.In some cases, girls are pulled from school to work or support the household financially.

Girls often face harassment and violence while community to school especially in rural or conflict affected areas This discourages families from sending them to school fearing for their safety. In extreme cases schoolsl themselves are not safe spaces due to bullyling or abuse. Long distances to schools, lack of transportation or financial barriers often mean girls cannot beyond primary grades.

Female students may receive less encouragement and reduced the opportunities in higher education and employment.
Girls who are able to get educated will be able to join the work force ,earn livelihoods ,take care of their families. But there are several other issues that need to be addressed and resolved….,such as,,

1. Girl safety .
2. Access to Free Education
3. Hygienic and sanitation at school and rural areas as well as in towns should have provisions for clean toilets and hygienic waste disposal system for girls .
4. The academic curriculum:The curriculum offered should be created keeping in mind at most of these girls are likely to either married off or allowed to work in selective professions.
5. Freedom from household chores.
   Effortsto address these issues include legal measures like the prohibition of Child Marriage Act and the POCSO act,

Furthermore, initiative like" Beti Bachao Beti Padhao" aim to prevent female foeticide and empower them to live with dignity.

"STAGES OF HUMAN LIFE"

Preeti Jha
B.Ed 1 st year

Life is a journey that we all embark upon
From the moment we are born , untill we are gone
Each stage of life bring it own unique charm
And with each passing year , we learn to disarm

Childhood is the of wonder and delight.
When everything is new and so bright.
We learn to crawl , walk and run
And explore the world one by one.

Adolescence is the time of discovery and change
As we navigate the turbulent waters of adolescence
We learn to form our own opinion and beliefs
And forge our own path, despite the grief.

Adulthood is the time of responsibility and growth
As we take on the mantle of life' s greatoath
We strive to build a career, a family and a home
And learn to navigate life's ebb and flow.

Middle age is the time reflection and reassessment
As we take stock of our lives and make adjustment
We learn to let go of what no longer savour us
And focus on what truly deserves us.

Old age is a time of wisdom and grace.
As we look back on our life's long race.
We cherish the memories of our youth.
And embrace the present with courage and youth.

Each stage of life is a precious gift
Full of challenges, joys and shifts
May we embrace them all with open hearts
And savor each moments , before it departs.

कलम और कैदी

मोलिना मीणा
बी.ए.बी.एड.चतुर्थ वर्ष

सुभाष चंद्र बोस जब जेल में थे, तब उनके साथ एक मुस्लिम कैदी भी बंद था, जो अनपढ़ था। वह अक्सर चुपचाप बोस को देखता रहता। एक दिन उसने हिम्मत करके कहा,

" बाबूजी आप दिन भर कुछ ना कुछ लिखते रहते हैं... क्या आप मुझे मेरा नाम लिखना सिखा सकते हैं?"

बोस मुस्कुराए और बोले, "जरूर लेकिन एक शर्त पर तुम रोज देश के बारे में मुझे एक सवाल पूछोगे और मैं जवाब दूंगा"।

वह कैदी राजी हो गया बॉस ने उसे धीरे-धीरे अक्षर सिखाए "अ", "आ", "इ" ..... साथ ही उसे भारत का इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम और देशभक्ति का भाव भी सिखाया। कुछ ही महीना में वह कैदी न सिर्फ अपना नाम लिखना सीख गया बल्कि राष्ट्रभक्ति से भर गया। जेल से निकलने के बाद वह गांव लौटकर बच्चों को पढ़ाने लगा - "सुभाष स्कूल" नाम से।

शिक्षा :- एक सच्चा नेता वहां भी प्रेरणा देता है, जहां उम्मीद की रोशनी कम होती है। शिक्षा और विचार की शक्ति बंद दीवारों में भी क्रांति का बीज बो सकती है।

"अपने पहले वर्ष के मुझे एक पत्र"

चेष्टा वर्मा
बी.ए.-बी.एड. चतुर्थ वर्ष

कभी-कभी गुजरे हुए दिनों को समझने के लिए, लौटकर देखना जरूरी होता है।

प्रिय प्रथम वर्ष वाली "मैं",जब तुम इस कॉलेज की ऊंची दीवारों को पार कर पहली बार कैंपस में कदम रख रहे थे, तुम्हारी आंखों में सपने थे - कुछ पूरे करने के, कुछ समझने के और कुछ खोने के डर के साथ। आज, जब मैं वही दुनिया छोड़ने वाली हूं, तो सोचा तुम्हें कुछ बातें बताई जाए।

सबसे पहले डरना बंद करो। क्लास में उत्तर ना दे पाने का डर, नये दोस्त ना बना पाने का डर, अंग्रेजी में गलत बोल जाने का डर और यह सब इतने बड़े डर नहीं है जितना तुमने सोचे थे। हर कोई नया है, तुम अकेले नहीं हो। दूसरी बात, अंक जरूरी है, लेकिन ज्यादा जरूरी है सीखना। हर सेमेस्टर में अच्छे नंबरों के पीछे भागते हुए तुम यह भूल जाओगे कि ज्ञान किताबों के बाहर भी होता है - सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, डिबेट में, लाइब्रेरी की खामोशी में, दोस्ती की गहराइयों में।

और हां, हर चीज एक प्रतियोगिता नहीं है। कॉलेज कोई रेस नहीं है जैसे जीतना है। यह एक यात्रा है, जहां हर पड़ाव का आनंद लेना है। अगर कोई और तुमसे आगे है तो घबराओ मत- तुम अपनी कहानी खुद लिख रहे हो। तुम बहुत बार टूटोगे, रोओगे, खुद को कमतर समझोगे लेकिन आखिर में बस यही कहना है -"एक बार और कोशिश कर, सब ठीक हो जाएगा"। तुम खुद को खोज लोगे। वो उलझने, अकेलापन, असफलताएं सब तुम्हें बेहतर बनाएंगे।

तो मुस्कुराते रहो। गिरने से डरो मत। पूछो, सीखो और हर दिन को जियो। क्योंकि जाने के बाद यही लम्हे याद आएंगे।

महिला सशक्तिकरण

Reena Chaudhary
B.Sc-B.Ed. 1st year

महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को हर क्षेत्र में समान अधिकार और अवसर देना है । सरकार ने इसके लिए कई योजनाएँ चलाई है , लेकिन समाज की सोच बदलना भी उतना ही जरूरी है। जब महिलाएँ आत्मनिर्भर होंगी, तभी देश में (सच्ची उन्नति संभव है।

मुख्य बिन्दु:- सशक्तिकरण आत्मनिर्भर, कुरीतियाँ, लैगिक समानता। महिला सशक्तिकरण आज के समाज की सबसे महत्वपूर्ण जरूरतों में से एक है । लंबे समय तक महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कमजोर समझा गया, उनके अधिकार छीने गए और उन्हे घर की चारदीवारी में सीमित रखा गया। लेकिन अब समय बदल रहा है। महिलाएँ न केवल घर चला रही है बल्कि देश, समाज और उद्योगों में भी अहम भूमिका निभा रही है। महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाना, उन्हें शिक्षा, रोजगार और समान, अधिकारों से सशक्त करना हैं।

महिला सशक्तिकरण का मतलब है - महिलाओं को इस योग्य बनाना कि वे अपने जीवन के हर छोटे-बड़े फैसले खुद ले सकें। यह केवल आर्थिक आजादी तक सीमित नहीं है बल्कि इसमे सामाजिक, मानसिक, राजनीतिक और कानूनी सशक्तिकरण भी शामिल है। जब महिला शिक्षित और आत्मनिर्भर होती है, तो वह न सिर्फ खुद का बल्कि पूरे परिवार और समाज का भी उत्थान करती है।

वर्तमान में महिलाओं की स्थिति पहले से बेहतर जरूर हुई है, लेकिन अब भी सुधार की आवश्यकता है: आज महिलाएं डॉक्टर , इंजीनियर, नेता पायलट और सैनिक बन रहीं हैं। लेकिन अब भी कई ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ अशिक्षा, बाल-विवाह, घरेलू हिंसा और दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों का सामना कर रही है। महिलाओं को आज भी समान वेतन, कार्यस्थल पर सुरक्षा और निर्णय लेने का पूरा अधिकार नही मिला है।

भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ और कानून लागू किए है **जैसे- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ-बालिकाओं की शिक्षा और जन्म दर को बढ़ावा देने के लिए, सुकन्या समृध्दि योजना- बालिकाओं के लिए बचत योजना, उज्जवला योजना - महिलाओ को मुफ्त गैस कनेक्शन देकर स्वास्थ्य और समय की सुरक्षा, महिला हेल्पलाइन (1091) - महिलाओं की सुरक्षा के लिए 24x7 सहायता, महिला आरक्षण बिल, - राजनीति में महिलाओं को भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए।**

लड़कियों को बचपन से ही शिक्षा और आत्मरक्षा की ट्रेनिंग दी जाए। समाज में जागरूकता फैलाई जाए कि महिलाएं बोझ नही, बल्कि शक्ति है। कार्यस्थलों पर महिला सुरक्षा और समान वेतन सुनिश्चित किया जाए। महिलाओं के लिए स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार और उद्यमिता के अवसर बढ़ाए जाए। पुरुषों को भी लैंगिक समानता के लिए जागरूक किया जाए।

महिला सशक्तिकरण कोई विकल्प नहीं, बाल्कि समाज की सच्ची प्रगति के लिए आवश्यक कदम है। जब महिलाएँ सशक्त होगी, तभी वे समाज के विकास मे बराबरी से योगदान देगी। एक-शिक्षित, आत्मनिर्भर और जागरूक महिला पूरे परिवार, समाज और देश को नई दिशा दे सकती है। अतः हमें सभी स्तरों पर महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता देनी चाहिए

ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य लाभ और महत्व

Anshima Sain
B. Ed

सारांश:- ध्यान एक प्राचीन अभ्यास है जो

मानसिक स्वास्थ्य के लिये अत्यधिक लाभकारी है। यह तनाव, चिंता और अवसाद नियमित ध्यास अभ्यास से सुधार कर सकता है और व्यक्तियों को अपने जीवन को आधर सकारात्मक और प्रभावी ढंग से जीने में मदद मिल सकती है।

keywords- ध्यान, मानसिक स्वास्थ्य, तनाव चिंता, अवसार आत्याजागरुकता भावनात्मक सतुलन, एकाग्रता गाइड फुलनेल मेडिटेगन ध्यान एक प्राचीन अभ्यास है जो स्वास्थ्य के लिये अत्यधिक लाभकारी है। यह मानसिक स्पष्टता और एकाग्रता बढाती है; भावनात्मक संतुलन बना रहता है; आत्म-जागरूकता बढ़ती है।

ध्यान क्या है? ध्यान लगाना व्यायाम का एकरूप है जिसमें मन को ध्यान केन्द्रित करना आराम करने के लिये सिखाया जाता है । इसमें आमतौर पर के विचारो सवेदनाओ या साक्षी का अवलोकन है। ध्यान कैसे शुरु करें ।-

एक शांत और आरामदायक स्थान कुरु अपनी आँखे बंद करें और गहरी सांस ले अपने मन को शांत करने के लिये स्थान तकनीकी का का उपयोग करें। नियमित सुभ्यास करें और धीर-2 अभ्यास को बढ़ाये। अपने ध्यान एक सरल सरल और प्रभावी तरीका है जो मानसिक मे में सुधार कर सकता है इसे अपने दैनिक जीवन में शामिल करके आप अपने मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकत है और अपने जीवन अधिक सकारात्म सकारात्मक और प्रभावी ढंग से जीने में मदद करता है

ध्यान के लाभ: - तनाव में कमी:- ध्यान तकनीक जैसे कि माइंड फुलनेस मेडिटेशन, तनाव के स्तर को कम करने में मदद करती है।

भावनात्मक संतुलन:- नियमित ध्यान अभ्यास से व्यक्तियों को अधिक भावनात्मक जागरुकता और विनियमन कौशल, विकसित करने में मदद मिलती है।

बेहतर एकाग्रता और फोकस :- ध्यान का अभ्यास कसा जिसमें ध्यान केंन्द्रित किया जाता है। कार्य को बढ़ा सकता है और सज्ञानात्मक एकाग्रता और फोकस में सुधार ला सकता आता जागरुकता में

वृद्धि :- ध्यान खुद का निरिक्षण और खुद को जानने और देखने के तरीको को को प्रोत्साहित करता है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिये फायदेमंद है ध्यान मानसिक स्वास्थ्य के लिये एक शाक्तशाली औजार है। यह न केवल तनाव और चिंता को कम करता है; बल्कि भावनात्मक संतुलन और आत्म-जागरूकता कौ भी बढावा देता है नियमित ध्यान अभ्यास से मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है और व्यक्तियो को अपने जीवन को अधिक सकारात्मक को प्रभावी ढंग से जीने मे मदद मिल सकती है

निष्कर्ष:- ध्यान मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक शक्तिशाली औजार है। नियमित ध्यान करने से व्यक्ति ऊर्जावान व नकारात्मक विचारों से दूर रहता है। उसका दीन भर मानसिक विचार सकारात्मक रहते है इसलिए ध्यान को अपने दैनिक जीवन में शामिल करना एक अच्छा विचार हो सकता है।

पहलगाम में आंतकी हमला: राष्ट्रीय सुरक्षा पर एक गंभीर चुनौती

अंजू चौधरी

(बी.एस.सी.-बी.एड. प्रथम वर्ष)

22-April. 2025 का वो दिन जिसने भारत को ही नही बल्कि मानवता की समसरता, विवेक को सकझोर दिया। पहलगाम में हुआ आतंकी हमला सिर्फ भारत की किसी एक कौम पर नही ,अपितु धर्म निरपेक्ष देश भारत पर हुआ है

बात उस वक्त की है जब एक तरफ अमेरिका के उप राष्ट्रपति भारत में आए हुए थे और दूसरी तरफ , मानव शून्य आंतकवादियों ने मासूम सैलानियों को मार डाला । आंतकवादियों ने पर्यटको से धर्म पूछा , कलमा पढवाई और नही पढ़ने पर मौत के घाट उतार दिया क्यों ?

क्योंकि उनका उद्देश्य किसी विशेष धर्म की रक्षा करना नही ,अपितु भारत की एकता, सम्प्रभुता पर आघात पहुंचाना था। धर्म के नाम पर हमला पहली बार नही ये सिलसिला 45 वर्षों से शुरू है जिसमे पंजाब कस्बे के कपूरथला (1983); कश्मीरी पंडितो की हत्या; मंदिरों, जुलुसो, धार्मिक स्थलों को चुनकर उन पर हमला करना शामिल है। जिन हमलों का उद्देश्य भारत में अपने ही अल्पसंख्यकों के खिलाफ गुस्सा पैदा करवाना और उन्हे निशाना बनाना है । जिससे असीम मुनीर का दो कोम वाला सिद्धांत पुरा हो सकता हैं।

आखिरकार हमला किया किसने इसमें दोषी किसको ठहराया जाए - ISI को पाकिस्तानी सेना को या फिर सरकार की ढील को ? इस बार हमले के बाद पाकिस्तान सहमा है और जिस कारणवश हमले की जिम्मेदारी खुद लेने से डर रहा है क्योंकि इस बार सिर्फ भारत ही नहीं भारत के समर्थक देश और हमेशा से पाकिस्तान को आधार सहारा देने वाला देश (चीन) भी इस घटना पर अपना शोक जता रहा है व इस घटना को निंदनीय बता रहा है पर पाकिस्तान , ISI की तो हमेशा से आदत रही है झूठ बोलने की। क्या सिर्फ कह देने मात्र से ही वह इस घटना से पीछे नहीं हट सकता।

संदेह तो पुरा पाकिस्तान, ISI पर ही है। हमला हुआ परतु किसने इसमें कश्मीर की सुरक्षा में कोताई बरती जिससे इतनी बडी संख्या में आने वाले पर्यटको के स्थान पर भी सुरक्षा नाम मात्र तक की भी नहीं थी ?

कमी सिर्फ आंतकवादियों की नहीं बल्कि कश्मीर की सुरक्षा में भी थी जिसने इतने बड़े हादसे को जन्म दिया। पहलगाम एक ऐसा स्थान जिसमे हर 25 लाख में से 23 लाख पर्यटक आते है तो फिर ऐसे स्थान पर भी सुरक्षा का अभाव सरकार की शिथिलता एवम् अल्पता को साफ-साफ बयां करता है।

इस घटना के बाद एवं लगातार हो रहे जम्मू कश्मीर मे आतंकी मुठभेड के बाद हम कश्मीर के हालातो को सामान्य नहीं बता सकते । हमला हुआ परन्तु इसका जवाब यदि प्रभावशील तरीके से दिया जाए तो शायद मरने वाले पर्यटको के प्रियजनो एवम् सम्पूर्ण देश के दर्द में थोडी कमी आए। सरकार का तुरंत बिना छान बीन किए एक्शन न लेना उसकी समझदारी को बयां करता है क्योंकि

हमे सिर्फ इस हमले का जवाब नहीं देना बाकि भविष्य होने वाली आंतकी गतिविधियों पर भी रोक लगाना है

कश्मीर में धारा 370 हटने के बाद हालात सामान्य तो नहीं हुए परंतु पहले से बेहतर है।

वहाँ के लोगो का रोजगार अधिकाशत: पर्यटन पर निर्भर है। और इस घटना से पर्यटन पर भारी मात्रा में बुरा प्रभाव पडा है। परन्तु एक खुशी की बात ये भी है कि इस बार भारत के साथ कश्मीर ने भी आतंकी गतिविधि का विरोध पाकिस्तान के खिलाफ किया जो उनका देश एवं सम्पूर्ण धर्मनिरपेक्ष राज्य के प्रति प्रेम , देशभक्ति को दर्शाता है।

इसमे सभी को अपनी तरफ से सहयोग करना होगा। सरकार को आंतकवादियों व उसकी मूल जड़ो को करारा जवाब एवम् देशवासियो को पाकिस्तान का मकसद पुरा न होने देने का जो था , कि भारत में बहुसंख्यकों पर दबाव डालकर उनके सब्र की परीक्षा लेना कि वह अल्पसंख्यकों का विरोध करे जिससे पाकिस्तान का देश की एकता को तोडने का मकसद पुरा हो। परन्तु ये तो निशचित है कि भारत के लोग पाकिस्तान के दो कॉम का सिद्धांत के मकसद कभी पुरा नहीं होने देंगे

जय भारत!

बेरोजगारी: एक विकराल समस्या

Princi Kumawat
B.Ed I Year

विश्व के कई देश बेरोजगारी की समस्या मे परेशान है जिसमे हमारा देश भारत भी है । हमने प्रगति की है परंतु बेरोज़गारी की स्थिति बढ़ी है कम होने के बजाय वहीं है। हमारी सरकारों द्वारा कई सुधार किये गये है परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि बढ़ती जनसंख्या के आगे प्रयास कमतर ही प्रतीत होते है। इसलिए हमारे देश के युवाओं को उबारने के लिए और अधिक प्रयासों की आवश्यता है।

वर्तमान में हमारा देश भारत एक प्रगतिशील राष्ट्र है, जिसने आजादी से लेकर वर्तमान तक अपनी स्थिति में काफी सुधार किया है तथा अभी भी एक वैश्विक ताकत बनने को और बढ रहा है। हमारी सरकारों ने आजादी से लेकर अब तक हर क्षेत्र में है - कृषि, शिक्षा, इन्फ्रास्ट्रक्चर, विज्ञान शोध, स्वस्थय सेवाएं, कानून व्यवस्था में प्रगति की है। डिजिटलाइजेश हर क्षेत्र परन्तु इतना सब करने के बाद भी हमारे देश में बेरोजगारी एक विकराल समस्या बनी हुई है जिससे हमारे देश का युवा वर्ग सबसे अधिक ग्रस्त है।

जहां आजादी के समय हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या कृषिगत गतिविधियों में शामिल थी व अशिक्षित थी जिसे देश के पिछड़े होने का कारण समझा जाता था, वहीं अब हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या शिक्षित है कृषि पर निर्भरता कम हुई है परंतु अब हमारे देश के लिए बेरोजगारी एक भयंकर समस्या बनी हुई है।

THE TRANSFORMATIVE ROLE OF CAREER COUNSELORS NAVIGATING PATHS TO SUCCESS

Dr. NEELAM YADAV
Assistant Professor

Education serves as the bedrock upon which individuals construct their career aspirations and pathways. It not only imparts essential knowledge but also fosters critical skills and perspectives vital for navigating the complexities of the professional world. From the early years of schooling to the pursuit of higher education, each educational milestone offers opportunities for self-discovery, skill development, and career exploration. Through academic pursuits, extracurricular activities, and practical experiences, individuals uncover their passions, hone their talents, and lay the groundwork for future career endeavors. In essence, education acts as the springboard for career exploration, equipping individuals with the tools and insights needed to embark on the journey of realizing their professional aspirations and making meaningful contributions to society.

As individuals progress through their educational journey, they inevitably encounter the prospect of entering the workforce and embarking on a career path. A career represents more than just a job; it encompasses one's aspirations, passions, and contributions to society. It is the culmination of education, experience, and personal values, guiding individuals towards fulfilling and meaningful professional pursuits. Career exploration involves navigating a vast landscape of possibilities, from traditional vocations to emerging industries, and requires careful consideration of one's skills, interests, and goals. Just as education lays the foundation for career exploration, the pursuit of a career is the culmination of the knowledge, skills, & experiences gained through education. Thus, as individuals transition from education to career, they embark on a new chapter of self-discovery & growth, charting a course towards realizing their professional aspirations and making a meaningful impact in the world.

Career counseling is a personalized and supportive process designed to assist individuals in exploring and navigating their educational and professional pathways. It involves working with a trained career counselor who provides guidance, resources, and expertise to help individuals make informed decisions about their careers. Career counseling encompasses a range of activities, including self-assessment, exploration of career options, setting goals, developing action plans, and overcoming obstacles. Through individualized counseling sessions, career assessments, and exploration exercises, career counselors help individuals clarify their interests, strengths, and values, and align them with suitable educational and career opportunities. Ultimately, the goal of career counseling is to empower individuals to make fulfilling and satisfying career choices that align with their personal and professional aspirations.

Career counseling is typically provided by trained professionals known as career counselors or career advisors. These individuals often have backgrounds in counseling, psychology, education, or related fields and have received specialized training in career development theory, assessment techniques, and counseling skills. Career counselors work in various settings, including schools, colleges and universities, career centers, private practices, and government agencies. They offer individualized guidance and support to help individuals explore their interests, strengths, and aspirations, and make informed decisions about their educational and career paths. Through one-on-one counseling sessions, career assessments, workshops, and other resources, career counselors assist individuals in identifying and pursuing careers that align with their values, skills, and goals.

Career counselors serve as invaluable guides in the journey of career exploration, offering personalized support and expertise to individuals at every stage of their professional development. Through tailored counseling sessions, career assessments, and exploration exercises, they help individuals uncover their interests, strengths, and values, and identify suitable career paths. By empowering individuals to make informed decisions and navigate the complexities of the job market, career counselors play a pivotal role in facilitating successful transitions from education to employment.

Moreover, career counselors advocate for equity and inclusivity, striving to ensure that all individuals have equal access to opportunities and resources to pursue their educational and career aspirations. Their dedication to promoting diversity and fairness in the workforce contributes to creating a more equitable society where everyone has the chance to achieve their full potential. In summary, the significance of career counselors lies in their commitment to guiding individuals towards fulfilling and rewarding career paths while fostering inclusivity and opportunity for all.

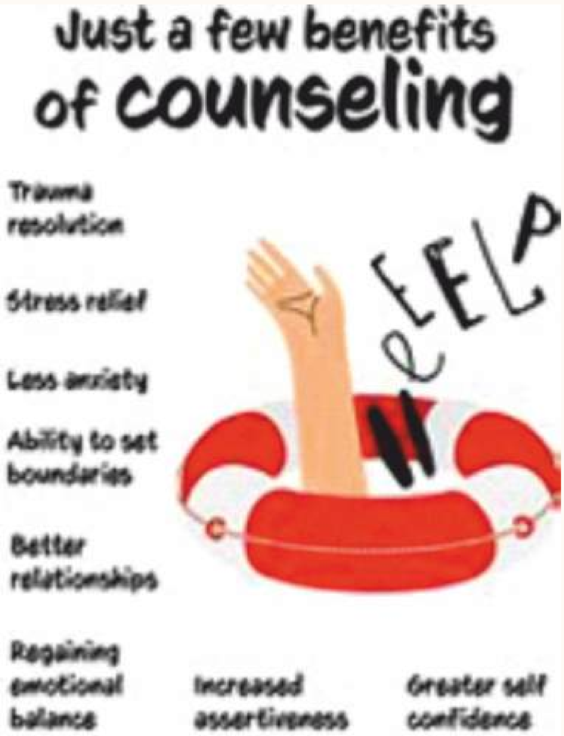

Career counselors serve as indispensable guides, offering personalized support and expertise to individuals embarking on their educational and professional journeys. Their role encompasses assisting individuals in exploring their interests, strengths, and values, identifying suitable career paths, and providing practical assistance in areas such as resume writing and job search strategies. Moreover, career counselors advocate for equity and inclusion, working to dismantle barriers and create opportunities for all individuals to pursue their educational and career aspirations. In essence, the role of career counselors is to empower individuals to make informed decisions about their careers, navigate the job market successfully, and pursue paths that lead to personal and professional fulfillment.

Career counselors offer invaluable benefits to individuals navigating their educational and professional paths.

Firstly, they provide personalized support tailored to individuals' unique interests, strengths, and aspirations, helping them make informed decisions about their careers. By offering insights into various career paths and industries, career counselors broaden horizons and encourage exploration beyond familiar options. Additionally, they offer practical assistance in areas such as resume writing, interview preparation, and job search strategies, equipping individuals with the skills and confidence needed to navigate the job market successfully.

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कैरियर संबंधी सूचनाऐं

शालिनी चावला
असिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालक के समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र- संपन्न नागरिक बनकर समाज के सर्वांगीण उन्नति में सहयोग कर सकता है।

शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है। जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है और सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने के योग्य बनाती है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उसके विचार एवं व्यवहार में समाज के लिये हितकर परिवर्तन करती है।

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के विभिन्न चरणों में करियर के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ते हैं और करियर का विकास जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है।इसलिए सही करियर मार्ग खोजने में चुनौतियों का सामना करने वाले प्रत्येक विद्यार्थी के लिए करियर संबंधी सूचनाओं की जानकारी होना अति आवश्यक है।

मार्गदर्शन के प्रारंभ में ही कैरियर संबंधी जानकारी का मार्गदर्शन एवं परामर्श में महत्वपूर्ण स्थान रहा है यह प्रत्येक मार्गदर्शन कार्यक्रम का अभिन्न अंग है ।कैरियर विषयक जानकारी के तीन घटक होते हैं -

1. **व्यावसायिक सूचनाएं** - जिसमें व्यवसाय उद्योगों तथा शिक्षक व प्रशिक्षण सुविधाओं के विषय में भी तथ्य होते हैं क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से व्यावसायिक चरणों से संबंधित है।

2. **शैक्षिक सूचनाओं** - शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर उपलब्ध शिक्षा व प्रशिक्षण के अवसर, पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामी क्रियाएं आदि इसके अंतर्गत आती हैं

3. **व्यक्तिगत सामाजिक सूचनाएं** - इसमें वे सभी सूचनाओं शामिल की जाती हैं जो की शिक्षार्थियों में स्वयं एवं दूसरों की समझ को प्रोत्साहित करती हैं यह विद्यार्थियों को चयन प्रक्रिया और जीवन में समायोजन रखने में मदद करती हैं।

कैरियर सूचनाऐं उन विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है जो बुद्धिमत्तापूर्ण करियर के द्वारा अपने जीवन में अधिकतम प्राप्त करना चाहते हैं।

करियर का चयन करना- करियर का चुनाव किसी भी व्यक्ति के द्वारा स्वयं के लिए किया जाने वाला महत्वपूर्ण निर्णय होता है ।इस महत्वपूर्ण निर्णय को लेने हेतु उसे सही विश्वसनीय एवं

उपयोगी जानकारी की आवश्यकता होती है। इसका प्रमुख कारण वर्तमान में बृहद एवं विभिन्न शैक्षिक एवं व्यवसायिक मौको की उपलब्धता भी है।

करोड़ो विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु विषयों , संस्थाओं तथा करियर का चुनाव करना होता है।यदि उन्हें कैरियर संबंधी जानकारी दी जाएगी तो वह ज्यादा सही करियर का चयन करने में सक्षम हो सकेंगे ।विद्यार्थी अनुकूल व्यवसाय को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे जिससे उनकी सफलता एवं चयनित करियर में संतुष्टि के स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा । अतः विद्यालय द्वारा कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम, जो विद्यार्थियों को शिक्षा, प्रशिक्षण सुविधाओं एवं प्लेसमेंट अवसर की जानकारी देते हैं,विद्यार्थियों एवं समाज को सच्ची सेवा प्रदान करते हैं।

विद्यालय में विभिन्न स्तरों पर कैरियर संबंधी जानकारी-

1.प्राथमिक स्तर- इस स्तर में 6 से 11 वर्ष की आयु के बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसमें बच्चों को सामान्य रूप से व्यवसायों की विशाल विविधता से परिचित कराया जाए ।इन विद्यार्थियों को निम्न बातें बताई जाए -जैसे विभिन्न व्यवसायों की जानकारी ,व्यवसाय का लोगों के जीवन पर प्रभाव ,व्यवसाय कार्य हेतु आवश्यक व्यक्तित्व गुण।

2.उच्च प्राथमिक स्तर-इसमें 11 से 13 वर्ष के बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं। मनोवैज्ञानिक और भावात्मक रूप से यह विद्यार्थी परिपक्व होते हैं। इन्हें करियर के प्रति सचेत करने की आवश्यकता होती है इनमें कुछ पढ़ाई करना चाहते हैं एवं कुछ अल्पकालीन प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं ।उनमें जो प्रशिक्षण लेना चाहते हैं। उन्हें अवसर उपलब्ध कराया जाए कैरियर संबंधी जानकारी द्वारा विद्यार्थियों को इस बात की समझ आती है की पढ़ाई में जो भी विषय सीखे जाते हैं वे विभिन्न व्यवसायों में आवश्यक कौशलों के विकास में हमारी मदद करते है।

3 माध्यमिक स्तर- 14 से 16 वर्ष के बच्चे माध्यमिक स्तर में शिक्षा ग्रहण करते हैं ।यह 10 वर्ष की सामान्य शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं ।इन विद्यार्थियों को उच्च माध्यमिक शिक्षा हेतु उपयुक्त कोर्सेज का चयन या कम अवधि के तकनीकी और व्यवसाय के चयन करने में मदद करनी चाहिए

जो कि निम्न प्रकार हो सकती है -

मानविकी विषय लेने पर -डॉक्टर,पत्रकारिता शिक्षण, एच आर,मीडिया ,लेखन ,राजनीति क्षेत्र में कैरियर बना सकते हैं ।

विज्ञान विषय लेने पर -इंजीनियरिंग ,चिकित्सा ,विज्ञान शोध एनडीए ,आर्मी टेक्निकल पद ,बीटेक आदि क्षेत्रों में कैरियर बना सकते हैं ।

वाणिज्य विषय लेने पर -C.A,C.S.,M.B.A,L.L.B अर्थशास्त्री, सर्टिफाइड फाइनेंशियल प्लानर आदि क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं।

इन विद्यार्थियों को कैरियर संबंधी जानकारी देने के लिए प्रभावशाली तरीके का चुनाव किया

जाना चाहिए। विद्यार्थी अपनी रुचि अनुसार आईटीआई कोर्स, वोकेशनल कोर्स कर सकते हैं।

4. <u>उच्च माध्यमिक स्तर पर</u>-यह विद्यार्थी 16 से 18 वर्ष के होते हैंउनके पास उच्च माध्यमिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद निम्न विकल्प होते हैं

- सामान्य विश्वविद्यालय शिक्षा में
- प्रवेश व्यावसायिक कोर्स में
- प्रवेश सीधे कार्य संसार में प्रवेश

उपरोक्त विद्यार्थी 12वीं कक्षा के बाद विभिन्न प्रकार की सरकारी प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करके सरकारी नौकरी में चयन ले सकते हैं ।साथ ही स्नातक स्तर के विद्यार्थी यूपीएससी, R.A.S. आदि की तैयारी करके सरकारी उच्च पद को प्राप्त भी कर सकते हैं।

<u>करियर काउंसलर</u>-उपरोक्त कैरियर संबंधी जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान करने हेतु करियर काउंसलर का सहयोग लिया जा सकता है करियर काउंसलर में निम्न आवश्यक दक्षताएं होनी चाहिए-

1. विषय का पूर्ण ज्ञान
2. कार्य की दुनिया के बारे में नवीनतम जानकारियां रखना
3. विद्यार्थियों में सूचनाओं के प्रसार हेतु विभिन्न सामूहिक तरीकों का ज्ञान रखना
3. प्रकाशित जानकारी के स्रोत तथा मूल स्रोतों में सूचनाओं को एकत्रित करने के तरीकों के बारे में जानना
4. काउंसलिंग साक्षात्कारों में कैरियर संबंधी विषयों में विद्यार्थियों की मदद करना
5. कैरियर सूचना सेवा का प्रभावशाली तरीके से निर्माण एवं व्यवस्था करना एवं गुणवत्ता प्रदान करना
6. संप्रेषण एवं व्यवहार कुशल होना

<u>निष्कर्ष-</u> भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में विद्यार्थियों का भविष्य ही राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनेगा इसीलिए विद्यार्थियों को सही समय पर करियर के बारे में जानकारी देने से उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। करियर की जानकारी एक ऐसी प्रक्रिया है जो आरंभिक बाल्यावस्था से ही प्रारंभ होती है और व्यस्क जीवन तक जारी रहती है।कॅरियर संबंधी सूचनाऐं विद्यार्थियों को परिवर्तित संसार ,समाज एवं उनकी व्यक्तिगत आकांक्षाओं के साथ समायोजन करने में सहायता करती है।

राष्ट्र के विकास में राजनीति के माध्यम से विद्यार्थियों का योगदान

डॉ. सोनू गौड़
असिस्टेंट प्रोफेसर

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस समय में विद्यार्थी जिन शिक्षण विषयों, नैतिक मूल्य एवं शिक्षा का अध्ययन करता है, वही जीवन मूल्य उसके भविष्य के निर्माण का आधार बनते हैं।

युवा विद्यार्थी हमारे देश के भावी कर्णधार हैं। अतः बहुत आवश्यक है ना केवल उनका स्वास्थ्य अच्छा हो वरन् उनका बौद्धिक एवं मानसिक स्तर भी उन्नत हो। हमारे देश के युवाओं के संपूर्ण विकास हो सके, इसके लिए समाज हित में संचालित सभी गतिविधियों में उनकी संपूर्ण हिस्सेदारी हो।

विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण संस्थानों में होने वाले छात्र संघ के चुनाव में विद्यार्थियों की रुचि उनकी राजनीति में रुचि को प्रकट करती है। समाजवाद से प्रभावित छात्र संघ चुनावों द्वारा चयनित छात्रों ने राजनीति में सहयोग प्रदान करना प्रारंभ कर दिया है।

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस समय में विद्यार्थी जिन शिक्षण विषयों, नैतिक मूल्य एवं शिक्षा का अध्ययन करता है, वही जीवन मूल्य उसके भविष्य के निर्माण का आधार बनते हैं। विद्यार्थियों का लक्ष्य शिक्षा प्राप्त करना है। शिक्षा जीवन पर्यंन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में बालक के समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आध्यात्मिक, शक्तियों का विकास करके उसे बुद्धिमान तथा चरित्रवान बनाती है। उसी प्रकार यह समाजशास्त्रीय प्रकृति के रूप में समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक है। कोठारी आयोग ने कहा है कि "भारत के भाग्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा है।" भारत की शासन व्यवस्था लोकतंत्र पर आधारित है देश की लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था तभी कायम हो सकेगी जब वहाँ के युवाओं को विकास के अवसर मिल सकेंगे।

युवा विद्यार्थी हमारे देश की भावी कर्णधार हैं। अतः बहुत आवश्यक है ना केवल उनका स्वास्थ्य अच्छा हो वरन् उनका बौद्धिक एवं मानसिक स्तर भी उन्नत हो। हमारे देश के युवाओं के संपूर्ण विकास हो सके, इसके लिए समाज हित में संचालित सभी गतिविधियों में उनकी संपूर्ण हिस्सेदारी हो।

विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण संस्थानों में होने वाले छात्र–संघ के चुनाव में विद्यार्थियों की रुचि उनकी राजनीति में रुचि को प्रकट करती है। समाजवाद से प्रभावित छात्र–संघ चुनावों द्वारा चयनित छात्रों ने राजनीति में सहयोग प्रदान करना प्रारंभ कर दिया है। सभी शिक्षा आयोग ने इस बात पर जोर दिया है कि शिक्षा का प्रमुख कार्य लोकतांत्रिक नागरिकता के लिए छात्रों को तैयार करना है, जिससे कि देश को सुयोग्य नागरिक प्राप्त हो सके। इस आधार पर वे अध्ययन की प्रवृत्ति को त्याग कर राजनीति में सक्रिय होने लगे हैं, जिसका परिणाम हमारे देश के लगभग सभी शिक्षण संस्थाएं राजनीति अखाड़ा बनती जा रही है। इस आधार पर सबसे विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या छात्रों को राजनीति में भाग लेना चाहिए? इस आधार पर दो मत सामने आते हैं । एकमत का मानना है कि विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेना चाहिए? क्योंकि आज का विद्यार्थी कल का नेता है, यदि उन्हें सक्रिय राजनीति की प्रकृति एवं उसकी क्रियाविधि का व्यवहारिक ज्ञान नहीं होगा, तो देश की राजनीति के संचालन का भार केसे वहन कर पाएंगे? जबकि दूसरा मत इस बात का विरोध करता है। उसका मानना है कि विद्यार्थियों को अपने अध्ययन से सरोकार रखना चाहिए। राजनीति में शामिल होने से उनका केरियर बर्बाद हो सकता है। वास्तविकता यह है कि राजनीति और विद्यार्थी को कभी भी अलग नहीं रखा जा सकता। स्वतंत्रता से पूर्व भी राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने

वाले में विद्यार्थी वर्ग ही अधिक सक्रिय रहा। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह और अन्य सभी नेताओं ने विद्यार्थी जीवन में ही अपना राजनीतिक जीवन शुरू कर दिया था।

वर्तमान विद्यार्थियों को भी अपने देश के प्रति दायित्व को समझते हुए राजनीति में सक्रिय भागीदारी लेनी चाहिए। बस इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह वर्तमान की भ्रष्ट राजनीति का हिस्सा ना बन जाए।

<u>राष्ट्रीय विकास और विद्यार्थी युवा वर्ग</u>– राष्ट्रीय विकास से तात्पर्य है कि देश के हर क्षेत्र चाहे वह सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक और तकनीकी हो, का विकास होना चाहिए। सामाजिक विकास से तात्पर्य समाज में समरसता एवं समानता के व्यवहार पर आधारित एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना है जहाँ जाति धर्म के आधार पर कोई भी भेदभाव अथवा वैमनस्य ना हो। आर्थिक विकास से तात्पर्य भारतीय अर्थव्यवस्था न केवल राष्ट्रीय वरन् वैश्विक स्तर पर भी मजबूती के साथ खड़ी रहे। देश में कार्यशील जनसंख्या आत्मनिर्भर हों। यह आवश्यक नहीं कि सभी के पास नौकरी हो, लेकिन सभी के पास रोज़गार अवश्य होना चाहिए। तकनीकी विकास का तात्पर्य हम डिजिटल इंडिया से ले सकते हैं। राजनीतिक विकास से आशय– भारत में राजनीतिक स्थिरता से है और भारत की सत्ता ऐसे लोगों के हाथ में हो जो निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के प्रत्येक वर्ग के कल्याण हेतु कार्य करें तथा अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी सक्रिय भूमिका अदा करें।

उपर्युक्त में से विकास की किसी अवस्था पर दृष्टिपात करें तो हम अनुभव कर सकते हैं कि इन सभी में हमारे युवा विद्यार्थी वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है क्योंकि उसमें वह जोश, उत्साह है जो एक ही लोकतांत्रिक रचनात्मक प्रक्रिया का संगठन कर सकता है जो राजनीतिक स्थिरता, सामाजिक एकता और देश की आर्थिक समृद्धि के मार्ग को प्रशस्त कर सकता है।

<u>राजनीति के माध्यम से राष्ट्र विकास में युवा विद्यार्थियों की भूमिका</u>– ''जिसकी लाठी उसकी भैंस'' कहावत तो हम सब ने सुने ही हैं जिसका तात्पर्य है शक्ति है तो सत्ता है। यही कारण है कि अगर राष्ट्र हित में और सामाजिक हित में कोई भी बदलाव अगर हमारा युवा विद्यार्थी वर्ग चाहता है तो उसे अब सत्ता अपने हाथ में लेने ही होगी और सत्ता के लिए राजनीति में प्रवेश करना ही होगा।

स्वतंत्रता के दौरान जितना सक्रिय विद्यार्थी वर्ग राजनीति में था, उतना सक्रिय अब पिछले कुछ दशकों से नहीं है। उसकी वजह है वर्तमान में राजनीति में भ्रष्टाचार का कायम होना जिसका उद्देश्य येन–केन–प्रकारेण स्वार्थ सिद्धि हो गया है। वर्तमान की राजनीतिक व्यवस्था के लिए हम कह सकते हैं––

''हिस्सों में बिक रहे हैं हम राजनीति की दुकान पर,
देश धर्म जाति व आरक्षण के नाम पर ''

विद्यार्थी जीवन में ही राजनीतिक शिक्षा प्राप्त कर एक सुयोग्य कुशल नेतृत्व के गुण वाले विद्यार्थी का एक बड़ा वर्ग हमारे पास है, लेकिन हमारे स्वार्थी नेता इस वर्ग को हिंसक गतिविधियों की तरह प्रवृत्त कर रही हैं, जिसके कारण विद्यार्थी वर्ग राजनीति से विमुख हो रहा है। लेकिन यह गलत है क्योंकि देश का विकास करना है तो युवा विद्यार्थी वर्ग को राजनीति कर्तव्य को पूरा करना ही चाहिए। युवा विद्यार्थियों को चाहिए कि वह स्वयं अपने मताधिकार का उचित प्रयोग करें और समाज में भी लोगों को जागरूक बनाए कि वह योग्य एवं ईमानदार प्रतिनिधि का चयन करें। स्थानीय राजनीति में भाग लेकर स्थानीय समस्याओं को वहाँ के प्रतिनिधियों के समक्ष रखें और उन समस्याओं के समाधान के लिए उन पर दबाव बनाएं। राजनीतिक भ्रष्टाचार को रोकने के लिए युवा विद्यार्थियों को चाहिए परम्परागत राजनीतिक दलों की भावनात्मक आह्वान की तार्किक विवेचना करें ताकि कोई भी राजनेता अपने स्वार्थ के लिए उनकी शक्ति का दुरुपयोग न कर सके। उनको राजनीतिक विचारधाराओं का आलोचनात्मक अध्ययन करके देश व समाज के लिए

उसकी उपयोगिता का मूल्यांकन करना चाहिए। युवा विद्यार्थियों का यह दायित्व है कि छात्र राजनीति का प्रयोग संकीर्ण स्वार्थ पूर्ति के लिए ना करें। वर्तमान राजनीतिक गतिविधियों पर सोच समझकर विवेकपूर्ण प्रतिक्रिया करें। वर्तमान के सामयिक मुद्दे जैसे एन आर सी ,सी ए ए, श्रीराम मंदिर विवाद पर बनने वाला सामाजिक और राजनीतिक वातावरण परस्पर संघर्ष एवं तनाव का रहा है। परस्पर विरोधी दल समाज का एक बहुत बड़े वर्ग युवा विद्यार्थी वर्ग को अपने हित में प्रयोग करते हैं। जेएनयू में होने वाली हिंसात्मक विरोध, सी ए ए आर एन आर सी के मुद्दे पर होने वाला हिंसात्मक और दंगाई प्रदर्शन इस बात का उदाहरण है। इसके साथ ही युवा विद्यार्थियों को चाहिए कि फ्लैगशिप योजनाओं के प्रति सामाजिक जागरूकता लाएं और जनता को उन योजनाओं से लाभान्वित होने में मदद करें।

वर्तमान में युवा विद्यार्थी वर्ग सारे देश, समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम है। समृद्धि, प्रगति, शांति और सुरक्षा के किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना हमारे युवा विद्यार्थी वर्ग के लिए बाएं हाथ का खेल है। युवा विद्यार्थियों में नेतृत्व की क्षमता होती है इसलिए यह जरूरी है कि राष्ट्रीय कर्तव्य के प्रति जागरूक रहते हुए अपनी क्षमता का प्रयोग देशहित में करें ताकि राष्ट्रीय निर्माण में उनके महत्वपूर्ण योगदान की संपूर्ण समाज सराहना करे और भारत वैश्विक स्तर पर अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सके।

हम अपने युवा विद्यार्थी वर्ग के लिए कह सकते हैं कि –

अपने आप में विश्वास, एकाग्रता, सत्य का आदर्श,
निष्ठावान कर्मयोगी,
हर कदम हर लक्ष्य भेदी
स्वतंत्र निर्भय दृष्टिकोण से
सबका मददगार है जो
जो उज्जवल भविष्य है भारत का
वह विद्यार्थी शक्ति भारत की कर्णधार है।

Poetry

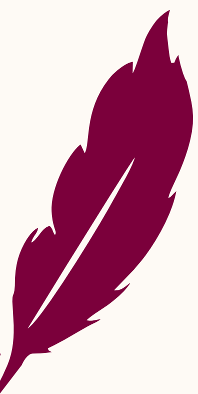

Teesha Tak
BA B Ed 3 year

Dear Poetry! How can I praise you
Yes, Yes connect our past,
future and present then why
you divide yourself in stanzas
Dear Poetry! How can I praise you
Yes, You are immortal but you
save A life.
Dear Poetry! How can I praise you
Yes, You are voice of common
people you deserve many lines
but you are too short
Dear Poetry! You can choose to
praise yourself (poetry) or not.

आस्था से विश्वास की ओर

डॉ. संगीता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर

विश्वास और आस्था दो ऐसे शब्द है जिनके मायने शायद एक दूसरे के बिलकुल करीब होते हुए भी जुदा जुदा हैं। शायद एक जुड़वां की तरह जिनमें भले ही कितनी भी बाहरी एकरूपता हो, लेकिन मन की गहराई से एक नदी के दो किनारे होते हैं, एक साथ चलते हैं एक दूसरे के नजदीक होते हैं, एक दूसरे के बिना अधूरे होते हैं, सफर टेढ़ा मेढ़ा हो उतार चढ़ाव भरा हो पर साथ नहीं छोड़ते हैं, एक दूसरे के अनुभवों के गवाह बनते हैं, एक है इसलिए दूसरे का अस्तित्व है, लेकिन इतना होते हुए भी कभी आपस में मिलते नहीं।

विश्वास का जन्म तो इंसान की पैदाईश के साथ हो जाता है। पैदा होते ही नन्हें से बच्चे को पूरा विश्वास होता है कि कोई उसकी रोती हुई आवाज को सुनकर उसे दूध पिलाएगा अपने स्पर्श से एहसास दिलाएगा कि इस दुनिया में वह महफूज है। अतः इंसान अपना पूरा जीवन विश्वास में जीता है। अपने हर कदम पर विश्वास करता है एवं कभी अपने जन्मदाता में, कभी इस प्रकृति पर कभी ब्राण्ड में एवं अपने हर छोटे व बड़े कर्म में वो विश्वास करता है कि जो भोजन वह कर रहा है वह उसे जीवित रखेगा, वो विश्वास करता है कि जो पानी वह पी रहा है वह उसकी प्यास बुझाएगा वो विश्वास करता है कि जिस धरती पर वह चल रहा है वो उसका बोझ संभालेगी। विश्वास करता है कि जिस वायु को अपने शरीर में श्वाँस के माध्यम से खींच रहा है वह उसे ऊर्जा देगी। दरअसल विश्वास का नाता हमारे रोम रोम से है इसके उलट अवस्था आस्था है जो जन्म के साथ जन्म लेती हैं।

आस्था हमें विरासत में मिलती है, क्योंकि हम अक्सर उसी में आस्था रखते हैं जिसके बारे में हमारे पुरखे हमें बताते रहते हैं। जन्म से पहले हमारी आस्था का निर्धारण नहीं किया जा सकता है। जन्म के बाद आस्था का कुछ हिस्सा हम पर थोपा जाता है, कुछ हम खुद तैयार करते हैं जो हमें ठीक लगता है, हमारी अपनी प्रकृति के अनुसार उसको हम अपना लेते हैं। कह सकते है कि विश्वास जीव की मूल प्रकृति है, जबकि आस्था उसके संस्कारों का नतीजा होता है। अब सवाल यह है कि इन दोनों में कौन ज्यादा बलवान है क्योंकि विश्वास जीव की मूल प्रकृति है इसीलिए अगर इसके उलट कोई भी काम किया जाएगा तो वह खुद ब खुद उसके पक्ष में हो जाएगा मसलन अगर आप एक चीज में विश्वास नहीं कर दूसरी चीज को अपनाते हैं तो आप दूसरी चीज में विश्वास कर लेते हैं आप अपनी पसंद तो बदल सकते हैं लेकिन विश्वास करने की प्रकृति नहीं मगर इंसान अपनी आस्था से नाता तोड़ सकता है, यह तो थोपी जा सकती है लेकिन मूल प्रकृति में नहीं होती।

यह इंसान के ऊपर है कि वो किसी एक धर्म या ईश्वर में आस्था रखे उसे बदले या फिर किसी में भी आस्था न रखें। विश्वास कभी खत्म नहीं होता फिर भी कमजोर होता है, और बहुत जल्दी टूट जाता है महज एक नाकामी उसे चूर चूर कर देती है आस्था आत्मा की प्रकृति नहीं होती हमारे शरीर में जन्म लेती है फिर भी मजबूत होती है यह जल्दी डिगती नहीं है।

उदाहरण के रूप में देखा जाये तो केदारनाथ में प्रकृति की भयंकर तांडव के बाद भी वहां बचे हुए लोगों की आस्था नहीं डिगी। बचने वाले लोग यही कहते रहे कि ईश्वर की अनुकंपा ने बचाया है।

यहां अगर बात विश्वास की होती तो शायद वह टूट जाता। वैसे कई बार विश्वास करने की मजबूरी भी होती है। केदारनाथ में जिन पत्थरों ने लोगो की जान ली एवं बचे हुए लोगों को अपनी जान बचाने के लिए उन्हीं पत्थरों पर विश्वास करना पड़ा क्योंकि विश्वास मूल है एवं हम विश्वास को बदलने के लिए फिर विश्वास करते हैं।

इन दोनों ही भावनाओं की एक और खूबी यह है कि विश्वास अक्सर एक घटना मात्र होता है जो टूटता तो जल्दी है पर कष्ट ज्यादा नहीं देता। कुछ दिनों बाद उन जख्मों को इंसान भर लेता है क्योंकि एक विश्वास टूटता है तो दूसरे विश्वास की जगह उसे मिल जाती है लेकिन आस्था ही टूट जाए तो मनुष्य की जड़े हिला देती है। अपने अनुभवों के आधार पर इंसान आस्था का ढांचा खड़ा करता है और एकाएक उसको इसकी वास्तविकता का पता लगता है जो उसके व्यक्तित्व पर खरा नहीं है उसका बोझ उठाने लायक नहीं है तो पूरा जीवन ही बिखर जाता है। दूसरी तरफ दूसरी आस्था को खोजने उसको अनुभव करने और उसे दोबारा तैयार करने की हिम्मत नहीं रहती है यदि फिर भी वह दूसरी आस्था तैयार कर भी ले पर पहले की तरह उसमें पहले के गम दुख से खत्म होने का दुख कुरेदता है। अतः विश्वास अपने रास्ते चलता रहता है आस्था अपने रास्ते परिपक्व होती रहती है।

अतः विश्वास अटल है मगर कमजोर भी। आस्था भंगुर है मगर फिर भी मजबूत है।

1. **पढ़ाई कोई बोझ नहीं यह तुम्हारे सपनों की पहली सीढ़ी है।**
2. **आज की मेहनत कल का बेहतर भविष्य तय करती है।**
3. **जो समय को बर्बाद करता है, समय उसे बर्बाद कर देता है।**
4. **तैयारी जितनी मजबूत होगी सफलता उतनी ही नजदीक होगी।**
5. **आज जो पढ़ाई में इनवेस्ट करोगे कल वही तुम्हें बेस्ट रिटर्न देगा।**

– रजनी शर्मा, बी एड प्रथम वर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव रोजगार का भविष्य

रजत कमल
(बी. एड. प्रथम वर्ष)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास आज सबसे बड़ी तकनीकी क्रांति बन चुका है यह न केवल हमारी रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित कर रहा है, बल्कि रोजगार की दुनिया में भी गहरा बदलाव ला रहा है। जहां एक ओर मशीने और ऑटोमेशन कई दोहराव वाले कार्य को तेजी से और बिना गलती के कर पा रही है, वहीं दूसरी ओर यह चिंता भी बढ़ रही है कि इससे इंसानों की नौकरी छीन सकती है। विशेष कर निर्माण, परिवहन, ग्राहक सेवा और डाटा एंट्री जैसे क्षेत्र में इसका असर अधिक दिख रहा है।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी ने आधुनिक दुनिया में क्रांति ला दी है। यह तकनीकी न केवल हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित कर रही है, बल्कि रोजगार के क्षेत्र में एक में भी गहरे प्रभाव डाल रही है। भारत जैसे विकासशील देश में जहां युवा आबादी का बड़ा हिस्सा रोजगार की तलाश में है, उन पर आई का विशेष प्रभाव महत्वपूर्ण रूप से पड़ रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में अनेक एप्लीकेशन शामिल होते हैं–Chat GPT, Google assistant, Siri, alexa, microsoft, copilat, whatsapp etc.

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की कारण रोजगार में संभावित परिवर्तन - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑटोमेशन के बढ़ते उपयोग से कुछ पारंपरिक नौकरियों पर खतरा मंडरा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार अगले कुछ वर्षों में लगभग 8.3 करोड़ नौकरियां प्रभावित हो सकती है। जिनमें डाटा एंट्री, कैशियर बैंक क्लर्क और कॉल सेंटर जैसे पद शामिल है। इसके विपरीत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में नई नौकरियां को सृजन भी हो रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विशेषज्ञ, मशीन लर्निंग इंजीनियर, डाटा साइंटिस्ट और साइबर सिक्योरिटी एनालिस्ट जैसे पदों की मांग तेजी से बढ़ रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 2027 तक ए आई से संबंधित 2.3 मिलियन नई नौकरियों की संभावना है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी के युग में युवाओं को नौकरी पानी के लिए निम्नलिखित योग्यताओं का होना आवश्यक है -

- तकनीकी दक्षता
- डिजिटल भाषाओं का ज्ञान
- डेटा विश्लेषण क्षमता
- समस्या समाधान की योग्यता
- संचार कौशल

सरकार और निजी संस्थानो के द्वारा स्किल डेवलपमेंट प्रोग्रामस के माध्यम से युवाओं को प्रशिक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है ।

निष्कर्ष - AI का आगमन रोजगार के क्षेत्र में चुनौतियां और अवसर दोनों लेकर आया है। जहां कुछ पारंपरिक नौकरियां समाप्त हो सकती है, वहीं नई तकनीकी नौकरियों का सृजन भी हो रहा है। इस परिवर्तनशील दौर में युवाओं को अपने कौशलों को अपडेट करना और नई तकनीक को अपनाना आवश्यक है। सही दिशा में प्रयास करके ए आई के इस युग में भी उज्जवल भविष्य सुनिश्चित किया जा सकता है।

नई शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव

सुनीता बैरवा
B.Ed

भारतीय शिक्षा प्रणाली पर व्यापक और महत्वपूर्ण है, जो छात्रो को समग्र विकास के लिए अधिक अवसर प्रदान करती है और शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाती है। यह नीति शिक्षा शिक्षा के बुनियादी ढांचे, पाठ्यक्रम और मुल्यांकन प्रणाली में बदलाव लाती है. जिससे शिक्षा प्रणाली अधिक लचीली और छात्र-केन्द्रित हो जाती है।

नई शिक्षा नीति 2020, जिसे भारत सरकार दारा 29 जुलाई 2020 को मंजूरी दी गई थी, भारतीय शिक्षा प्रणाली में बड़े बदलाव लाने के उद्देश्य से तैयार की गई है। यह नीति 34 साल पुरानी शिक्षा नीति का स्थान लेती है और शिक्षा नीति की गुणवता में सुधार, सभी के लिए समान अवसर प्रदान करने और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की दिशा में में एक महत्वपूर्ण करता है। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को अधिक लचीला और विद्यार्थियों की जरूरतों के अनुसार ढालना है।

इस नीति का फोकस न केवल ज्ञान प्राप्ति पर है, बल्कि विद्यार्थियों में कौशल और सृजनात्मकता का विकास करने पर भी रहा है।

1. प्रारंभिक शिक्षा और देखभाल - नई शिक्षा शांति के अन्तर्गत उसे 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा का विशेष ध्यान रखा गया है।इस चरण को 5+3+3+4 शिक्षा प्रणाली के पहले हिस्से के रूप में देखा जाता है। नीति नी का उद्देश्य यह सुनिस्चित करना है कि हर बच्या तीसरी कक्षा तका बुनियादी साक्षरता और संरख्यात्मकलता प्राप्त स्थापित किया जाएगा, जिसका उद्देश्य 2025 तक सभी बच्चों को इस लक्ष्य तक पहुंचाना है।

२. 5+3+3+4 शिक्षा संरचना - यह नई संरचना 10+2 प्रणाली का स्थान लेती है। नई संरचना में पांच साल का foundation stageतीन साल का primary stage, तीन साल का upper primary stageऔर चार साल Secondary stage शामिल है।इस संरचना का उद्देश्य शिक्षा को अधिक लचीला बनाना और विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता अनुसार शिक्षा देना है।

3. मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा - नई शिक्षा नीति के तहत मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम बनाने की सिफारिश की गई है। यह माना जाता है कि बच्चे अपने मातृभाषा में जल्दी और बेहतर तरीके से सीखते है। साथ ही, नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा का माध्यग किसी एक भाषा पर निर्भर नहीं होना चाहिए, वरन् उसे बहु भाषी बनाया जाना चाहिए।

4. **समग्र और बहु- विषयी शिक्षा** - नई शिक्षा नीति का उद्देश्य समग्र विकास प्रदा पर ध्यान केंद्रित करना है। इस नीति के तहत विद्यार्थियों को कला, संगीत खेल, योग और व्यावसायिक शिक्षा जिस क्षेत्र में भी प्रशिक्षित किया जाता जाएगा। इससे विद्यार्थियों की सृजनात्मक और कौशल का विकास होगा। विद्यार्थियों को बहु विषयक शिक्षा का अवसर प्राप्त होगा, जिससे विभिन्न विषयों में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

डिजिटल शिक्षा - डिजिटल युग के महत्व को समझते हुए नई शिक्षा नीति में डिजिटल शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। इस नीति में डिजिटल तकनीकी का उपयोग शिक्षा के सभी क्षेत्र में करने की बात कही गई है । इनमें ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल संसाधनों का निर्माण, और शिक्षा के डिजिटलीकरण पर जोर दिया गया है। साथ ही, ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में इंटरनेट की सुविधा बढाने के लिए भी उपाय किए गए हैं।

निष्कर्ष - नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकती है। यह नीति छात्रों को भविष्य के लिए बेहतर ढंग से तैयार करने, उनके सीखने के अनुभवों में सुधार करने और शिक्षा की सभी के लिए सुलभ और प्रासंगिक बनाने में मदद कर सकती है।

आज के शिक्षा प्रणाली की चुनौतियां

स्वाति यादव, काजल मीणा
बी.ए. प्रथम वर्ष

आज की शिक्षा प्रणाली की बुनियादी ढांचे में कमी आ गई है। शिक्षा की गुणवत्ता में असमानता व शिक्षक की गुणवत्ता में कमी बढ़ती जा रही है। वर्तमान समय में रटने पर जोर दिया जा रहा है। ई लर्निंग पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है, जिसके कारण बच्चे अपनी क्षमता और बुद्धि का उपयोग कम कर रहे हैं । इस कारण आजकल के बच्चे कमजोर व मानसिक रूप से सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। सभी कार्यों का आधार बुद्धि ना हो कर इंटरनेट व मोबाइल फोन हो गया है जो आज की शिक्षा प्रणाली के मुख्य चुनौती बन गया है। भारत दुनिया की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली वाला देश है जिसमें लाखों छात्रों को शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षण संस्थान है हालांकि हाल ही के वर्षों में लिखने की उल्लेखनीय प्रगति के बाद भी भारतीय शिक्षा प्रणाली को कोई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है प्रत्येक छात्र को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुंच प्राप्त हो,ऐसा प्रयास हम सब की तरफ से किया जाना चाहिए।।

प्रमुख चुनौतियां

शिक्षा की गुणवत्ता में कमी - भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रमुख चुनौती शिक्षा की गुणवत्ता में कमी है। वर्तमान में कई स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालय में अभी तक पर्याप्त बुनियादी ढांचा, योग्य शिक्षक और अपडेट पाठ्यक्रम का अभाव है। ग्रामीण क्षेत्र की कई स्कूलों में बिजली पानी की आपूर्ति, शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है, जो शिक्षा की गुणवत्ता को नुकसान पहुंचा रहा है।

सामर्थ्य और पहुंच - शिक्षा की वहनीयता और सुलभता भारतीय शिक्षा सामने महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं ।भारत में शिक्षा प्रणाली आज भी आबादी की एक बड़े हिस्से के लिए सुलभ नहीं है। इसके अतिरिक्त शहर और ग्रामीण क्षेत्र के बीच शिक्षा की पहुंच में असमानता है।

पुराना पाठ्यक्रम - भारतीय शिक्षा प्रणाली में भी शिक्षा के लिए पारंपरिक दृष्टिकोण का पालन करती है और समाज और नौकरी, बाजार के बाजार की बदलती जरूरतों के अनुकूल होने के लिए लचीलेपन की कमी है पाठ्यक्रम पुराना हो जाता है और वह छात्रों को आधुनिक दुनिया के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं करता है।

शिक्षकों की कमी - देश में योगी शिक्षकों की कमी है,खास कर ग्रामीण इलाकों में। यह कमी छात्रों को दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रभाव डाल सकती है। शिक्षण में निरंतरता की कमी ला सकती है।

परीक्षा प्रणाली - भारतीय शिक्षा प्रणाली छात्रों की मूल्यांकन के लिए परीक्षाओं पर बहुत अधिक निर्भर है और अक्सर अवधारणा को समझने की बजाय रटने पर ध्यान केंद्रित करती है। परीक्षा प्रणाली तनाव का स्रोत है, जिससे सीखने में रुचि कम हो सकती है।

E लर्निंग पर जोर - वर्तमान समय पर ई लर्निंग शिक्षा का प्रमुख हिस्सा बन चुकी है। ई-लर्निंग से छात्रों को शिक्षकों और सहपाठी के साथ संपर्क का कम अवसर प्राप्त होता है। ई लर्निंग डिजिटल तकनीक पर है, जिससे छात्रों को इंटरनेट कनेक्टिविटी और उपकरणों के समस्या होने पर सीखने में कमी आती है।

गेम थ्योरी और निर्णय प्रक्रिया

लक्ष्मी वर्मा, बीएससी बीएड सेकंड ईयर

यह लेख गेम थ्योरी के सिद्धांत और उसके विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग को सरल भाषा में समझता है और गेम थ्योरी एक गणितीय तकनीक है जो रणनीतिक निर्णय लेने में मदद करती है खासकर जब निर्णय एक से अधिक पक्षो पर निर्भर करते हैं इसमें प्रत्येक खिलाड़ी अपने लाभ को अधिकतम करने की कोशिश करता है यह मानते हुए की दूसरे भी ऐसा ही करेंगे।

क्या आप जानना चाहते हैं कि कैसे बड़ी बिजनेस रणनीतियां, राजनीति और जीवन के महत्वपूर्ण फैसले लिए जाते हैं। गेम थ्योरी एक गणितीय विधि है जो हमें बेहतर और अधिक राजनीतिक निर्णय लेने में मदद करती है इस लेख में हम जानेंगे कि गेम थ्योरी हमारे निर्णय लेने की प्रक्रिया को कैसे प्रभावित करती है और इसे विभिन्न क्षेत्रों में कैसे लागू किया जा सकता है। हमारे जीवन में हम हर रोज कई फैसले लेते हैं चाहे वह व्यक्तिगत हो या व्यावसायिक, लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह निर्णय अक्सर दूसरों के फैसलों पर भी निर्णय करते हैं। कभी-कभी हमें अपने फैसले लेने से पहले यह सोचना पड़ता है कि दूसरे क्या करेंगे। यही वह स्थित है जहां गेम भ्योरी काम आती है। यह गणितीय सिद्धांत रणनीतिक निर्णय के विश्लेषण में मदद करता है खासकर तब जब कई पक्ष एक दूसरे पर निर्भर हो इस लेख में हम जानेंगे कि गेम थ्योरी और निर्णय प्रक्रिया कैसे परस्पर जुड़े हुए हैं।

गेम थ्योरी क्या है - गेम थ्योरी जैसा कि नाम से ही पता चलता है खेलों में निर्णय लेने की रणनीतियों का अध्ययन करती है, लेकिन यह खेलों तक सीमित नहीं है यह किसी भी स्थिति का विश्लेषण करती है जहां दो या दो से अधिक पक्ष अपने निर्णय के आधार पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए व्यवसाय में दो कंपनियां अपने उत्पादों की कीमत तय करती है या दो देश आपस में कूटनीतिक के समझौतो के लिए बातचीत करते हैं हर खिलाड़ी अपने लाभ को अधिकतम करने की कोशिश करता है यह मानते हुए की दूसरे खिलाड़ी भी यही करेंगे।

खेल सिद्धांत की प्रमुख अवधारणाएं -

1. खिलाड़ी- सभी व्यक्ति या समूह जो निर्णय ले रहे होते हैं।, 2. रणनीतियां - वे विकल्पीय योजनाएं जिन्हें खिलाड़ी चलते हैं।, 3.भुगतान- प्रत्येक रणनीति का परिणाम चाहे वह लाभ हो या हानि।, 4. नैश संतुलन - एक ऐसी स्थिति जब सभी खिलाड़ी अपने-अपने फैसले इस प्रकार लेते हैं कि कोई भी खिलाड़ी अपना निर्णय बदलकर कोई अतिरिक्त लाभ प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रसिद्ध उदाहरण Prisoner's Dilemma (कैदी की दुविधा) - गेम थ्योरी एक प्रसिद्ध उदाहरण है इसमें दो अपराधी पकड़े जाते हैं और उन्हें एक दूसरे से विश्वासघात करने या सहयोग करने का विकल्प दिया जाता है अगर दोनों एक दूसरे को धोखा देते हैं तो दोनों को कड़ी सजा मिलेगी लेकिन अगर दोनों एक दूसरे से सहयोग करते हैं तो दोनों को हल्की सजा मिलेगी यह स्थिति दिखाई है कि कैसे व्यक्तिगत हितों के चलते सहयोग की बचाए प्रतिस्पर्धा या धोखा सामने आता है और क्योंकि यह एक सामूहिक नुकसान का कारण बनता है।

गेम थ्योरी और निर्णय प्रक्रिया के लाभ - 1. यह किसी भी निर्णय को लेने से पहले वास्तविक परिणाम को समझाने में मदद करता है। 2. यह संयोग और प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन बनाने की कला सिखाता है। 3. यह तात्कालिक लाभ के बजाय दीर्घकालिक सोच को प्रोत्साहित करता है। 4. यह धोखाधड़ी और प्रतिस्पर्धा को समझने में मदद करता है जिससे संघर्ष की संभावना कम होती है।

निष्कर्ष- गेम थ्योरी ने केवल गणित का एक जटिल सिद्धांत है बल्कि यह है हमें जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय को बेहतर तरीके से समझने की क्षमता प्रदान करता है। अगली बार आप जब किसी जटिल स्थिति का सामना कर तो गेम थ्योरी के सिद्धांतों को ध्यान में रखें और देखे कि कैसे यह आपकी सोच को एक नई दिशा दे सकता है।

शब्द संशय शोधन

डॉ. मीनाक्षी सारस्वत
असिस्टेंट प्रोफेसर

- **लाल किला और लाल किला में अंतर है ?**

जी हां, लाल किला और लालकिला में अंतर है जैसे सिरका और सिर का में अंतर है। लाल किला में लाल विशेषण है जबकि किला संज्ञा है, लेकिन लालकिला पूरा का पूरा संज्ञा पद है। तत्पुरुष समास की गहराई अथवा पाठकों के लिए समास समझने की जटिलता में उतरे बिना इतना कहना पर्याप्त होगा कि यहां एक साथ जुड़कर ही विशेष अर्थ का बोधन होता है। बहुत से किले का रंग लाल हो सकता है, लेकिन लालकिला तो एक ही है, जो दिल्ली में है।

- वेदप्रकाश लिखें ,अगर किसी व्यक्ति का नाम है तो। वेद प्रकाश से किसी व्यक्ति के नाम का बोध नहीं होता अपितु वेद के प्रकाश का बोध होता है।
- आप जलसा (सभा) में जाते हैं जल सा में नहीं जाते। जलसा (अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है सभा) को जल (पानी) सा नहीं लिख सकते।
- सूत्र: जहां दोनों शब्द एक साथ लिखे जाते हैं वे अन्योन्याश्रित होते हैं जहां पृथक-पृथक लिखे जाते हैं, वहां परस्पर निर्भरता उतनी नहीं होती।
- भारत रत्न और भारतरत्न में यही तो अंतर है।सम्मान के रूप में भारतरत्न है, भारत रत्न नहीं ध्यान रखें कि एक साथ लिखने पर बोलने में भी एक साथ होगा और उसका प्रभाव भी साझा ही होगा। विश्वविद्यालय एक साथ है तभी university (यूनिवर्सिटी) है नहीं तो विश्वविद्यालय World School है। सिरका खाने में तथा अन्य कार्य में प्रयुक्त होता है, सिर का से "मस्तिष्क का" समझा जाएगा।
- सुझाव: एक साथ रखें, तभी तत्पुरुष समास प्रभावित होगा।
- यह भी ध्यान रखें कि ऐसे शब्द जिनके बीच कोई अन्य शब्द प्रविष्ट नहीं हो सकता, वे भी एक साथ ही लिखा जाए। "उन्होंने" को उन्हों ने इसी आधार पर नहीं लिखा जा सकता।
- विशेष: विश्वविद्यालय में निहित विश्व शब्द विश् धातु से बना है, जिसमें समाहित करने का भाव है। जो कुछ है, वह विश्व अथवा समष्टि में समाया हुआ है। विश्व के नियंता विष्णु में भी यह विश् धातु है।

शिक्षण संस्थाओं के चयन हेतु आवश्यक सुझाव

डॉ. विनीता शर्मा
अस्सिस्टेंट प्रोफेसर

विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिए विद्यालय या शिक्षण संस्थान का चयन करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना बहुत आवश्यक होता है। इनमें से कुछ मुख्य बातें निम्नलिखित हैं, जो उन्हें समझने और विचार करने में सहायक हो सकती हैं।

1 . **शैक्षणिक मानकों का पालन** :शिक्षण संस्थान का चयन करते समय ,शैक्षणिक मानकों ,जैसे कि शिक्षक-छात्र अनुपात ,शैक्षणिक संस्थान की गुणवत्ता और कक्षा-कक्ष की शैक्षिक सुविधाओं का ध्यान रखना चाहिए। विद्यालय या संस्थान के शैक्षणिक मानक कितने उच्च हैं, यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। शैक्षणिक प्रदर्शन, शिक्षकों की गुणवत्ता, पाठ्यक्रम का विस्तार, विशेषज्ञता के क्षेत्र, और विद्यार्थियों की सफलता जैसे मापदंडो का ध्यान रखते हुए चयन करना चाहिए।

- **शैक्षिक गुणवत्ता**: विद्यालय या संस्थान की शैक्षिक गुणवत्ता उसकी मुख्य पहचान होती है। यहां शिक्षकों की योग्यता, पाठ्यक्रम, छात्रों का शैक्षिक प्रदर्शन आदि का मूल्यांकन किया जा सकता है।

- **विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात:** शिक्षा की गुणवत्ता निर्धारित करने में विद्यार्थी- शिक्षक अनुपात एक महत्वपूर्ण कारक है। यह बताता है कि प्रति शिक्षक कितने छात्रों का ध्यान रखता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में और छात्रों के विकास में सहायक होता है।

- **अध्ययन संबंधी सुविधाएं:** विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय, लैब, कंप्यूटर लैब, खेल के मैदान आदि जैसी अध्ययन संबंधी सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए।

2. **विद्यार्थी सहायता प्रणाली**: एक संबंधित और सक्रिय विद्यार्थी सहायता प्रणाली उपलब्ध होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी अपने शैक्षिक और व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान कर सकें।

3. **संस्थान का परिवेश** : विद्यार्थी और अभिभावकों को संस्थान के वातावरण का भी ध्यान देना चाहिए। क्या यह एक सुरक्षित, सहज और विकसित माहौल प्रदान करता है,जो छात्रों के संपूर्ण विकास को समर्थित करता है?

4 . शिक्षकों का प्रोफ़ाइल :शिक्षकों का अनुभव ,उनकी योग्यता और प्रदान की गई शिक्षा का मूल्यांकन करना जरूरी है।एक योग्य अध्यापक करियर के लिए काफी अहम साबित होता है इसलिए कॉलेज की फैकल्टी के बारे में भी जानकारी जुटा लें।पूरी तरह से ये सुनिश्चित कर लें कि संस्थान में फैकल्टी की क्या भूमिका है? वह कितने शिक्षित और अनुभवी हैं? एक अच्छा शिक्षक ही आपका भविष्य बना सकता है।

5 . शैक्षणिक संबंध :शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य अच्छे संबंध विकसित करने वाले संस्थान का चयन करना चाहिए।

6 . संस्थान की सामाजिक और कैंपस संरचना :सामाजिक और वित्तीय संरचना का मूल्यांकन करना चाहिए ,जैसे कि कैंपस सुरक्षा ,शैक्षिक संगठन और सामुदायिक सेवाएं आदि । संस्थानिक संरचना विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

7 . संगठन का प्रबंधन :शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यक्रमों का प्रबंधन अच्छे तरीके से होना चाहिए ताकि शिक्षार्थी और अभिभावकों को संघर्षमुक्त अनुभव मिल सके।

8 . शैक्षिक वातावरण :एक सकारात्मक और संवेदनशील शैक्षिक वातावरण महत्वपूर्ण है ,जो छात्रों को संघर्षमुक्त और उत्साही बनाता है।

9. विद्यार्थियों की भागीदारी :अच्छे विद्यालय और संस्थान में विद्यार्थी को निरंतर भाग लेने का मौका मिलना चाहिए , जैसे कि विद्यालयीय कार्यक्रमों ,परियोजनाओं ,और नेतृत्व आदि ।

10. संबंधित सुविधाएं :शिक्षा के साथ-साथ अन्य सुविधाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। क्या संस्थान संचार ,परिवहन , पुस्तकालय ,खेलकूद ,कला और सामाजिक क्षेत्र में सुविधाएं प्रदान करता है?

11. वित्तीय पहलू :शिक्षा लागत एक महत्वपूर्ण प्रश्न हो सकता है। क्या संस्थान विद्यार्थी के लिए वित्तीय सहायता या छात्रवृत्ति प्रदान करता है?

12. समर्थन और सहायता :क्या संस्थान विद्यार्थी को कैरियर समर्थन और परामर्श प्रदान करता है ?क्या यह विद्यार्थी के अभिभावकों को सही दिशा में मदद करता है?

13. प्रतिस्पर्धी सूची :विद्यार्थियों व अभिभावकों को विभिन्न संस्थानों की प्रतिस्पर्धी सूची की भी जांच करनी चाहिए।

1 4 . छात्र संगठन :क्या संस्थान छात्रों के लिए विभिन्न संगठनों और क्लब्स की सुविधा प्रदान करता है ,जो उनके विकास में सहायक हो सकते हैं?

15. संस्कृति, मूल्य और नैतिकता: इन सभी चीजों से ऊपर ,एक प्रमुख आवश्यक कारक जो आपको किसी स्कूल या संस्था में देखना चाहिए ,वह उसकी संस्कृति है । संस्था

किन मूल्यों का प्रतीक है ?क्या संस्था में कोई आचार संहिता है ?विद्यालय व संस्थान की स्वस्थ संस्कृतियाँ शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास और विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल ,नवीन शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देती हैं। इसके अलावा,स्वस्थ कार्य संस्कृतियाँ, स्वस्थ वातावरण ,निरंतर सीखने और विकास के प्रति प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी की समग्र भावना को बढ़ावा देती हैं। संस्था के मूल्य इस बात में भी महत्वपूर्ण रूप से मायने रखेंगे कि वे बच्चों की मानसिकता को कैसे आकार देते हैं। इसलिए ,आपको यह जांचना चाहिए कि स्कूल के मूल्य आपके पारिवारिक मूल्यों के अनुरूप हैं या नहीं।

जिस भी विद्यालय या संस्था में आप एडमिशन लेने जा रहे हैं. उसके बारे में पूरी तरह से रिसर्च कर लें. कट ऑफ, परसेंटाइल के साथ-साथ अगर प्रोफेशनल कोर्स में एडमिशन लेने जा रहे हैं तो प्लेसमेंट स्टेटस पर भी गौर कर लें।

इन सभी बातें को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों और अभिभावकों को एक उचित विद्यालय या संस्थान का चयन करना चाहिए।

THE LAST THOUGHT OF AN EXTINCT WORD

Aashi Saini
B.Ed-I

I once danced on tongues in twilight talk,
A whisper in poems, a shadow on chalk.
Mothers would hum me, lovers would write
Now I dissolve in digital night.

Forgotten in pages, I echo no more,
Just dust in a lexicon's closing door.
I ache for a breath, a syllable's grace,
But silence has swallowed my only place

A ghost with no voice, lost in time's race.
Yet deep in a dream, where old echoes roam,
I linger unseen in a mind's quiet home
Still waiting to wake in a whisper or poem

Gamification in Mathematics Teaching

Bhawana Verma
Assistant Professor

Recent years have seen the development of a new culture in the teaching and learning process, such as the implementation of gamification. The application of gamification aims to enhance the teaching and learning process as well as the experience and satisfaction of those who participated. Recently, much ongoing research have been focusing on improving the quality of the teaching and learning process. The implementation of gamification activities in teaching and learning shows its ability to increase participants' experiences, responses, and engagements to the educational sessions. Therefore, increasing numbers of research are performed to explore the suitable types and approaches of gamification that can be used in education. On the other hand, while improving the quality of the education's environment is a key factor, it is also important to explore the satisfaction and motivation of all learners in this new adaptation to the education environment. The Our youngsters nowadays need a new treatment in teaching and learning delivery. Hence, it is highly recommended to implement gamification activities in teaching and learning lessons.

Gamification in mathematics, particularly within the context of India's policy(NEP), involves using game-like elements in mathematics education to enhance engagement , motivation, and learning outcomes.

This aligns with the NEP's focus on creating an engaging curriculum and fostering mathematical and computational thinking at the fundamental level. As the traditional mentality , Mathematics is a very tough and bored subject .The main advantage of integrating Gamification into mathematics education is that it instills curiosity among students. This in turns leads to a greater interest in mathematics and encourages students to be active learner.

Improving Mathematics performance through gamification -

In the dynamic world of education, where traditional methods often fall short in getting the attention of students, innovative approaches are important.Gamification, the integration of game elements into environment where they are very static, has become a powerful tool to transform education, especially in the realm of mathematics.

Gamification method in mathematics -

Gamification in Mathematics involves applying game-like elements and mechanics to traditional math lesson and activities to enhance engagement, motivation, and learning outcomes. It transform math from a potentially daunting subject into an interactive and enjoyable learning experience

Key elements of gamification in Mathematics

Points and badeges:

Students earn points for completing tasks, solving problems, or achieving specific milestone. These points cn be used to unlock new challenges or virtual rewards, like badges or certificates.

Progress Bars and levels:

Visual representation of levels, such as progress bar, pyramid, levels can help students track their learning and feel a sense of accomplishment.

Online Math Games and Apps :

Utilizing platform like Quizzez and Kahoot for creating interactive quizzes and games, or apps like IXL, Prodigy can enhance engagement.

In conclusion

Gamification has the potential to transform mathematics education by making learning more engaging, motivating, and effective. By incorporating game elements into the classroom , educators can create more interactive and enjoyable learning environments that help students grasp mathematical concepts more effectively and retain them for longer periods.

मौसम बंसत का

मौसम बैरवा

बी.एड.-प्रथम वर्ष

लो आ गया फिर से हँसी मौसम बसंत का, शुरुआत है बस ये निष्ठुर जाड़े के अंत का
गर्मी तो अभी दूर है वर्षा ना आएगी, फूलो की महक हर दिशा में में फैल जाएगी
पेड़ों में नई पत्तियाँ इठला के फूटेंगी, प्रेम की खातिर सभी सीमाएं टूटेंगी।
सरसों के पीले खेत ऐसे लहराएंगे, सुख के पल जैसे अब कहीं ना जाएंगे।।
आकाश में उड़ती। हुई पतंग ये कड़े डोरी से मेरा मेल है आदि अनंत का।
लो आ गया फिर से हँसी मौसम वसंत का, शुरुआत है बस में निष्ठुर जाड़े के अंत की।।
ज्ञान की देवी को भी मौसम है ये पसंद, वातावरण में गूंजते है उनकी स्तुति के छंद।
स्वर गूंजता है जब मधुर वीणा की तान का, भाग्य ही खुल जाता है हर इक इंसान का।।
माता के भूत वस्त्र यही तो कामना करें विश्व में इस ऋतु के जैसी सुख शांति रहे।
जिसपे भी हो जाए माँ सरस्वती की कृता, चेहरे पे ओज आ जाता है जैसे एक संत का।
लो आ गया फिर से हँसी मौसम बसंत का, शुरुआत है बस ये निष्ठुर जाड़े के अंत का।।

नई शिक्षा नीति 2020 में शारीरिक शिक्षा का महत्व

डॉ. राजश्री चुण्डावत
(फिजिकल एजूकेटर)

नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 में शारीरिक शिक्षा के महत्व को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है और इसे शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में स्थापित करने पर जोर दिया गया है। इस नीति में शारीरिक शिक्षा को केवल एक अतिरिक्त गतिविधि के बजाय छात्रों के समग्र विकास के लिए आवश्यक माना गया है।

मुख्य बिंदु:

- **समग्र विकास का हिस्सा:** NEP 2020 शारीरिक शिक्षा को छात्रों के मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास के लिए महत्वपूर्ण मानती है। यह शिक्षा के समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण का एक अभिन्न अंग है।

- **अनिवार्य विषय:** नीति में यह अनुशंसा की गई है कि शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए, ताकि सभी छात्रों को इसका लाभ मिल सके। पहले, अक्सर इसे एक वैकल्पिक विषय के रूप में देखा जाता था।

- **खेल-आधारित शिक्षा:** NEP 2020 खेल और शारीरिक गतिविधियों को सीखने की प्रक्रिया में एकीकृत करने पर जोर देती है। खेल-आधारित शिक्षा से छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताओं, टीम वर्क, अनुशासन और नेतृत्व कौशल का विकास होता है।

- **स्वास्थ्य और कल्याण:** नीति छात्रों के स्वास्थ्य, पोषण और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए शारीरिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है। यह स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने और बीमारियों से बचाव के लिए जागरूकता बढ़ाने में मदद करता है।

- **कौशल विकास:** शारीरिक शिक्षा विभिन्न प्रकार के शारीरिक कौशल, समन्वय और चपलता विकसित करने में मदद करती है। यह छात्रों को विभिन्न खेलों और शारीरिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है।

- **मानसिक स्वास्थ्य:** NEP 2020 शारीरिक गतिविधियों को तनाव कम करने और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के एक प्रभावी तरीके के रूप में पहचानती है। खेल और व्यायाम छात्रों को भावनात्मक रूप से स्थिर और लचीला बनाने में मदद करते हैं।

- **समावेशी शिक्षा:** नीति यह सुनिश्चित करने पर जोर देती है कि शारीरिक शिक्षा सभी छात्रों के लिए

सुलभ हो, जिसमें विशेष आवश्यकता वाले छात्र भी शामिल हैं। समावेशी खेल और गतिविधियाँ सभी को समान अवसर प्रदान करती हैं।

- **बुनियादी ढांचा और शिक्षक:** NEP 2020 स्कूलों में शारीरिक शिक्षा के लिए उचित बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल देती है।

- **मूल्यांकन:** नीति में शारीरिक शिक्षा को अन्य शैक्षणिक विषयों के समान महत्व देने और आवश्यकतानुसार इसका मूल्यांकन करने की बात कही गई है।

- **विद्यार्थी जीवन में शारीरिक शिक्षा का महत्व :**

नई शिक्षा नीति 2020 में शारीरिक शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया है इसका कारण की विद्यार्थी जो आने वाले भारत के युवा पीढ़ी है उसके लिए शिक्षा को बहुत-बहुत अधिक महत्व बताया गया है। बेहतर शैक्षिक परिणाम साइकिल चलाना ट्रैकिंग 13 की स्केटिंग आदि कुछ ऐसी शारीरिक व्यायाम है जो विद्यार्थी के मस्तिष्क सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। एक सक्रिय बच्चा कक्षा में अधिक ध्यान देगा अधिक प्रभावित ढंग से सीखेगा तो, उसका शैक्षिक प्रदर्शन भी अच्छा होगा ।

बेहतर सामाजिक कौशल विद्यालय विद्यार्थी जब तीन भावना से खेल खेलते हैं तो एक दूसरे को सहयोग करना, एक दूसरे से ठीक प्रकार से समझना और बात करना सीखते हैं,जो उन्हें सामाजिक और पारस्परिक कौशल को बढ़ावा देते हैं।

तनाव से मुक्ति बच्चों पर स्कूल का काम, होमवर्क करने, परीक्षा की तैयारी करने का बहुत अधिक दबाव होता है, इसलिए उनके पास कुछ घंटे खेल खेलने का एक बेहतरीन विकल्प है जो उनके मूड को बेहतर बनाता है और उन्हें अधिक ऊर्जावान और तरोताजा बनाकर उनका तनाव और चिंता से मुक्त करता है। संतुलित दिनचर्या का विकास शारीरिक शिक्षा बालक के अंदर स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों का विकास करती है संतुलित खान-पान,नियमित व्यायाम योग ध्यान आदि क्रिया तथा बेहतर नींद का महत्व विद्यार्थी सीखना है और उसे अपनाता है।

निष्कर्ष:

नई शिक्षा नीति 2020 शारीरिक शिक्षा को छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्थापित करती है। यह नीति न केवल छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है, बल्कि उनके मानसिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल करने और खेल-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने से छात्रों को एक स्वस्थ, सक्रिय और संतुलित जीवन जीने के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण प्राप्त होंगे।

गरिमा मिश्रा
(व्याख्याता)

विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम्
न चौरहार्यं न च राजहार्यं,
न भातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं,
विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम् ।।

विद्या ऐसा धन है जिसे न चोर चुरा सकता है, न राजा दंड में ले सकता है न भाई बंटवारा कर सकता है और ना कभी यह बोझ हो सकता है। संसार के सभी धनों में विद्या रूपी धन ही सर्वश्रेष्ठ है विद्याधन खर्च करने पर नित्य ही बढ़ता है यही विद्याधन की विशेषता है।

विद्या अमूल्य और अनश्वर धन है इसका नाश कभी नहीं होता। अन्य सभी धन नष्ट हो जाते हैं लेकिन विद्या रुपी धन कभी नष्ट नहीं होता। स्वर्णमयी लंका को रावण भस्म होने से ना बचा सका, बल का धन भी समाप्त हो गया और वह श्रीराम से पराजित हुआ। उसका सब कुछ छीन गया परंतु इसका विद्या का ज्ञान श्रीराम भी ना छीन सके । कहा जाता है कि युद्ध भूमि में पड़े हुए रावण से लक्ष्मणजी ने राजनीति का ज्ञान प्राप्त किया ।

जिसके पास विद्या रूपी धन है उसके लिए संसार की कोई भी वस्तु अप्राप्त नहीं है विद्या के द्वारा मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है तभी मनुष्य अपने अधिकार और कर्तव्य का सही अर्थ समझ पाता है। मनुष्य अपने अधिकार और कर्तव्यों का सही रूप से पालन कर पाता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। खान-पान और रहन-सहन के अतिरिक्त उसकी कुछ अन्य आवश्यकताएं भी है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे साधन ढूंढने पड़ते हैं। साधनों का मूल है- धन, ज्ञान, चातुर्य और इनका आधार विद्या है । इसीलिए विद्या को एक अनोखा धन कहा गया है जो दान करने से बढ़ता है परंतु संचय करने से नष्ट हो जाता है।

सत्यमेव विद्या बुद्धे मूर्खतां हरति ।
विद्या दिशासु कीर्ति प्रसारयति ।।

विद्या द्वारा ही मनुष्य सम्मान को प्राप्त करता है। विद्या से रहित मनुष्य कर्तव्य एआकर्तव्य को नहीं समझ पाता है। वह यह भी नहीं जान पता कि क्या धर्म है क्या अधर्म है क्या पुण्य है और क्या पाप है ?

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुक्ते
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीयखेदम् ।
लक्ष्मी तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्ति
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।

विद्या माता की तरह रक्षण करती है, पिता की तरह हित करती है, पत्नी की तरह थकान दूर करके मन को रीझाती है, शोभा प्राप्त कराती है, और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है। सचमुच, कल्पवृक्ष की तरह यह विद्या क्या-क्या सिद्ध नहीं करती। अर्थात् विद्या से ही सभी कार्य सिद्ध होते हैं

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

विद्या से सब प्रकार का सुख और यश प्राप्त होता है। विद्या विदेश में भाई के समान सहायक होती है। विद्या के कारण ही राजदरबार में सम्मान मिलता है, बल और धन के कारण नहीं। इसलिए विद्या को सबसे श्रेष्ठ धन कहा जाता है।

●●●

शिक्षक

Ekta Sharma
B.Ed. I Year

शिक्षक है शिक्षा का सागर,
शिक्षक बांटे ज्ञान बराबर,

शिक्षक मंदिर जैसी पूजा,
माता-पिता का नाम है दूजा,
प्यासे को जैसे मिलता पानी,
शिक्षक है वही जिंदगानी,
शिक्षक न देखे जात-पात,
शिक्षक न करता पक्ष-पात ।

हिन्दी भाषा की दशा व दिशा

डॉ. बीना देवी जैन, व्याख्याता
श्रीमती अंजना शर्मा, व्याख्याता

मन की भाषा, प्रेम की भाषा,
हिन्दी है जन–जन की भाषा।

14 सितम्बर 1949 को संविधान की भाषा समिति ने हिन्दी को राजभाषा के पद पर आसीन किया था क्योंकि भारत की बहुसंख्यक जनता द्वारा हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा था। भले ही स्वतन्त्रता के पश्चात इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया लेकिन सरकार द्वारा इसके प्रचार व प्रसार के लिये सराहनीय कदम नहीं उठाए गये तथा अंग्रेजी भाषा का प्रयोग अनवरत चलता रहा। भले ही विश्व के महत्त्वपूर्ण देशों में हिन्दी का अध्ययन व अध्यापन हो रहा है लेकिन वह अपने घर में उपेक्षित जिन्दगी जी रही है क्योंकि अंग्रेजी बोलने वाले को बुद्धिमान व सम्मान्नीय व हिन्दी बोलने वालों को सामान्य जताने की परम्परा चली आ रही है । कांग्रेस के अधिवेशन में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया लेकिन भारत के संविधान में राष्ट्रभाषा शब्द का प्रयोग हुआ ही नहीं है। हम सभी प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस पर हिन्दी को तहेदिल से रोजमर्रा जिन्दगी में अपनाने का प्रण लेते रहते हैं लेकिन इन्हें राजभाषा पखवाड़े तक ही सीमित रखना हमारी आदत बन गई है।

देश को स्वतन्त्र हुए 73 वर्ष हो चुके हैं परन्तु हिन्दी को वह स्थान नहीं मिला है जो उसे मिलना चाहिए । कुछ दशकों से हम हिन्दी भाषी लोगों ने देश का माहौल कुछ इस प्रकार का बना दिया है कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त किए बिना उच्च पद प्राप्त करना असंभव है । यही कारण है कि अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने वाले विद्यालयों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिसके परिणामस्वरुप हिन्दी माध्यम के विद्यालय में नामांकन का स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है।

वर्तमान में वास्तविक रूप से व्यावहारिक भाषा की बात करें तो हिन्दी व अंग्रेजी भाषा का इतना सम्मिश्रण हो गया है कि हिंग्लिश भाषा का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। जिसमें न तो पूर्ण रूप से हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है और न ही अंग्रेजी का। आज हिग्लिश भाषा युवा पीढ़ी की भाषा बन गई है।

आज शिक्षा का व्यावसायीकरण हो गया है। हर गली–मौहल्ले में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने वाले विद्यालय की भीड़ सी लग गई है । चपरासी से लेकर उच्चाधिकारी तक सभी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से ही पढ़ाना चाहते हैं । फलतः वर्तमान पीढ़ियों का विनाश हुआ जा रहा है और विशुद्ध भारतीय शिक्षा पद्धति और माध्यम का विकास नहीं हो पा रहा है । एक विदेशी भाषा को शिक्षा – सेवा का माध्यम बनाकर पराजित मनोवृत्तियों एवं गुलाम मानसिकता का ही परिचय दिया जा सकता है।

हिन्दी भाषा नहीं भावों की अभिव्यक्ति है,
यह मातृभूमि पर मर मिटने की शक्ति है।

भाषा को अभिव्यक्ति एवं भावों–विचारों के आदान प्रदान का सबसे सस्ता, सुलभ और सशक्त माध्यम तो माना ही जाता है; पर इन सब बातों से भी पहले उससे सोचने विचारने का काम लिया जाता है। ये सोच विचार अपने देश, राष्ट्र, जाति–धर्म, सभ्यता संस्कृति के मूल तत्वों के अनुरूप, इन सबकी प्रगति एवं विकास का कारण तभी बन सकते हैं जब इन्हें अपनी भाषा में नितांत अपने ढंग से किया जाए।

हिन्दी को सही अर्थों में राजभाषा का दर्जा नहीं मिलने का कारण राजनीतिक प्रपंच ही है। यदि विदेशी राजनेताओं के साथ हिन्दी में बातचीत का सिलसिला बनाये रखते तो इससे तमाम सरकारी कामकाज में

हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलता। इस दिशा में पहल सम्मान्नीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई है। प्रधानमंत्री जी की यही भावना राष्ट्रभाषा के प्रति सम्मान व समर्पण की है। यदि देश का प्रत्येक नागरिक सम्मान की भावना रखते हुए बातचीत व सीखने में हिन्दी भाषा के प्रयोग को बलवती इच्छाशक्ति के साथ करें तो वह दिन दूर नहीं होगा जब पूरे देश में हिन्दी भाषा ही आम भाषा बनकर के, राष्ट्रभाषा का स्वरुप निश्चित कर पायेंगे।

आज के साइबर मोबाइल के जमाने में अंग्रेजी की तरह हिन्दी का भी संक्षिप्तीकरण करने की जरुरत है जैसे बैचलर ऑफ ऑट्र्स को बी. ए. कहा जाता है इसलिए हिन्दी को आधुनिक, सर्वग्राह्य और विकसित किया जाए ताकि लोग खासतौर पर युवा पीढ़ी उसे अपना सके।

हिन्दी ही एक ऐसी शालीन व समृद्ध भाषा है जिसका किसी भी क्षेत्रीय भाषा से विरोध नहीं है, बल्कि भारतीय भाषाऐं एक दूसरे की बहिनें हैं। राष्ट्रीय महत्त्व के कामकाज यदि जनता की भाषा में होंगे तो देश की व्यवस्थाऐं अधिक पारदर्शी होंगी। हिन्दी भाषा हमारे माथे की बिन्दी स्वरूप है इसी से ही जन जीवन में समरसता और संवाद में सहायता का प्रादुर्भाव होगा, दूरियां समाप्त होंगी तथा नजदीकियों का विस्तार होगा।

सोंधी सुगंध मीठी सी भाषा,
गर्व से कहो हिन्दी है हमारी भाषा

सार्वजनिक भविष्य निधि (PPF)

Geeta Dheerwani, B.Ed. II Year

सार्वजनिक भविष्य निधि (Public Provident Fund - PPF) भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक लोकप्रिय दीर्घकालिक बचत योजना है, जिसका उद्देश्य लोगों को सुरक्षित निवेश के साथ-साथ कर छूट प्रदान करना है। यह योजना 1968 में शुरू की गई थी और आज भी यह मध्यम वर्ग के निवेशकों के बीच बहुत लोकप्रिय है। कोई भी भारतीय नागरिक किसी डाकघर या अधिकृत बैंक में यह खाता खोल सकता है। नाबालिग के नाम पर भी यह खाता अभिभावक द्वारा खोला जा सकता है। इस योजना में एक वित्तीय वर्ष में न्यूनतम ₹500 और अधिकतम ₹1.5 लाख तक का निवेश किया जा सकता है। PPF खाता 15 वर्षों के लिए खोला जाता है, जिसे बाद में 5 वर्षों की अवधि के लिए बढ़ाया जा सकता है। इस पर ब्याज दर सरकार द्वारा तय की जाती है, जो कि पूरी तरह से टैक्स मुक्त होती है। आयकर की धारा 80C के तहत निवेश पर कर छूट मिलती है और मैच्योरिटी राशि भी पूरी तरह कर मुक्त होती है। इसमें आंशिक निकासी और ऋण की सुविधा भी उपलब्ध होती है। यह योजना उन लोगों के लिए आदर्श है जो सुरक्षित और टैक्स-फ्री रिटर्न की तलाश में हैं।

PPF खाता कहां खोला जा सकता है और आवश्यक दस्तावेज

सार्वजनिक भविष्य निधि (PPF) खाता भारत के किसी भी प्रमुख डाकघर या अधिकृत बैंक शाखाओं में खोला जा सकता है। इसमें स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI), पंजाब नेशनल बैंक (PNB), बैंक ऑफ बड़ौदा (BOB) जैसे सरकारी बैंक और HDFC, ICICI, Axis जैसे कुछ निजी बैंक भी शामिल हैं। आजकल कई बैंकों द्वारा PPF खाता खोलने की ऑनलाइन सुविधा भी प्रदान की जाती है, जिससे खाता खोलना और संचालित करना और भी आसान हो गया है। खाता खोलने के लिए कुछ जरूरी दस्तावेजों की आवश्यकता होती है, जैसे—पहचान पत्र के रूप में आधार कार्ड, पैन कार्ड या पासपोर्ट, और पते के प्रमाण के रूप में बिजली का बिल, बैंक स्टेटमेंट या राशन कार्ड। इसके अतिरिक्त पैन कार्ड अनिवार्य होता है और दो पासपोर्ट साइज फोटो भी लगती हैं। साथ ही, खाता खोलने का फॉर्म और यदि चाहें तो नामांकन (Nomination) फॉर्म भी भरा जा सकता है। ये सभी दस्तावेज़ सत्यापन के बाद बैंक या डाकघर द्वारा PPF खाता खोल दिया जाता है। यह प्रक्रिया सरल, सुरक्षित और आम नागरिक के लिए सुविधाजनक है।

Importance of Critical Thinking & Research Skills in Education

Dr. Madhu Shrimal

Introduction: In an age of information overload and rapid technological advancements, mere accumulation of knowledge is no longer sufficient. Education today must go beyond rote memorization and passive learning. The true pillars of meaningful education are critical thinking and research skills—abilities that empower learners to navigate complex problems, make informed decisions, and contribute creatively to society.

Building Independent and Analytical Minds: Critical thinking nurtures the ability to analyze, evaluate, and synthesize information rather than simply accepting it at face value. It encourages students to ask meaningful questions, challenge assumptions, and assess different perspectives. In doing so, education moves from being teacher-centered to learner-centered, where students develop independent thought processes and a deep understanding of concepts.

Enhancing Problem-Solving Abilities: In both academic and real-world contexts, problem-solving is an essential skill. Critical thinkers are not content with superficial solutions; they seek to identify root causes, weigh alternatives, and predict outcomes. Education that emphasizes critical thinking prepares students to tackle complex issues, both within their fields of study and in broader societal contexts, with logic, creativity, and responsibility.

Fostering a Spirit of Inquiry Through Research Skills: Research skills are closely tied to critical thinking. They teach students how to gather information systematically, assess the credibility of sources, interpret data, and present findings clearly and ethically. Through research, learners are not only consumers of knowledge but also contributors to new knowledge. Developing strong research abilities instills a spirit of inquiry, an openness to new ideas, and a commitment to lifelong learning.

Preparing Students for a Knowledge-Based Economy: Today's job market values employees who can adapt, innovate, and make data-driven decisions. Critical thinking and research skills align closely with these demands, making graduates more competitive and versatile. Whether in science, technology, business, humanities, or social sciences, the ability to think critically and conduct effective research is crucial for career success and societal contribution.

Promoting Democratic Values and Responsible Citizenship: An education system that fosters critical thinking helps cultivate informed, reflective, and responsible citizens. In a democracy, the ability to question, debate, and reason is essential for active participation and the preservation of rights and freedoms. Research skills further ensure that opinions are based on evidence and thoughtful analysis rather than misinformation.

Conclusion: Critical thinking and research skills are not supplementary; they are central to the true purpose of education. They empower students to move beyond memorization toward understanding, creativity, & innovation. As educators, institutions, and policymakers, there is a pressing need to embed these skills deeply into the curriculum, ensuring that learners are prepared not just to succeed academically, but to lead, adapt, and thrive in an ever-changing world.

Scholarships Available at Various Levels

Dr. Swati Pareek

with advanced education, a hurdle that disproportionately affects those without financial privilege.

In this landscape, scholarships emerge as beacons of hope, presenting not just financial aid but also a pathway to transcend economic challenges. Scholarships, bestowed upon meritorious students based on diverse criteria such as academic excellence, financial need, caste, gender, field of study, and regional background, are transformative tools that democratize access to higher education.

Scholarships covers various expenses integral to advanced studies, ranging from laboratory fees and textbooks to accommodation and tuition fees. These scholarships spring out from diverse sources, including central and state governments, private institutions, and non-governmental organizations (NGOs), each playing a vital part in nurturing educational inclusivity and empowerment.

Sr. No.	Scholarship	Eligibility	Benefit
1	Central Sector Scholarship Scheme (CSSS)	Financially disadvantaged students studying further after class 8th.	Annual amount ranging from Rs.10,000 to Rs.20,000.
2	National Means Cum Merit Scholarship (NMMS)	Students of classes 9th to 12th with family income of 1.5 LPA.	12000 per year.
3	AICTE Pragati Scholarship Scheme	Disadvantaged students of technical subjects.	Depends on social categories.
4	AICTE Saksham Scholarship Scheme for Specially-abled Students	Specially-abled students from technical backgrounds.	Maximum 50,000 per year for 4 years.
5	Prime Minister's Research Fellowship	For students undertaking Ph.D in fields like science, technology, engineering, maths, humanities or law.	Up-to 10.92 LPA for 4 years.

The Indian government generously extends a plethora of scholarships, beyond those mentioned above presenting a comprehensive exposition of opportunities accessible through online **platforms like the National Scholarship Portal curated by the National Informatics Centre (NIC)**. This digital gateway serves as a beacon, illuminating pathways to innumerable scholarship programs tailored to diverse aspirations and capabilities. In this virtual realm, deserving individuals discover that the sky is not merely a limit but a canvas upon which their ambitions can soar unhampered.

शिक्षा का लक्ष्य : ज्ञान या सफलता

डॉ. संदीपा सोलंकी
असिस्टेंट प्रोफेसर

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिक्षा का महत्व पहले से ही अधिक बढ़ गया है। शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है। यह न केवल हमें पढ़ना–लिखना सिखाती है बल्कि जीवन जीने की दिशा भी प्रदान करती है। आज के समय में यह सवाल उठता है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या हैं–ज्ञान प्राप्त करना या अक्सर सफलता हासिल करना ? यह दोनों ही शिक्षा के अहम पहलू है।

ज्ञान व्यक्ति के अंदर से उसे सुमृद्ध बनाता है और उसे एक अच्छा इंसान बनने की राह दिखाता है। ज्ञान का अर्थ है – सच्चाई को समझना, सोचने की क्षमता विकसित करना और जीवन के प्रति जागरूक होना। शिक्षा व्यक्ति को विवेकशील बनाती है जिससे वह सही और गलत में अंतर कर सकें। ज्ञान के माध्यम से ही में आत्म विश्वास, आत्म निर्भरता, नैतिकता, चरित्र निर्माण, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जिम्मेदारियों की समझ, रचनात्मक सोच एवं नवाचार की प्रेरणा आदि गुणों का विकास होता है।

आज की शिक्षा प्रणाली में कई बार देखा जाता है कि छात्रों पर केवल अच्छे अंक लाने और प्रतिस्पर्धा में आगे निकलने का दबाव होता है इससे शिक्षा केवल एक दौड बनकर रह जाती है। जहाँ मूलभूत ज्ञान, सोचने की स्वतंत्रता, मूल्यों की शिक्षा पीछे छूट जाती है। ऐसे में सफलता तो मिल जाती है लेकिन वह टिकाऊ नहीं होती है। परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा को अक्सर सफलता से जोड़ा जाता है जैसे अच्छी नौकरी, पैसा, ऊँचा पद और सामाजिक प्रतिष्ठा। इसमें कोई बुराई नहीं है क्योंकि सफलता से व्यक्ति के जीवन में स्थिरता मिलती है। सफलता शिक्षा का परिणाम हो सकती हैं पर यदि यह केवल डिग्रीयों तक सीमित रह जाए और ज्ञान न हो तो वह खोखली बन जाती है।

ज्ञान और सफलता एक–दूसरे के बिरोधी नहीं है बल्कि पूरक है। ज्ञान व्यक्ति के भीतर का प्रकाश है और सफलता बाहरी दुनिया में उसकी पहचान। जब व्यक्ति ज्ञान और सफलल की ओर बढ़ता है, तब उसकी सफलता स्थायी, सार्थक और समाज के लिए उपयोगी बनती है। शिक्षा का सही लक्ष्य ज्ञान और सफलता दोनों होना चाहिए। ज्ञान वह आधार है जिस पर सफलता की इमारत खड़ी होती है। एक सच्चा शिक्षित व्यक्ति वह है जो न केवल जीवन में सफल हो बल्कि समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी बने ।

जब शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान की गहराई प्रदान करती है साथ ही जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल, व्यवहार और दृष्टिकोण सिखाती है, तब वह सच्चे अर्थों में प्रभावी बनती है। एक शिक्षित और सफल व्यक्ति न केवल अपने जीवन को संवारता है बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणा और मागदर्शक बनता है।

महात्मा गाँधी ने शिक्षा को केवल डिग्री या नौकरी पाने का साधन नहीं माना बल्कि आत्मज्ञान और सेवा का माध्यम माना। उन्होंने नैतिक शिक्षा, श्रम का सम्मान और सत्य की खोज को शिक्षा का मूल उद्देश्य बताया। इस प्रकार हमें शिक्षा को इस तरह से संतुलित किया जाना चाहिए कि वह छात्र को गहरी समझ और जीवन कौशल दोनों प्रदान करें। शिक्षा का सही अर्थ ज्ञान की गहराई और सफलतल की ऊँचाई दोनों को प्राप्त करना है।

परीक्षा का दबाव और मानसिक स्वास्थ्य

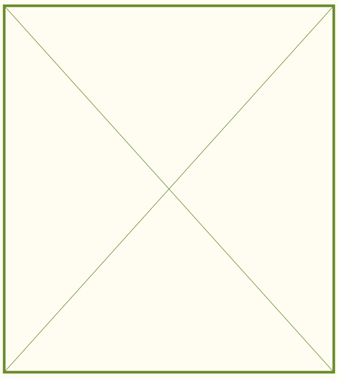

छाया मंडल
B.Ed प्रथम वर्ष

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों पर परीक्षा में अच्छे अंक लाने का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है माता– पिता, समाज और स्वयं की अपेक्षाओं के कारण विद्यार्थी मानसिक तनाव, घबराहट और डर का शिकार हो रहे हैं अधिक सिलेबस, प्रतिस्पर्धा और भविष्य की चिंता इसको और बढ़ा देती है। इसका मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है जिससे विद्यार्थी चिड़चिड़ापन, अवसाद और आत्मविश्वास में कमी जैसी समस्याओं से जूझते हैं। इससे बचने के लिए समय का प्रबंध, योग, व्यायाम, शिक्षक एवं माता–पिता का सहयोग जरूरी है। परीक्षा को अवसर की तरह लेना चाहिए न कि बोझ की तरह। स्वस्थ मानसिकता और आत्मविश्वास से ही बालक अच्छे परिणाम ला सकता है। समाज परिवार और विद्यालय को मिलकर विद्यार्थियों को मानसिक रूप से मजबूत बनाना चाहिए।

प्रतिस्पर्धात्मक दौड़ से भरी इस दुनिया में शिक्षा का महत्व तो हर दिन बढ़ता जा रहा है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने जीवन में अच्छे अंक प्राप्त कर एक सफल भविष्य बनाना चाहता है। परीक्षा विद्यार्थियों के ज्ञान और क्षमता का आकलन करने का एक माध्यम है, लेकिन जहां एक और परीक्षा विद्यार्थियों के लिए अपनी योग्यता दिखाने का अवसर है, वहीं दूसरी ओर यह है उनके जीवन में दबाव और तनाव का कारण भी बन रही है। अधिकतर विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में मानसिक तनाव, घबराहट, बेचौनी और डर का अनुभव करते हैं। कई बार यह इतना बढ़ जाता है कि विद्यार्थी का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होने लगता है कई बच्चे तनाव में आकर आत्महत्या जैसा गंभीर कदम भी उठने लगे हैं। यह केवल उनके लिए नहीं बल्कि उनके माता–पिता और समाज के लिए भी चिंता का विषय है।

क्यों बढ़ रहा है परीक्षा का दबाव ?

आजकल विद्यार्थियों पर पढ़ाई का बोझ पहले से ज्यादा बढ़ गया है। छोटे–छोटे बच्चों से लेकर युवा विद्यार्थियों तक परीक्षा में अच्छे अंक लाने का दबाव बढ़ गया है। कारण क्या है?

- माता–पिता की अपेक्षाएं
- प्रतिस्पर्धा का माहौल
- भविष्य को लेकर चिंता
- पढ़ाई का अत्यधिक बोझ
- समय प्रबंधन की कमी

यह कुछ कारण ऐसे हैं जो विद्यार्थी को कुंठा और तनाव देने लगती है। उसका मानसिक स्वास्थ्य पूरी तरह से प्रभावित होता है। इससे उसमें बहुत सारी समस्याएं उत्पन्न होती है जैसे चिंता, घबराहट, घुटन, चिड़चिड़ापन, एकाग्रता की कमी, नींद की कमी और थकान, पढ़ाई में मन ना लगना, आत्म विश्वास की कमी, डिप्रेशन और नकारात्मकता आदि।कभी–कभी यह बीमारियां इतनी अधिक बढ़ जाती है कि विद्यार्थी आत्महत्या जैसा कदम भी उठा लेता है।

क्या करें परीक्षा के दबाव को कम करने के लिए कुछ ऐसी उपाय हैं जिन से हम परीक्षा की दबाव को कम कर सकते हैं।

- ➢ एक अच्छा टाइम टेबल बनाकर समय का सही प्रकार प्रबंध करें और हर विषय को उचित समय दे।
- ➢ पढ़ाई के बीच में कुछ समय के लिए टहलने, संगीत सुनना या अन्य कोई मनपसंद गतिविधि करे। नियमित योग, प्राणायाम और ध्यान करके मन को शांत रखें और एकाग्रता को बढ़ावा दे
- ➢ सकारात्मक सोच बनाए रखें।
- ➢ खुद पर विश्वास रखें।
- ➢ परीक्षा को अवसर के रूप में ले न कि जीवन के अंतिम परिणाम के रूप में।
- ➢ माता–पिता और दोस्तों से अपनी परेशानी, अपने तनाव को हमेशा साझा करे। इसे मन हल्का होता है। 'भरपूर नींद ले तथा पौष्टिक भोजन खाएं, ताकि शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहा जा सके।

माता–पिता और शिक्षकों की भूमिका

विद्यार्थी को तनाव मुक्त रखने के लिए माता–पिता और शिक्षकों को भी अपने अहम भूमिका निभानी चाहिए। उन्हें बच्चों पर अनावश्यक दबाव नहीं डालना चाहिए। बच्चों को यह भावनाओं को समझना चाहिए। परीक्षा में परिणाम चाहे जैसा भी हो, कोशिश करने को अहमियत देनी चाहिए और अहसास करवाना चाहिए कि सिर्फ अंक लाना सफलता का मापन नहीं है बल्कि आप भविष्य में किस प्रकार सम्मानपूर्ण जीवन जी रहे हैं और आत्मविश्वास के साथ खड़े हैं, कुछ गलत काम नहीं कर रहे हैं, यह सब भी जीवन में जरूरी है। एक शिक्षक को चाहिए कि वह अपने विद्यार्थी को नंबर कम आने पर कभी भी नकारात्मक टिप्पणी न करें, बल्कि उसे और अधिक अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं की परीक्षा वर्तमान समय में विद्यार्थियों को तनाव देती है लेकिन अगर माता–पिता, शिक्षक,समाज, साथी समूह मदद करें तो बालक अपने इस तनाव से उबर सकता है।

नई शिक्षा नीति २०२० : एक नजर

उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है, सुखी जीवन जीने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण तथ्य है। 21वीं सदी में 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव जुलाई 2020 में हुआ, यह नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में सामने आई। यह सिखने वाले की आत्मक्षमता, संज्ञानात्मकता, कौशल पर जोर देता है, बैंग के बोझ को कम करता है, छात्रों के पास अध्ययन विषय चुनने का विकल्प देता है, इस नीति का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बीच नवीन विचारों के समावेश के साथ सहभागिता महत्वपूर्ण सोच तर्क रखने की क्षमता को विकसित करना है नई शिक्षा नीति किसी भी विषय को सीखने के व व्यावहारिक पहलू पर केंद्रित है। इस तरह कौशल विकास को बढ़ावा देती है। पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराना बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देना शिक्षकों को प्रशिक्षित कराना ग्रामीण क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रदान कराना हित धारकों के बीच सहयोग सुनिश्चित करना आदि इसके उद्देश्य है।

मनीषा रैसवाल, B.Ed 1 year

जातिवाद का जहर

– हेमा कुमारी

छोडिये ये जातिवाद का जहर,
गरीबी की चपेट में मर रहे है।
हमारे दलित, किसान और हम,
हम चाहते भी क्या हैं और क्या कर रहे है?
रोजमर्रा की ये जिंदगी बीती नही जाती है,
फिर से उन पर नई घडी के नए संकट छा जाते है।
एक माँ जो पेट काटकर बच्चे को पालती है,
अपने बच्चे को मरते देख कौन माँ सुखी रह पाती है?
कि छोडिएं हाँ छोड़ ही दीजिए,
जाति के नाम पर दंगा–फसाद करना, मारना और जख्म देना।
कि मिलेंगी दुआएं तुम्हें उन मोहताजो की,
जो झोपडियों में रहकर भी अपना गुजारा करते है।
कभी सोचा है तुमने कि तुम क्या चाहते हो?
एक बच्चा जब छोटा होता है तो सोचता है,
मैं देश के लिए कुछ ना कुछ करूंगा
कि सर्वस्व न्यौछावर कर दूंगा मरू या मिट्टू
इस धरती का कर्ज चुकाना है मुझे क्योंकि मैं इसी की तो संतान हूँ।
लुट जाते हैं इस धरा पर वे भी अलग–अलग वर्ग से होते है।
कभी सोचा ना था कि उन्होनें ये मौका मिल पाएगा भी या नहीं
या खाली मेरे मन में ये स्वार्थ की भावना समाकर ही बैठ जाएगी,
कि दिन बदल जाते हैं उनके जो धैर्य रखना सीख जातें है।
वरना शिवजी भी एक पल में गंगा को जटाओं से निकाल देते।
कहते हैं मुसीबतो से लड़ना वीर की पहचान है क्या ये लड़ने देगा उन्हें!
कि अखबारों के कागजों पर बिन प्रकाशित रह जाती है उनकी तस्वीरें
क्या ये छपने देगा उन्हें?
कि इंसान–इंसान का दुश्मन है दोस्त कब बनेगा
और ये जातिवाद का जहर कब तक स्वार्थी होकर बैठ पाएगा?
लोगों को खत्म करना है क्योकि उन्हें जीना है।
वे जानते हैं कि–
"कुछ मठ ही है जो इनसे लाभ पाते है
वरना बहुसंख्यक लोग तो पीडा से गुजर जाते हैं,
अब आप ये क्या कर रहे है?
कि छोड़ दीजिए ना ये जातिवाद का कहर,
कब खत्म होगा ये जातिवाद का जहर?

मां Maa

पूर्वा औदिच्य
B-Ed-II Year

घुटनो से रेंगते रेंगते
कब पैरो पर खड़ी हुई
तेरी ममता की छाव में
ना जाने कब बड़ी हुई

काला टीका दूध-मलाई
आज भी सब कुछ वैसा हैं
एक मैं ही हूं हर जगह
प्यार ये तेरा कैसा हैं ?

सीदी-सादी, भोली-भाली
मैं ही सबसे अच्छी हूं
कितनी भी हो जाऊं बड़ी, मां
मैं आज भी तेरी बच्ची हूं,

कैसा था नन्हा बचपन वो
मां की गोद सुहाती थी,
देख-देख कर बच्चों को वो
फूली नहीं समाती थी।

जरा सी ठोकर लग जाती तो
मां दौड़ी हुई आती थी,
जख्मों पर जब दवा लगाती
आंसू अपने छुपाती थी।

जब भी कोई जिद करते तो
प्यार से वो समझाती थी,
जब-जब बच्चे रूठे उससे
मां उन्हें मनाती थी।

खेल खेलते जब भी कोई
वो भी बच्चा बन जाती थी,
सवाल अगर कोई न आता
टीचर बन के पढ़ाती थी।

सबसे आगे रहें हमेशा
आस सदा ही लगाती थी,
तारीफ अगर कोई भी करता
गर्व से वो इतराती थी।

होते अगर जरा उदास हम
दोस्त तुरन्त बन जाती थी,
हंसते रोते बीता बचपन
मां ही तो बस साथी थी।

मां के मन को समझ न पाये
हम बच्चों की नादानी थी,
जीती थी बच्चों की खातिर
मां की यही कहानी थी।

ट्रैफिक रुल्स

सुगना चंदेल
B.Ed. 1 Year

ट्रैफिक नियमों का पालन करना सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक रहना और जिम्मेदारी से वाहन चलाना आवश्यक है। इससे दुर्घटनाओं को कम किया जा सकता है और सड़कों पर सुरक्षा बढ़ाई जा सकती है। हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग करना अनिवार्य है। पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करने से ट्रैफिक जाम कम हो सकता है। ट्रैफिक सिग्नल और संकेतों का पालन करना चाहिए।

- ट्रैफिक का अर्थ किसी सड़क या मार्ग पर बहनों का आगमन जैसे कि कर ट्रक बस और बाइक।
- ट्रैफिक नियम सड़क पर सुरक्षित और सुव्यवस्थित रूप से यात्रा के लिए बनाए गए नियमों को ट्रैफिक नियम कहते है।
- ट्रैफिक जाम जब किसी सड़क या मार्ग पर वाहनों का आवागमन बाधित होता है तो इस ट्रैफिक जाम कहा जाता है।
- ट्रैफिक नियंत्रण ट्रैफिक को नियंत्रित करने के लिए ट्रैफिक लाइट, ट्रैफिक सिग्नल और ट्रैफिक पुलिस का उपयोग किया जाता है।

ट्रैफिक नियम

1. सीट बेल्ट पहने और हेलमेट लगाए।
2. वाहन की गति नियंत्रण में रखें।
3. ओवरटेक न करे।
4. ट्रैफिक लाइट का अनुसरण करे।
5. शराब पीकर ओर मोबाइल का उपयोग करते हुए गाड़ी न चलाए।

ट्रैफिक चालान कब कटता है ?

1. निर्धारित गति सीमा से तेज गति में गाड़ी चलाने पर 'बिना हेलमेट या सीट बेल्ट की गाड़ी चलाने पर
2. शराब पीकर गाड़ी चलाने पर
3. रेड लाइट जंप करने पर
4. बिना वैध ड्राइविंग लाइसेंस के गाड़ी चलाने पर

ट्रैफिक नियम तोड़ने पर संभावित परिणाम

1. जुर्माना लाइसेंस रद्द होना
2. जेल होना
3. दुर्घटनाएं होना
4. वाहन जप्त करना
5. इंश्योरेंस क्लेम का नुकसान

सुविचार

सोनू वर्मा
B.Ed. 1year

भरोसा खुद पर रखो,
तो ताकत बन जाती है।
और दुसरो पर रखो तो,
कमजोरी बन जाती है।(1)

आप कब सही थे।
इसे कोई याद नहीं रखता
लेकिन आप कब गलत थे,
इसे सब याद रखते है।(2)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बौद्धकालीन शिक्षा के मूल्यों का समावेश

— डॉ. अंजना शर्मा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर

बौद्धकालीन शिक्षा मानव कल्याण से जुड़ी हुई है। यह मानव मूल्यों को जाग्रत करने तथा मानव मूल्यों को स्थापित करने में समर्थ है। बौद्ध दर्शन एक विचार को संदर्भित करता है, जिसमें बौद्ध धर्म की दार्शनिक और आध्यात्मिक शिक्षाएं और अभ्यास शामिल हैं। बौद्धकालीन शिक्षा की अवधारणाएं वर्तमान परिवेश में प्रासंगिक है जैसे सभी धर्म व जातियों के बालकों हेतु समान शिक्षा के अवसर, उच्च शिक्षा में महिलाओं का प्रवेश, व्यावसायिक शिक्षा, लाभप्रद विषयों की शिक्षा, बालकों हेतु सैद्धांतिक व व्यावहारिक शिक्षा की व्यवस्था, खेलकूद एवं शारीरिक शिक्षा आदि । आज आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का जो स्वरूप हम देख रहे हैं उसकी नींव बौद्धकालीन शिक्षा ही है। यदि यह कहा जाए कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का शुभारम्भ बौद्धों से ही हुआ है तो गलत न होगा। बौद्ध युग में शिक्षा को तीन स्तरों – प्राथमिक, उच्च और भिक्षु शिक्षा में बांटा गया था। बौद्ध शिक्षा के आधार पर ही वर्तमान में शिक्षा को पूर्व प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और विशिष्ट अनेक स्तरों में विभाजित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 के अध्याय 4 में प्राथमिक, मिडिल, सेकेण्डरी तथा उच्चतर शिक्षा को वर्णित किया गया है।

बौद्धकालीन शिक्षा की विशेषताएं एनईपी–2020 के संदर्भ में

1.कला कौशल एवं व्यावसायिक शिक्षा–

बौद्ध युग की शिक्षा प्रणाली में कला–कौशल व व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था, जिसका प्रभाव हम आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में देख सकते हैं। बौद्ध युग में विद्यार्थी को व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत– हस्तशिल्पों की शिक्षा, भवन निर्माण, चित्रकला, लाभप्रद व्यवसायों की शिक्षा, प्राविधिक व वैज्ञानिक शिक्षा तथा चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। आज जब भारत 'आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना' को साकार करने के लिए प्रयत्नशील व दृढ़संकल्पित है तब प्रत्येक विद्यार्थी को भारत के सपने को पूरा करने हेतु प्रयासरत होना चाहिए। इस संकल्पना को विद्यार्थी उपरोक्त कलाओं के सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान में दक्षता प्राप्त करके ही पूरा कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के बिन्दु 16.4 में व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत–स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालय चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्य धारा की शिक्षा में एकीकृत करने की बात की गई है। एनईपी–2020 का उद्देश्य प्रत्येक बालक कम से कम एक व्यवसाय में दक्षता प्राप्त करे तथा श्रम की महत्ता को समझते हुए अन्य भारतीय कलाओं व व्यासायों की ओर उन्मुख हो। एनईपी–2020 में समग्र और बहुविषयक शिक्षा की बात की गई है जिसमें व्यावहारिक कौशल पर बल दिया गया हैं। विभिन्न कलाओं के ज्ञान को भारतीय शिक्षा का अंग बनाकर 21वीं शताब्दी में आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार किया जा सकता है।

2.तकनीकी शिक्षा–

बौद्ध काल में प्रचलित 19 शिल्प कलाओं का ज्ञान विद्यार्थी को दिया जाता था जिनका संबंध वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा से था। आखेट, चिकित्सा, भविष्य कथन, मृत व्यक्तियों को जीवित करने की शिक्षा, पशुओं की बोलियों को समझने की कला, इन्द्रियों पर नियंत्रण करने की कला तक्षशिला में प्रदान की जाती थी। NEP-2020 के अध्याय 23.1 में भी प्रौद्योगिकी–आर्टिफिशियल इंटेजीजेंस, मशीन लर्निंग, स्मार्ट बोर्ड, हस्तसंचालित कम्प्यूटर आदि के प्रयोग पर बल दिया गया है।

3. जनसामान्य की शिक्षा–

बौद्ध काल में सभी वर्गों के बच्चों को शिक्षा प्राप्ति का अधिकार था। प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था भी थी। कहने का आशय यह है कि बौद्ध काल में जनशिक्षा को बढ़ाने के प्रयास भी किये गये थे। डॉ. आर. के. मुखर्जी के शब्दों में ''बौद्ध शिक्षा केन्द्रों में विभिन्न वर्गों, विभिन्न जातियों और विभिन्न परिस्थितियों में पले बालकों के साथ बिना किसी भेदभाव के पारिवारिक सम्पर्क स्थापित करते थे और ज्ञान का अर्जन करते थे। बालक बालिकाओं को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त थे। बौर शिक्षा के द्वार सभी धर्मों, वर्गो और जातियों के बालकों के लिए खुले थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय 6 में कहा गया है कि प्रत्येक नागरिक को अपने सपने संजोने, विकास करने और राष्ट्रहित में योगदान करने का अवसर उपलब्ध हो। यह शिक्षा नीति इस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ती है कि किसी भी बच्चे की सीखने और आगे बढ़ने के अवसरों में उसकी जन्म या पृष्ठभूमि से संबंधित परिस्थितियां बाधक न बने।

4. खेलकूद व शारीरिक व्यायाम –

बौद्ध काल में छात्रों के मानसिक और नैतिक विकास के साथ–साथ शारीरिक विकास को भी महत्व दिया जाता था। उपरोक्त उद्देश्य पूर्ति हेतु विद्यार्थियों को अनेक प्रकार के खेल–कूद व शारीरिक व्यायाम कराये जाते थे। कुश्ती लड़ना, मुक्केबाजी, धनुर्विधा, रथों की दौड़, भूमि जोतना आदि क्रियाओं को विद्यार्थी के शारीरिक विकास का आधार माना जाता था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय 12 के 12. 9 बिन्दु में भी उच्चतर गुणवत्ता शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं के लिए जीवंत कैंपस का होना आवश्यक बताया गया है जिसे विविध क्लब–खेल संस्कृति/कला क्लब, पर्यावरण क्लब, सामुदायिक सेवा परियोजना में छात्रों की सक्रिय भागीदारी से बालक को एक तनावमुक्त व स्वस्थ वातावरण प्रदान करने की बात की गई है। खेलकूद व शारीरिक व्यायाम का महत्व न केवल बौद्धकाल बल्कि एनईपी–2020 में भी बालक के विकास हेतु आवश्यक माना गया है।

5. शिक्षा का जनतंत्रीय आधार–

बौद्धकालीन शिक्षा को जनतंत्रीय आधार प्रदान किया गया था। सभी जातियों के बालकों और बालिकाओं को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए गए थे। विभिन्न वर्ग, जाति तथा विविध परिस्थितियों में पोषित बालकों के लिए बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्रदान की जाती थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय 6 में कहा गया है कि भारत देश के किसी भी बच्चे को सीखने और आगे बढ़ने के अवसरों में उसकी जन्म या पृष्ठभूमि से संबंधित परिस्थितियों को बाधक नहीं माना जाएगा। एनईपी–2020 के अध्याय 14 में भी उच्चतर शिक्षा में समता और समावेश बिन्दु में भी सभी के लिए उच्चतर गुणवत्ता युक्त शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना सर्वोच्च प्राथमिकता में रखा गया है।

6. उद्देश्य–

बौद्धकालीन शिक्षा के उद्देश्यों का अवलोकन करने पर यह तथ्य प्रकाश में आता है कि बौद्धकाल की शिक्षा व्यवस्था में बालक के नैतिक, शारीरिक, मानसिक विकास के साथ–साथ आत्मसंयम, आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान तथा विवेक आदि गुणों के विकास को सर्वोपरि रखा गया था। बालक का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य था। एनईपी–2020 में भी विद्यार्थियों के समग्र विकास के बारे में कहा गया है। शिक्षा का उद्देश्य एक बालक के न केवल संज्ञानात्मक पक्ष को मजबूत बनाना है बल्कि चरित्र निर्माण के साथ मुख्य कौशलों का ज्ञान तथा विकास कराना भी सम्मिलित है।

7. पाठ्यक्रम–

बौद्धकालीन शिक्षा के पाठ्यक्रम की बात करें तो उसमें सभी विषयों को सम्मिलित करने के साथ ही पाठ्य

सहगामी क्रियाओं को व्यक्तित्व निर्माण हेतु आवश्यक माना गया था। एनईपी–2020 के अध्याय 4 में भी प्रायोगिक अधिगम की सहायता से बालक की समझ को विकसित करने तथा बालक के ज्ञान स्थायीकरण के लिए करके सीखना विधि का अनुकरण करने की बात की गई है।

बौद्ध दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

● छात्र–अध्यापक संबंध

बौद्ध काल में छात्र अध्यापक संबंधों की डोर मजबूत थी किन्तु आज इस रिश्ते का धागा बहुत कमजोर पड़ चुका है। आज भी बहुधा छात्र और शिक्षक के संबंध भावप्रधान न होकर अर्थप्रधान हो गये हैं। दोनों ही अपने कर्तव्यों का निर्वहन ठीक प्रकार से नहीं निभा रहे हैं। इस समस्या के समाधान की बात की जाये तो बौद्ध शिक्षा प्रणाली की दस सिखानि अर्थात् दस शिक्षाओं का पालन यदि आज का विद्यार्थी करें तो विद्यालय साम्प्रदायिक हिंसा के गढ़ न बनकर विद्या का पवित्र मंदिर बन जाएंगे। अतः शिक्षक व छात्र दोनों को अपने कर्तव्यों तथा आचरण पर ध्यान देना चाहिए।

● शिक्षण प्रक्रिया

बौद्धकालीन शिक्षा प्रणाली का अवलोकन करने पर यह बात सामने आती है कि शिक्षण का कार्य अध्यापक और विद्यार्थी के बीच अंतक्रिया के माध्यम से होता था। महत्वपूर्ण विचारों पर संवाद हुआ करते थे। कहने का आशय यह है कि शिक्षण के दौरान अध्यापक व विद्यार्थी पूर्ण रूप से सक्रिय रहते थे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो आज शिक्षा बालकेन्द्रित हो चुकी है ऐसी स्थिति में शिक्षण प्रक्रिया के दौरान अध्यापक के साथ–साथ बालक की सक्रिय भागीदारी से ही शिक्षण उद्‌देश्य की प्राप्ति संभव है।

● योग

बौद्ध शिक्षा में योग को मानसिक शांति हेतु एक आवश्यक अभ्यास माना गया था जिसके द्वारा व्यक्ति शरीर, मन तथा आंतरिक शांति व इन्द्रियों पर नियंत्रण करने में सक्षम होता था। वह पूर्ण एकाग्रता के साथ विचारों का चिंतन–मनन करता था। वर्तमान में योग की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय व महाविद्यालय स्तर पर इसके अभ्यास पर बल दिया जा रहा है। योग की शक्ति को पहचानते हुए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की पहल भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 में की थी। उनकी दृष्टि में योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है और इस अमूल्य उपहार से तन तथा अंतरात्मा को शुद्ध किया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ–

बौद्धकालीन शिक्षा तथा आधुनिक शिक्षा के बीच अनेक वर्षों का अंतराल होने के बावजूद भी बौद्धकालीन शिक्षा में निहित अनेक विशेषताओं को आधुनिक शिक्षा में समाहित किया जाए तो काफी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। बौद्धकालीन शिक्षा में निहित अनेक आदर्श–छात्रों का सादा जीवन, ब्रह्मचर्य पालन, गुरू शिष्य का मर्यादित व्यवहार, आत्मानुशासन, गुरूओं के प्रति श्रद्धा व सम्मान की भावना आदि अनुकरणीय बातें शैक्षिक वातावरण को स्वस्थ बनाने में सहायक हो सकती हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में बौद्धकालीन शिक्षा की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए इन्हें एनईपी–2020 में भी ग्रहण किया गया है। अतः बौद्ध दर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थक है। इसमें निहित आदर्शो को प्रत्येक भारतीय को अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए।

संदर्भ–

1.सिंह डॉ. वी. बी., पहुजा सुधा, भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, पृष्ठ सं. 57,58

2. त्यागी डॉ. गुरूसरन, भारतीय शिक्षा का परिदृश्य, पृष्ठ सं. 26

3. गुप्ता डॉ. एस. पी, भारतीय शिक्षा का इतिहास,विकास एवं समस्यायें, पृष्ठ सं. 26

मेरा पहला प्यार: मेरी माँ

– सोनम भारती

इस छोटे से मुख से मां कैसे करदूं तेरा गुणगान।
तेरे आगे फीका फीका लगता है मुझको भगवान।।

मां तू ही तो थी जिसने 9 माह वनज उठाया था।
जब आंख खुली सबसे पहले मां तुझको
ही तो पाया था।।

दुनिया की मैं क्या बात करूं सब तुझमें ही समाया था।
मेरा चेहरा देखके तेरा चेहरा कैसे मुस्कराया था।।

जब उंगली पकड़ के पापा ने मुझे चलना सिखाया था।
वो तू ही तो थी जिसने मुझे गिरने से बचाया था।।

निर्भया की घटना ने कैसे तहलका मचा रखा है।
इस दिन मुझे यह बात समझ आयी।।

कि तूने मुझे इस दुनिया मैं कैसे बचा रखा है।
महारानी लक्ष्मीबाई थी–2 मराठन वो आई थी।।

अपने लाल को पीछे बांध शत्रु से लडना
दिखलाई थी।।

सृजन

एस.एस.जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्य
एयरपोर्ट रोड, सांगानेर, जयपुर
आपका हार्दिक अभिनन्दन करता है।

Latitude: 26.820346
Longitude: 75.813516
Elevation: 409.47±27 m
Accuracy: 171.7 m
GPSTime: 30-01-2025 11:40:10 am
Time zone: GMT+05:30

Latitude: 26.820598
Longitude: 75.813146
Altitude: 359.4±6 m
Accuracy: 52.9 m
GPSTime: 30-01-2025 11:41:21 am
Time zone: GMT+05:30
Note: S.S. JAIN SUBODH MAHILA SHIKSHAK PRASHIKSHAN MAHAVIDYALAYA

अभिव्यक्ति

Diya Panchori

Bhumi Jhonwal

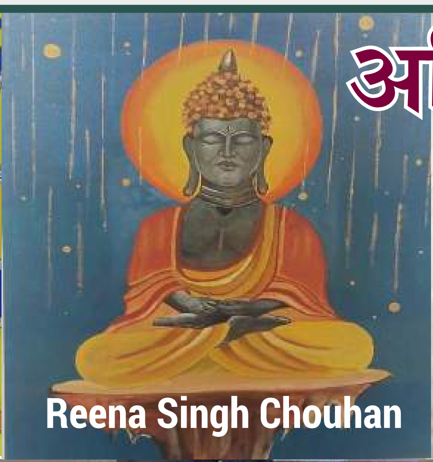
Reena Singh Chouhan

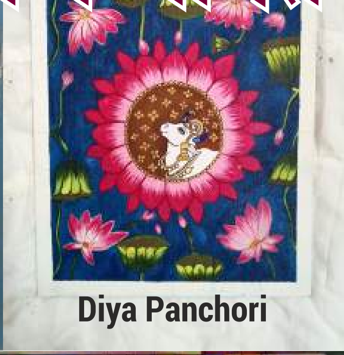
Diya Panchori

Sofia

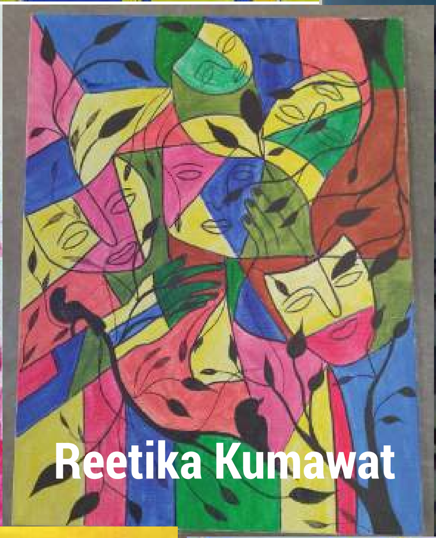
Reetika Kumawat

Reena Singh Chouhan

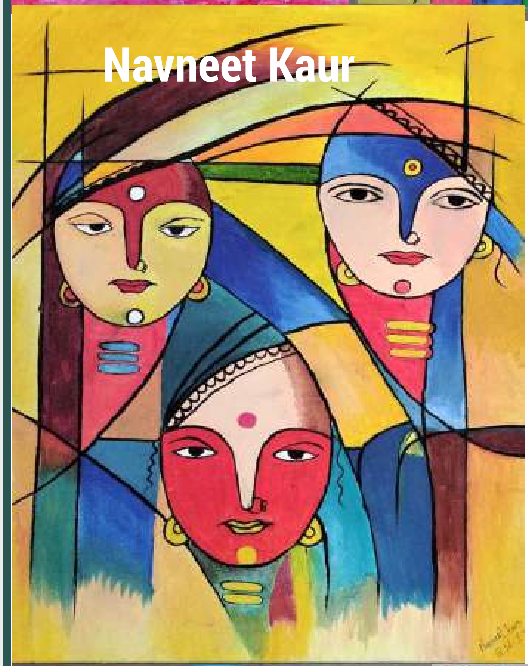
Navneet Kaur

Monica Sharma

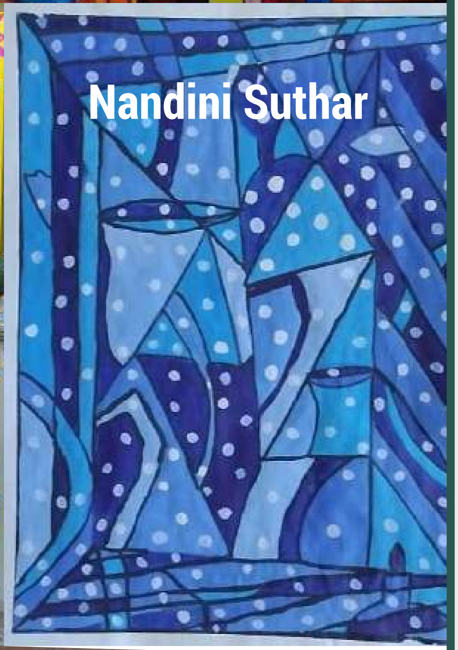
Nandini Suthar

Sahiba

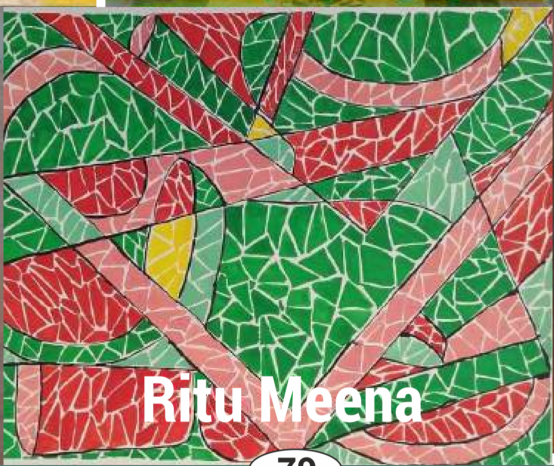
Ritu Meena

Alisha Bano

आरोहण

आरोहण

वेताम्बर स्थानकवासी जैन सुबोध शिक्षा समिति,
MAHILA
SHIKSHAK
MAHILA
SHIKSHAK

एस.एस.जैन सुबोध महाविद्यालय मे नंदोत्सव मनाया

णमोकार मंत्रोच्चारण के साथ हुआ कार्यक्रम का शुभारंभ

जयपुर । एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सांगानेर, जयपुर के रत्नायन सभागार में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को नंदोत्सव के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ णमोकार मंत्रोच्चारण के साथ महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा द्वारा माँ सरस्वती एवं श्रीकृष्ण के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। श्री कृष्ण की बाल लीलाओं व रसरंग को प्रस्तुत करते हुए छात्राओं द्वारा एकल भजन, सामूहिक भजन, एकल नृत्य, युगल नृत्य तथा सामूहिक नृत्यों के साथ माहौल को भक्तिमय, संगीतमय व आनन्दमय बनाया गया।

ओ कान्हा अब तो मुरली की मधुर अच्युतम् केशवम कान्हा सो जा जरा, मधुबन में जो कन्हैया, वो किशना है...इत्यादि की धुन पर बी.एड., बी.ए. बी.एड., बी.एससी. बी.एड., डी.एल.एड. की छात्राओं ने अपने मनमोहक भजनों व नृत्यों से श्रीकृष्ण का आह्वान किया। अपने उद्बोधन में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ.श्रीमती यदु शर्मा ने कहा कि श्री कृष्ण को प्रेम इसलिये करते है क्योकि उनके हाथ में कोई अस्त्र-शस्त्र नही है, बांसुरी है जो मधुरता की प्रतीक है और जीवन को सुकून प्रदान करने वाली है। कृष्ण के जीवन के दो ही मूल मंत्र थे प्रेम व करूणा जो व्यक्ति कृष्ण भक्ति करना चाहता है उसे प्रेम एवं करूणा को अपनाना चाहिये। आज भी जिनकी मति-यति न्याय संगत होती है उनको जीवन नैया श्री कृष्ण ही चलाते है। कार्यक्रम का समापन श्रीकृष्ण की आरती, जयकारे व सभी को धन्यवाद ज्ञापित कर किया गया।

नवकार मंत्र से जीवन में सुख, शांति व समृद्धि : डॉ . यदु शर्मा

जयपुर. सांगानेर स्थित एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के रत्नायन सभागार में जीतो जयपुर एवं एसएस जैन सुबोध शिक्षा समिति रामबाग जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में विश्व नवकार महामंत्र दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। इस दौरान कॉलेज प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा व समस्त स्टॉफ सदस्यों तथा महाविद्यालय की 100 छात्राध्यापिकाओं द्वारा नवकार मंत्र का जाप किया गया। इस अवसर पर डॉ. यदु शर्मा ने कहा कि विश्व कल्याण की भावना से किया गया नवकार मंत्र का यह जाप हमारे जीवन में सुख, शांति व समृद्धि को प्रदान करेगा। इस अवसर पर डॉ. रेणु अरोड़ा, डॉ. ज्योति गौतम सहित अन्य अतिथि एवं स्टाफकर्मी उपस्थित रहे।

एस.एस. जैन सुबोध महिला टी.टी. कॉलेज में लैंगिक संवेदीकरण विषय पर कार्यक्रम आयोजन

समाज में लैगिंग समानता की भावना उत्पन्न करना जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाना

जयपुर. महाविद्यालय की आईक्यूएसी तथा राजस्थान विश्वविद्यालय महिला संस्था (रूवा) के संयुक्त तत्वावधान में लैंगिक संवेदीकरण विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में लैंगिक आधार पर होने वाले भेदभाव को रोके जाने के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास एवं कानूनों के बारे में बालिकाओं एवं महिलाओं को अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाना। कार्यक्रम का प्रारंभ णमोकार मंत्र तथा माँ सरस्वती की पूजा अर्चना के साथ किया गया। कार्यक्रम की स्वागत श्रृंखला में उपस्थित मुख्य अतिथिगण प्रो. शशिकला पुरी (अध्यक्षा, रूवा) डॉ. प्रिया (संयुक्त सचिव, रूवा) डॉ. प्रतिभा सिंह रवू (सह-संयोजिका, रूवा) प्रो. बीना अग्रवाल (पूर्व अध्यक्षा, रूवा) का हरित स्वर्ण, तथा स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत किया।

निःस्वार्थ सेवाओं की आहुति देवतुल्य कार्य : यदु शर्मा

अतिथियों का स्वागत शब्द सुमनों के माध्यम से करते हुए प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा ने कहा कि रूवा स्वयं में महिला सशक्तिकरण का जीता जागता उदाहरण है, क्योंकि राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रबुद्ध महिला प्रो. इस संगठन के माध्यम से समाज में नारी सशक्तिकरण जैसे यज्ञ स्वरूप कार्य में अपनी निःस्वार्थ सेवाओं की आहुति दे रही है। ये सभी अतिथिगण देवतुल्य है। प्राचार्या महोदया ने रूवा को धन्यवाद देते हुए कहा कि आज का दिन एक इतिहास बनने जा रहा है क्योंकि यह अपनी स्वर्ण जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में महाविद्यालय को साक्षी बना रहा है। प्रो. शशिलता पुरी ने अपने उद्बोधन में सभी को नव वर्ष और राजस्थान दिवस की शुभकामनाएं दी तथा प्राचार्या महोदया को आज के कार्यक्रम के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि रूवा ने 8 मार्च 2025 को अपनी 50 वर्ष की यात्रा पूरी की और वर्तमान में राष्ट्रीय महिला आयोग ने इसे लघु राष्ट्रीय महिला आयोग की संज्ञा दी जो एक उपलब्धि है।

इन्होंने बताया कि आज के कार्यक्रम का उद्देश्य लिंग भेद मुक्त समाज की स्थापना हेतु समाज को जागरूक करने के लिए प्रयास करना है। समन्वयक डॉ. रेणु अरोड़ा ने सभी अतिथिगण का धन्यवाद ज्ञापित किया। अंत में कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

भेदभाव को रोकने के लिए लैंगिक संवेदीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम

जयपुर, समाचार जगत न्यूज. एस.एस. जैन सुबोध महिला टी.टी. कॉलेज के रत्नायन सभागार में महाविद्यालय की आईक्यूएसी तथा राजस्थान विश्वविद्यालय महिला संस्था (रूवा) के संयुक्त तत्वावधान में लैंगिक संवेदीकरण विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में लैगिक आधार पर होने वाले भेदभाव को रोके जाने के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास एवं कानूनों के बारे में बालिकाओं एवं महिलाओं को अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाना है। प्राचार्य डॉ. यदु शर्मा ने कहा कि रूवा स्वय में महिला सशक्तिकरण का जीता जागता उदाहरण है, क्योंकि राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रबुद्ध महिला प्रो इस संगठन के माध्यम से समाज में नारी सशक्तिकरण जैसे यज्ञ स्वरूप कार्य में अपनी निःस्वार्थ सेवाओं की आहुति दे रही है। प्रो शशिलता पुरी ने बताया कि रूवा ने 8 मार्च 2025 को अपनी 50 वर्ष की यात्रा पूरी की और वर्तमान में राष्ट्रीय महिला आयोग ने इसे लघु राष्ट्रीय महिला आयोग की सझा दी जो एक उपलब्धि है। रूवा की संयुक्त सचिव डॉ प्रिया ने भारतीय समाज में व्याप्त जेण्डर आधारित भेदभाव को सरल और सहज भाषा में पीपीटी व विडियो क्लिपिंग के माध्यम से बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जिसके कारण सम्पूर्ण सत्र अत क्रियात्मक रहा। उन्होंने दैनिक व्यवहार में वेशभूषा के रग, खिलौने, बातचीत के आधार पर किये जाने वाले भेदभाव को बताया।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनुकूलता का भाव लेकर कौशल के प्रति समर्पण का भाव पैदा करना ही समाजोपयोगी शिविर का मूल उद्देश्यः डॉ यदु शर्मा

जयपुर। सांगानेर स्थित एस एस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में बीएड प्रथम वर्ष, बीए बीएससी बीएड द्वितीय वर्ष का छह दिवसीय समाजोपयोगी उत्पादन कार्य के समारोह का समापन किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ में णमोकार मंत्र एवं मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। 6 दिवसीय कार्यशाला में छात्रों के द्वारा पीपीटी प्रस्तुतीकरण किया गया। इस अवसर पर समाज के प्रति उत्तरदायित्व का एहसास करवाने, समाज का एक उपयोगी एवं कर्तव्यनिष्ट सदस्य बनाने के उद्देश्य से आयोजित कार्यशाला में जीवन का पेड़ उडी टेक्स्ट, मोर, टिशू पेपर, रंगोली, ब्लू पॉटरी बैड की बोतलें शाहिद अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस मौके पर कार्यशाला में छात्राओं के द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं का प्राचार्य यदु शर्मा ने अवलोकन कर उनके कार्य की सराहना की। इस

अवसर पर आयोजित समर्पण कार्यक्रम में छात्राओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्र रिया भारती ने एकल नृत्य प्रस्तुति से वातावरण को संगीत में बना दिया। छात्राध्यापिका लक्ष्मी, रिशिता शर्मा, मनीषा के ग्रुप के द्वारा सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

कबाड़ से बनाए जुगाड़...

इस अवसर पर प्राचार्य डॉ यदुशर्मा ने कहा कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अनुकूलता का भाव लेकर कौशल के प्रति समर्पण पैदा करना इस शिविर मेंका प्रमुख उद्देश्य है। कबाड़ से जुगाड़ का संदेश देते हुए कहा की अपनी संस्कृति का विकास किस प्रकार किया जाए की यह समाजोपयोगिता साबित हो जाए। उन्होंने कहा कि इस शिविर का उद्देश्य हुनर को प्रोत्साहित कर स्वच्छ वातावरण में स्वच्छ पर्यावरण एवं सभ्य समाज का निर्माण कर छात्राओं को वर्तमान समय की मांग के अनुसार कोसलताधारित शिक्षक बनाकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विद्यार्थियों में मौलिकता, रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता जैसे गुणों को विकसित करना है।

क्विज प्लस 'ब्रेन बैटल नॉलेज विद फन' कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर,(ब्यूरो): सांगानेर स्थित एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सभागार में फर्स्ट इंडिया प्लस एंटरटेनमेंट ओटीटी चैनल के तत्वावधान में क्विज प्लस 'ब्रेन बैटल नॉलेज विद फन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विधिवत् प्रारंभ महाविद्यालय प्राचार्या एवं अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा व सुबोध गर्ल्स पीजी कॉलेज प्राचार्या डॉ. रीटा जैन ने विशेषज्ञ क्विज मास्टर सेवानिवृत्त आईएएस महेन्द्र सुराणा का हरितपर्ण व स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया। कार्यक्रम के अन्तर्गत त्यौहार, समसामयिक घटनाओं व राजनीति से जुड़े प्रश्न पूछे गए। छात्राध्यापिकाओं द्वारा प्रश्नों का जवाब उत्साह एवं उदाहरणों द्वारा दिए गए। कार्यक्रम को रंगारंग बनाने के लिए छात्राओं द्वारा एकल नृत्य, समूह नृत्य, गायन एवं कविता पाठ की सुन्दर प्रस्तुतियां शिक्ष दी गई, जिससे कार्यक्रम में मनोरंजकता व सौन्दर्यता के दर्शन किए गए। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में पक्षियों के लिए लगाए परिण्डे

पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने का छात्राओं को दिया संदेश

जयपुर. सांगानेर स्थित एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में रेड रिबन क्लब एवं एनएसएस क्लब के तहत ग्रीष्म ऋतु में बेजुबान पक्षियों की व्यथित पीड़ा को दृष्टिगत रखते हुए महाविद्यालय संयोजक अनिल गोखरू एवं प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा ने परिण्डे लगाकर पक्षियों के प्रति मानवीय संवेदना एवं कर्तव्य के भाव को छात्राओं में प्रसारित किया। इस अवसर पर उन्होंने छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के लिए पर्यावरण एवं स्वास्थ्य जागरूकता का संदेश देती हुई स्लोगन पट्टी का विमोचन कर, वैंचो पर पट्टिका लगाई। संयोजक अनिल कुमार गोखरू द्वारा वृक्षारोपण कर हरित सुबोध, स्वस्थ सुबोध का संदेश दिया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज एवं पर्यावरण के प्रति छात्राओं के मध्य कर्त्तव्य बोध का प्रसारण करना एवं समाज को देने के भाव का संदेश सम्प्रेषित करना था।

दूरियां दिल व दिमाग दोनों में ही उचित नहीं होती : डॉ. यदु शर्मा

जयंती पर गांधी जी व शास्त्री जी को किया याद

जयपुर। सांगानेर स्थित एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में बुधवार को रत्नायन सभागार में गांधी जयंती एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय में संचालित अनुष्ठानम् क्लब के अन्तर्गत संचालित पांच क्लबों में से मनिकानन्दम् क्लब के तहत आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण रूप में णमोकार मंत्र व वीणापाणि मां शारदे के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। महाविद्यालय में संचालित सभी पाठ्यक्रमों की छात्राध्यापिकाओं द्वारा पोस्टर, कविता पाठ, पीपीटी प्रस्तुतीकरण के माध्यम से महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री के जीवनवृत व कार्यों के बारे में बताया। साथ ही पोस्टर्स के माध्यम से स्वच्छ भारत की संकल्पना को भी जीवंत किया। महाविद्यालय की प्रिंसिपल डॉ. यदु शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि गांधी जी बहुत बड़े दार्शनिक थे एवं अपने विचारों से सभी को प्रभावित करते थे। इसी प्रकार लाल बहादुर शास्त्री द्वारा 'जय

जवान, जय किसान' नारे से किसानों को देश की शान कहा गया है।

मधु मोदी ने स्वच्छता के लिए किया प्रेरित

महाविद्यालय की संयोजिका श्रीमती मधु मोदी ने अपने उद्बोधन में सभागार में उपस्थित सभी को स्वच्छ भारत के लिए स्वयं से पहल करने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हम जब भी बाहर जाएं अपने साथ एक थैला अवश्य रखें, जिसमें व्यर्थ का सामान डालते रहें और उचित कचरा पात्र मिलने पर उसमें डाल दें। उन्होंने दूसरे व्यक्तियों द्वारा कचरा फैलाने पर उन्हें रोकने पर भी झिझकना नहीं चाहिए। संयोजिका ने जैन्सनु अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिता टेक्नोफेस्ट कुकिंग प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया। छात्राओं ने पुरस्कार स्वरूप तीन हजार रुपए का चैक, प्रतीक चिन्ह व प्रमाण पत्र प्राप्त किया। तत्पश्चात संयोजिका ने छात्राओं द्वारा निर्मित पोस्टर्स का अवलोकन किया व उनकी प्रशंसा की। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा ने अपने उद्बोधन को दूरी से प्रारम्भ करते हुए बताया कि दूरियां दिल व दिमाग दोनों में ही उचित नहीं होती है। अपनी इसी सोच को उन्होंने कोरोना महामारी के आइसोलेशन से स्पष्ट कर पुष्टि प्रदान की। साथ ही उन्होंने वैचारिक स्वच्छता पर भी बल दिया एवं सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास न करने की सलाह दी, जब तक हम स्वयं उस बात की पुष्टि ना कर लें। प्राचार्या ने स्वयं के साथ दूसरों के जीवन को भी सुंदर बनाने का संकल्प लेने की बात कही। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया।

अमृत वृक्षारोपण महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

वृक्षारोपण ही जीवन का आधार, एक पेड़ जरूर लगाएं : यदु शर्मा

एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में छात्राओं को किया जाग्रत

जयपुर (ब्यूरो)। एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सांगानेर जयपुर में अमृत वृक्षारोपण महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन पेड़ लगाने का संकल्प, प्रकृति संरक्षण का यही विकल्प की तर्ज पर किया गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय संयोजिका मधु मोदी, महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा व सुबोध पी.जी. गर्ल्स कॉलेज की प्राचार्या डॉ. रीटा जैन ने वृक्षारोपण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संयोजिका मधु मोदी ने सभी छात्राओं एवं महाविद्यालय स्टॉफ को एक-एक वृक्ष लगाने का संकल्प लिया। महाविद्यालय प्राचार्या ने इस अवसर पर कहा कि वृक्षारोपण ही जीवन का आधार है। अतः आप सभी को एक वृक्ष माँ के नाम के संकल्प के साथ प्रकृति संरक्षण को साकार रूप प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए व साथ ही साथ अपने आस-पड़ोस में भी जनजागृति लाने हेतु प्रेरणा प्रदान की जानी चाहिए।

सुबोध महाविद्यालय में गांधी-शास्त्री जयंती उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजन हुआ

जयपुर,(ब्यूरो)। सुबोध महा विद्यालय के रत्नायन सभागार में "गांधी जयंती एवं लाल बहादुर शास्त्री" के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय में संचालित अमृतानन्दम् क्लब के अन्तर्गत संचालित पांच क्लबों में से वर्णिकानन्दम क्लब के तहतआयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ पंरपरागत रूप में णमोकार मंत्र व वीणापाणि मां शारदे के समक्ष दीप प्रजज्वलित कर किया गया। महाविद्यालय में संचालित सभी पाठ्यक्रमों की छात्राध्यापिकाओं द्वारा पोस्टर, कविता पाठ, पी.पी.टी. प्रस्तुतीकरण के माध्यम से महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री के जीवनवृत्त व कार्यों के बारे में बताया साथ ही पोस्टर्स के माध्यम से स्वच्छ भारत की संकल्पना को भी जीवंत किया। गांधी जी बहुत बड़े दार्शनिक थे एवं अपने विचारों से सभी को प्रभावित करते थे। इसी प्रकार लाल बहादुर शास्त्री द्वारा "जय जवान, जय किसान" नारे में किसानों को देश की जान कहा गया है। महाविद्यालय की संयोजिका श्रीमती मधु मोदी भी कार्यक्रम में उपस्थित रही। उन्होनें अपनी उद्बोधन में सभागार में उपस्थित सभी को स्वच्छ भारत हेतु स्वयं से पहल करने हेतु प्रेरित किया। उन्होनें कहा कि हम जब भी यात्रा करें अपने साथ एक थैला अवश्य रखें जिसमें व्यर्थ का सामान डालते रहें और उचित कचरा पात्र मिलने पर उसमें डाल दे। उन्होनें दूसरे व्यक्तियों द्वारा कचरा फैलाने पर उन्हें टोकने पर भी झिझकना नहीं चाहिए ऐसी प्रेरणा प्रदान की। संयोजिका महोदया ने खठव अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिता ळएउलटडफ्ळे में कुकिंग प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को साधुवाद दिया। छात्राओं ने पुरस्कार स्वरूप तीन हजार रू का चैक, प्रतीक चिन्ह व प्रमाण पत्र प्राप्त किया तत्पश्चात संयोजिका महोदया ने छात्राओं द्वारा निर्मित पोस्टर्स का अवलोकन किया व उनकी अत्यधिक प्रशंसा की। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा ने अपने उद्बोधन को दूरी से प्रारम्भ करते हुए बताया कि दूरियां दिल व दिमाग दोनों में ही उचित नहीं होती है। अपनी इसी पीड़ा को उन्होनें कोरोना त्रासदी के आइसोलेशन से सम्बद्ध कर पुष्टि प्रदान की साथ ही उन्होनें वैचारिक स्वच्छता पर भी बल दिया एवं सुनी-सुनायी बातों पर विश्वास न करने की सलाह दी जब तक हम स्वयं उस बात की पुष्टि ना कर ले। प्राचार्या जी ने स्वयं के साथ दुसरे के जीवन को भी सुंदर बनाने का संकल्प लेने की बात कही। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

खेलों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का परिचय दें

एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में हुई विभिन्न प्रतियोगिताएं

जयपुर,(ब्यूरो): सांगानेर स्थित एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय आरोहण-2025 खेल, साहित्यक व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का समारोहपूर्वक समापन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. एमएस चुण्डावत का महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा द्वारा पुष्प गुच्छ व स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ णमोकार मंत्र व मां शारदे के सम्मुख द्वीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। प्रिंसिपल डॉ. यदु ने कहा कि सभी प्रतिभागी खेल को खेल की भावना से खेले एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का परिचय दें। वहीं उन्होंने खिलाड़ियों को शपथ दिलाई। खेल प्रतियोगिताओं के अंतर्गत 100 मी. दौड़, खो-खो, शतरंज, कैरम व टेबल-टेनिस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के रत्नायन सभागार में हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस मौके पर अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के फाइन आर्ट संकाय की डीन प्रो. अंजुलिका शर्मा, आयू के प्रबंध संकाय के डीन प्रो. अनुराग शर्मा एवं डॉ. मीरा सक्सेना, डॉ. उमा गौतम, डॉ. नम्रता जादौन, डॉ. अर्चना शर्मा आदि ने सहजता व सरलता के साथ अपनी बात कही। वहीं इन्होंने महाविद्यालय द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सराहना की।

सुबोध महिला महाविद्यालय में हुआ प्रतिभा की खोज कार्यक्रम

जयपुर, (ब्यूरो): एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अभिविन्यास एवं प्रतिभा खोज कार्यक्रम का आगाज किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नवागन्तुक छात्राओं को शैक्षणिक गतिविधियों एवं पाठ्यचर्या से अवगत कराते हुए स्वयं की अन्तर्निहित प्रतिभाओं से परिचित कराना रहा।

अभिविन्यास के अन्तर्गत महाविद्यालय व्याख्याताओं द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। प्रतिभा खोज कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम दिवस के अवसर पर पर्यावरण सरंक्षण, योग दर्शन पर पोस्टर रचना एवं स्लोगन का आयोजन किया गया। द्वितीय दिवस में पारम्परिक खेलों जैसे- कबड्डी रूमाल झपट्टा, सतोलिया, शतरंज, कैरम आदि का आयोजन हुआ। तृतीय दिवस में सृजनात्मक कौशल के अन्तर्गत पेपर क्राफ्ट, अनुपयोगी से उपयोगी सामग्री का निर्माण एवं बिना आग के व्यंजन बनाये गए। चतुर्थ दिवस पर ज्ञान आधारित विकसित भारत निर्माण : पुस्तकालय बनाम गूगल विषय पर वाद-विवाद व शिक्षाप्रद नाटक का मंचन हुआ। पंचम दिवस पर आशुभाषण, निबन्ध, पूजा थाली सौन्दर्यीकरण का आयोजन हुआ। प्रतिभा खोज कार्यक्रम का समापन एवं डॉ0सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मोत्सव को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया गया। समारोह का प्रारंभ प्राचार्या डॉ0 यदु शर्मा द्वारा णमोकार मंत्र एवं माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। समारोह के अन्तर्गत एकल गायन, युगल गायन, एकल नृत्य, समूह नृत्य, युगल नृत्य, आदि की प्रस्तुति कर नवागन्तुक छात्राओं ने अपने में निहित प्रतिभाओं से सभी को अवगत कराया।

सत्रारंभ कार्यक्रम हर्षोल्लास से मनाया

नवागन्तुक छात्राओं का तिलक लगाकर किया अभिनन्दन

जयपुर, (ब्यूरो): सांगानेर स्थित एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में बी.एड.बी.ए. बी.एड. बी.एससी-बी.एड. व डी.एल.एड (प्रथम वर्ष) के सत्रारंभ कार्यक्रम का आयोजन हर्षोल्लास के साथ रत्नायन सभागार में किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम णमोकार मंत्र का समवेत उच्चारण किया गया। तत्पश्चात महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का आगाज हुआ। कार्यक्रम की अगली श्रृंखला में महाविद्यालय की पूर्व छात्राओं द्वारा स्वागत गीत की मनमोहक प्रस्तुति दी गई। साथ ही नवागन्तुक छात्राओं का तिलक लगाकर महाविद्यालय परिवार में स्वागत व अभिनन्दन किया गया।

महिला शिक्षा के उन्नयन के लिए सदैव प्रयासरत : डॉ. यदु

प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह महाविद्यालय एनईपी 2020 के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था कर छात्राध्यापिकाओं के सर्वांगीण विकास पर बल देता है। महाविद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थियों को राष्ट्र हित में एक उत्पादक इकाई के रूप में तैयार करना है, जिससे वे समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

उन्होंने यह बताया कि यह संस्था महिला शिक्षा के उन्नयन के लिए सदैव प्रयासरत है।

पांच क्लब के बारे में कराया अवगत

इसी के साथ महाविद्यालय में कार्यरत सभी व्याख्याताओं ने अपना परिचय दिया एवं नवागन्तुक छात्राओं ने भी अपना संक्षिप्त परिचय देते हुए अपनी रुचियों से अवगत कराया। महाविद्यालय की व्याख्याता डॉ. बीना देवी जैन द्वारा महाविद्यालय में संचालित अमृतानन्दम क्लब के अन्तर्गत चलने वाले पांच क्लब (ज्ञानानन्दम, वर्णिकानन्दम, नवान्वेषणानन्दम, शौर्यानन्दम व परहितार्थानन्दम) के बारे में संक्षिप्त में छात्राओं को अवगत कराया।

पूर्व छात्राओं ने अनुभव किए साझा

कार्यक्रम की इसी कड़ी में पूर्व छात्राओं ने अपने अनुभव साझा किए और बताया कि महाविद्यालय किस प्रकार से प्रेरणा प्रदान कर छात्राओं की अन्तर्निहित प्रतिभाओं को उजागर कर आत्मविश्वास में वृद्धि करने के लिए मंच प्रदान करता है। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

क्विज प्लस 'ब्रेन बैटल नॉलेज विद फन' कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर,(ब्यूरो): सांगानेर स्थित एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सभागार में फर्स्ट इंडिया प्लस एंटरटेनमेंट ओटीटी चैनल के तत्वावधान में क्विज प्लस 'ब्रेन बैटल नॉलेज विद फन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विधिवत् प्रारंभ महाविद्यालय प्राचार्या एवं अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा व सुबोध गर्ल्स पीजी कॉलेज प्राचार्या डॉ. रीटा जैन ने विशेषज्ञ क्विज मास्टर सेवानिवृत्त आईएएस महेन्द्र सुराणा का हरितपर्ण व स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया। कार्यक्रम के अन्तर्गत त्यौहार, समसामयिक घटनाओं व राजनीति से जुड़े प्रश्न पूछे गए। छात्राध्यापिकाओं द्वारा प्रश्नों का जवाब उत्साह एवं उदाहरणों द्वारा दिए गए। कार्यक्रम को रंगारंग बनाने के लिए छात्राओं द्वारा एकल नृत्य, समूह नृत्य, गायन एवं कविता पाठ की सुन्दर प्रस्तुतियां शिक्ष दी गई, जिससे कार्यक्रम में मनोरंजकता व सौन्दर्यता के दर्शन किए गए। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

आधुनिकता की दौड़ में भावी पीढ़ी भूल रही अपनी संस्कृति : डॉ. यदु

जयपुर,(ब्यूरो): सांगानेर स्थित एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. यदु शर्मा ने कहा कि वर्तमान में एक देश एक चुनाव की व्यवस्था देश हित में है। इस विषय पर युवा पीढ़ी को जागरूक करने की अत्यंत आवश्यकता है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में भावी पीढ़ी अपनी संस्कृति, सेवा एवं समर्पण की भावना को भूलती जा रही है। यहीं हमें विकसित राष्ट्र के मन्तव्य को सर्वोपरी रखकर देश हित में कार्य करने की परम आवश्यकता है। उन्होंने प्रत्येक नागरिक को मैं की भावना से ऊपर उठकर हम की भावना के आधार पर कार्य करने की प्रेरणा दी। प्रिंसिपल डॉ. यदु शर्मा यहां महाविद्यालय में आयोजित एक वाद-विवाद प्रतियोगिता के तहत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रही थीं।

एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं भारत विकास परिषद के तत्वाधान में 'एक देश एक चुनाव की व्यवस्था देश हित में' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई। जिसमें परिषद के प्रांतीय महासचिव आरएस त्यागी मुख्य अतिथि तथा शाखा सचिव जगरूप सिंह यादव, प्रांतीय सम्पर्क प्रमुख दिनेश कुमार गुप्ता, राधेश्याम गुप्ता, शत्येन्द्र भारद्वाज, सह सचिव अरूण गुप्ता विशिष्ट अतिथि रहे। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में डॉ. अनिता शर्मा व डॉ. ज्योति जोशी शामिल थे।

20 प्रतिभागियों ने भाग लिया

प्रतियोगिता में सांगानेर शाखा की लगभग 10 टीमों के 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं देश की चुनाव व्यवस्था, विभिन्न देशों के चुनाव संबंधी आंकड़े, नोटबंदी, कृषि, भ्रष्टाचार, विभिन्न भर्तियां एवं परियोजनाएं, शिक्षा व स्वास्थ्य, कानून व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था एवं संसाधनों के उपयोग, चुनाव में पारदर्शिता आदि तथ्यों के आधार पर अपनी बात की पुष्टि की।

एसएस जैन सुबोध महिला टीटी कॉलेज प्रथम

प्रतियोगिता में व्यक्तिशः पुरस्कार की श्रृंखला में प्रथम पुरस्कार एसएस जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, द्वितीय सेंट जेवियर्स महाविद्यालय एवं तृतीय पुरस्कार संजय टीटी कॉलेज को दिया गया।

इवेंट्स बेधड़क

जयपुर

'क्विज प्लसः ब्रेन बैटल-नॉलेज विद फन' में 400 छात्र-छात्राएं हुए शामिल

विशेषज्ञ के सवालों के बाउंसर्स पर युवाओं ने लगाए मास्टर स्ट्रोक्स

'देश मेरे...' गीत ने किया रोमांचित

श्री एस. एस. जैन सुबोध शिक्षा समिति के अन्तर्गत संचालित संस्थाएँ

सुबोध ग्लोबल स्कूल अजमेर रोड.	2024
सुबोध प्ले स्कूल, देव नगर	2023
एस. एस. जैन सुबोध कॉलेज, ऑफ ग्लोबल एक्सीलेन्स, सीतापुरा	2015
एस. एस. जैन सुबोध बॉयज हॉस्टल, मानसरोवर	2014
एस. एस. जैन सुबोध मैनेजमेन्ट इन्स्टीटयूट, मानसरोवर	2012
एस. एस. जैन सुबोध लॉ कॉलेज, मानसरोवर	2011
एस. एस. जैन सुबोध पी. जी. कॉलेज, वीमेन्स हॉस्टल, सांगानेर	2008
एस. एस. जैन सुबोध महिला छात्रावास, सांगानेर	2005
एस. एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सांगानेर	2005
एस. एस. जैन सुबोध गर्ल्स कॉलेज, सांगानेर	2004
सुबोध पब्लिक स्कूल, सांगानेर	2004
एस. एस. जैन सुबोध एम. सी. ए. इन्स्टीटयूट, रामबाग सर्किल	2003
एस.आई.आई.टी., रामबाग सर्किल	2000
एस. एस. जैन सुबोध पी. जी. महिला महाविद्यालय, रामबाग सर्किल	1999
सुबोध इन्स्टीटयूट ऑफ मैनेजमेन्ट एण्ड कॅरियर स्टडीज, रामबाग सर्किल	1999
सुबोध पब्लिक स्कूल, रामबाग सर्किल	1985
एस. एस. जैन सुबोध कॉमर्स एण्ड आर्ट्स कॉलेज, रामबाग सर्किल	1976
स्व. श्री सिरहमल बम्ब समृति उद्योगशाला, रामबाग सर्किल	1975
एस. एस. जैन सुबोध पी.जी. कॉलेज, रामबाग सर्किल	1954
एस. एस. जैन सुबोध उच्च मा. विद्यालय, बापू बाजार	1925
एस. एस. जैन सुबोध बालिका सीनियर सैकण्डरी स्कूल, सांगानेरी गेट	1918